सम्प

पं० राजा

सहायक

श्री अजीत

श्री रमेश

श्री कैलाश कल्पित अभिनन्दन मञ्जूषा

प्रकाशक—अभिनन्दन समिति की ओर से
परिजात प्रकाशन
३४१, बहादुरगंज, इलाहाबाद-३

मुद्रक—(१) माधो प्रिन्टर्स
२४२, पुराना बैरहना
इलाहाबाद

(२) वीनस प्रिन्टर्स एण्ड ब्लाक मेकर्स
आफसेट तथा स्क्रीन प्रिन्टर्स
चक, जीरो रोड, इलाहाबाद-३

प्रकाशन वर्ष—जनवरी १९९५

मूल्य—४०) रु० मात्र

सम्पर्क—

कोठी गोविन्द भवन
३७, शिवचरण लाल रोड
दूरभाष—६५२८ ६
इलाहाबाद-३

श्री कैलाश कल्पित
अभिनन्दन समारोह समिति

[७०वीं वर्षगाँठ. २५ जनवरी १९९५]

गोविन्द भवन, शिवचरन लाल रोड, इलाहाबाद-३ दूरभाष—६५२८२६

संरक्षक

भू०पू०मु०न्या०मू० कुंवर बहादुर अस्थाना
,, हरीश चन्द्रपति त्रिपाठी
,, महेश नारायण शुक्ल
,, प्रेम शंकर गुप्त
डा० हरदेव बाहरी
डा० माताबदल जायसवाल
डा० रघुवंश
डा० राम प्रसाद मिश्र
श्रीमती प्रभा भार्गव
लायन त्रिलोकी नाथ सक्सेना

कोषाध्यक्ष

श्रीयुत राधावल्लभ भार्गव

अध्यक्ष

डा० रामकमल राय

उपाध्यक्ष

पं० नर्मदेश्वर चतुर्वेदी
डा० शिव गोपाल मिश्र
श्रीमती शंकुन्तला सिरोठिया

संयोजक

श्री अजीत कुशवाहा
श्री बाबू लाल "सुमन"

सचिव

सहायक सचिव

शैलेन्द्र श्रीवास्तव
अविनाश श्रीवास्तव

सहायक कोषाध्यक्ष

श्री विजय कुमार श्रीवास्तव

सदस्य कार्यकारिणी समिति

पं० राजाराम शुक्ल	डा० अनिल कुमार सिन्हा 'निराला'
श्री प्रेम कुमार जौहरी	श्री रज्जन अग्रवाल
डा० संत कुमार	राम बिलास गुप्त "विलास'
श्री सुधीर अग्निहोत्री	डा० प्रभाकर द्विवेदी "प्रभामाल"
डा० अंसारुलहक "अंसारी"	श्री कृष्णेश्वर डींगर
श्रीमती विजय लक्ष्मी "विभा"	श्री राम लखन शुक्ल
डा० आशा द्विवेदी	श्री विनय कुमार मालवीय

परामर्शदात्री समिति

डा० किशोरी लाल गुप्त,
डा० जगदीश गुप्त
डा० जीवन प्रकाश जोशी, दिल्ली
कमल किशोर गोयनका, दिल्ली
श्री केशरी नाथ त्रिपाठी
श्री हरिमोहन मालवीय
डा० तिलकराज गोस्वामी
डा० योगेन्द्र प्रताप सिंह
डा० राजेन्द्र मिश्र, शिमला
डा० कृष्ण मोहन सक्सेना, लखनऊ
डा० कैलाश नाथ पाण्डेय, बम्बई
श्री गया प्रसाद अग्रवाल
श्री अर्जुन कुक्कल

हमारे विशेष हितैषी

डा० मोहन अवस्थी
श्री श्रीधर शास्त्री
श्री श्याम कृष्ण पाण्डेय
सर्वश्री पन्नालाल गुप्त 'मानस'
डा० चन्द्रकान्त वन्दिवडेकर, बम्बई
प्रेम नारायण गौड़
प्रकाश द्विवेदी 'प्रकाश', फैजाबाद
डा० उर्मिला जैन
अमर नाथ श्रीवास्तव
डा० मत्स्येन्द्र शुक्ल
प्रद्युम्न नाथ तिवारी 'करुणेश'
श्रीमती मधु भटनागर
विद्याधर पाण्डेय
डा० विजयानन्द
डा० कु० यास्मीन सुल्ताना नकवी
श्री केशव चन्द्र वर्मा
डा० सुरेशव्रत राय
श्री सुरेश शेष
श्री सन्त कुमार टंडन 'रसिक'
श्री नन्दल हितैषी
श्रीमती शोभा श्रीवास्तव
श्री बृजमोहन श्रीवास्तव "चंचल"
डा० जीवन शुक्ल, कन्नौज
डा० अवधेश अवस्थी, कन्नौज
न्यायमूर्ति चन्द्र भाल 'सुकुमार'
डा० रामजी पाण्डेय
से० रा० यात्री, गाजियाबाद
श्री कैलाश गौतम
डा० रघुवीर कुशवाहा, वाराणसी

हमारे सहयोगी पत्रकार

सर्वश्री हेरम्ब मिश्र — इलाहाबाद
श्री शिव कुमार दुबे — ,,
डा० हरिशंकर द्विवेदी — ,,
डा० विद्यासागर विद्यालंकार, दिल्ली
डा० प्रताप नारायण वर्मा, लखनऊ
श्री उमाशंकर मिश्र, गाजियाबाद
डा० मेघासिंह चौहान, नजीबाबाद
डा० रजनीकान्त लहरी, उन्नाव
श्री अरुण अग्रवाल, इलाहाबाद
डा० रत्नेश
श्री भगवान प्रसाद उपाध्याय

साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्थाएँ

(१) हंसवाहिनी
(२) सरस्वती
(३) अभिषेक श्री
(४) सहयोगी मुद्रण प्रकाशन सह० समिति लि०
(५) शलभ
(६) साहित्य संगम
(७) मंच
(८) आइना
(९) एकता
(१०) लेखक संसद

अटल बिहारी बाजपेयी

नेता प्रतिपक्ष | नई दिल्ली
लोक सभा | २१, नवम्बर, १९९४
१७/८

श्री कुशवाहा,

आपका पत्र प्राप्त हुआ, धन्यवाद।

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि साहित्यकार श्री कैलाश कल्पित का जन्म दिन आप जनवरी में मना रहे हैं और इस अवसर पर एक अभिनन्दन ग्रन्थ भी प्रकाशित कर रहे हैं।

मैं श्री कैलाश कल्पित जी के दीर्घ जीवन की कामना करता हूँ। परमात्मा उन्हें साहित्य सेवा करने की और अधिक शक्ति प्रदान करें।

शुभकामनाओं सहित

आपका

अटल बिहारी बाजपेयी

श्री अजीत कुशवाहा
संयोजक —
श्री कैलाश कल्पित अभिनन्दन
समारोह समिति
३७, गोविन्द भवन
शिवचरण लाल रोड
इलाहाबाद-३

डॉ० धर्मवीर भारती

दिनांक—६ दिसम्बर १९९४

५, शाकुंतल साहित्य सहवास
तीसरा माला, कला नगर
बान्द्रा (पूर्व) बम्बई-५

प्रियवर,

जानकर प्रसन्नता हुई कि श्री कैलाश कल्पित २५ जनवरी '९५ को अपने जीवन के ७० वर्ष पूरे कर रहे हैं।

उनको मेरी हार्दिक मंगल कामनाएँ।

सस्नेह

धर्मवीर भारती

श्री अजीत कुशवाहा
संयोजक
कैलाश कल्पित अभिनन्दन समारोह
३७, शिवचरण लाल रोड
गोविन्द भवन, इलाहाबाद—३

●

हरीश चन्द्रपति त्रिपाठी

पूर्व न्यायमूर्ति, उ० प्र०

कमला नेहरू रोड
इलाहाबाद—१-११-९४

मैं श्री कैलाश कल्पित जी को विगत २० वर्षों से जानता हूँ। कल्पित जी हिन्दी भाषा और साहित्य के अनन्य पुजारी हैं। इन्होंने अपने लेखन से हिन्दी की श्री वृद्धि की है।

मुझे विश्वास है कल्पित जी शतायु होकर हिन्दी की सेवा में सदैव संलग्न रहेंगे।

हरीश चन्द्रपति त्रिपाठी

श्री राम विलास गुप्त 'विलास'
सदस्य कार्यकारिणी
श्री कैलाश कल्पित अभिनन्दन समारोह
समिति, इलाहाबाद-३

पं० महेश नारायण शुक्ल

भू० पू० मुख्य न्यायमूर्ति (उ० प्र०)

सरदार पटेल मार्ग
इलाहाबाद—१

मैं अपना गौरव समझता हूँ कि श्री कैलाश कल्पित से मेरा निकट सम्पर्क रहा है। साहित्यिक गोष्ठियों में मैंने अकस्मात् उनका परिचय प्राप्त किया और काल की गति के साथ मैं उनके स्नेहपाश में पूर्णतः आबद्ध हो गया।

उनका सरल, आडम्बरविहीन, मृदुल व्यक्तित्व अनायास ही आकर्षित करता है और सान्निध्य प्राप्त कर यह विस्मय होता है कि इस सामान्य वेष-भूषा वाले तड़क-भड़क से कोसों दूर व्यक्ति के अन्तराल में भावुकता का सिन्धु उमड़ रहा है जिसकी अभिव्यक्ति कविता, गीत, कहानी एवं उपन्यास आदि विविध रूपों से हुई है। इस सर्वतोमुखी कृतित्व का रहस्य निहित है, उनके व्यापक मानव प्रेम में, उनकी इस सहज निष्ठा में, कि भगवान औपचारिक पूजा-अर्चना से नहीं प्राप्त होता वरन् उसके साक्षात्कार का एक मात्र साधन है विशुद्ध प्रेम—

देवता रहता उन्हीं के बीच है
कमल है वह, अरु परिधि में कीच है
यदि पहुँचना है जलज के पास तक
छोड़ निज परिधान के तू मोह को।

इन उत्प्रेरक स्वरों के रचयिता का मैं हृदय में अभिनन्दन करता हूँ और यह कामना करता हूँ कि यह दीर्घकाल तक अपनी सशक्त लेखनी से हिन्दी के विशाल कोष को समृद्ध करता रहे।

महेश नारायण शुक्ल

प्रेमशंकर गुप्त
निवृत्तमान न्यायाधीश
इलाहाबाद उच्च न्यायालय

टेलीफोन – ६०३०३३
'शान्ति निलय'
२५/१-ए, टैगोर टाउन,
इलाहाबाद - २११००२

दिनांक १२ - १२ - ६४

भाई कैलाश कल्पित जी आगामी २५ जनवरी को सत्तरवीं बसन्त बयार का स्पर्श करेंगे, जीवन के इन सात दशकों को उन्होंने भरपूर भोगा है, उनके सत्तरवें जन्म दिवस २५ जनवरी १९९५ को उनके इष्टमित्र हितू-व्यवहारी बन्धु बान्धव उनका सार्वजनिक अभिनन्दन कर रहे हैं— यह हम सब के लिए बड़ी ही प्रसन्नता की बात है।

कल्पित जी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व दोनों ही बहुरंगी है। एक अच्छे मित्र, सच्चे मार्ग दर्शक, स्पष्ट वक्ता, अपनी धुन के धनी, स्वाभिमानी नागरिक के साथ साथ हिन्दी साहित्य की विविध विधाओं के मर्मज्ञ रचनाकार के रूप में वह इलाहबाद में जाने पहिचाने जाते हैं। कवि कल्पित से कम कहानी कार कल्पित नहीं आंके जाते हैं। उपन्यासकार के साथ साथ वे अच्छे नाटक-कार की भी पहिचान बना चुके हैं। पत्र लेखन की विधा में भी उन्होंने अपना स्थान बनाया है। हिन्दी के प्रबल पक्षधर होकर वह इस क्षेत्र में अपनी आवाज सदैव बुलंद किये रहते हैं।

मैं इसे अपना सौभाग्य मानता हूँ कि उनके अभिनन्दन समारोह समिति से मुझे भी जुड़ने का अवसर प्रदान किया गया है। प्रभु से मंगल कामना करता हूँ कि आगामी दशकों में मार्गदर्शन हेतु हम सभी को वह स्वस्थ एवं प्रसन्नचित्त रूप में उपलब्ध रहें।

प्रेम शंकर गुप्त

डॉ. मुरली मनोहर जोशी

संसद सदस्य (राज्य सभा) २२ दिसम्बर, १९९४

प्रिय श्री कुशवाहा जी,

यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि श्री कैलाश कल्पित जी को उनकी ७०वीं वर्षगाँठ पर २५ जनवरी, १९९५ को सम्मानित किया जा रहा है। श्री कल्पित एक निर्भीक एवं सिद्धान्तवादी साहित्यकार के रूप में सुप्रतिष्ठित हैं। वह साहित्य की विभिन्न विधाओं से भारतीय संस्कृति, राष्ट्रवाद एवं समसामयिक समस्याओं पर सशक्त लेखन करते रहे हैं। प्रयाग नगर में उन्होंने साहित्य की परम्परा को अपनी लेखनी से समृद्ध किया है और राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रसार के लिए देश के विभिन्न क्षेत्रों में अनवरत प्रयत्न किया है।

श्री कैलाश कल्पित जी ने साहित्य को धनोपार्जन का साधन नहीं माना। उन्होंने साहित्य को समाजसेवा का एवं प्रसार का शाश्वत जीवन मूल्यों की व्याख्या एवं प्रसार का सशक्त माध्यम बनाया है। उनके अभिनन्दन के सुअवसर पर प्रकाशित की जाने वाली स्मारिका उनके सभी पाठकों के लिए तो संग्रहणीय होगी ही, परन्तु साहित्यानुरागी एवं राष्ट्रभक्त के लिए प्रेरणादायी भी होगी। मैं श्री कैलाश कल्पित जी के दीर्घ जीवन एवं यशस्वी लेखन के लिए मंगल कामनाएँ प्रेषित कर रहा हूँ। विश्वास करता हूँ कि आयोजन कल्पित जी की प्रतिष्ठा एवं प्रयाग नगर की गरिमा के अनुकूल ही आयोजित होगा।

शुभकानाओं सहित,

आपका,

मुरली मनोहर जोशी

श्री अजीत कुशवाहा,
संयोजक,
श्री कैलाश कल्पित अभिनन्दन समारोह समिति,
गोविन्द भवन,
शिवचरन लाल रोड,
इलाहाबाद (उ० प्र०)

THE INTERNATIONAL ASSOCIATION OF LIONS CLUBS

लायन त्रिलोकीनाथ सक्सेना कटरा, इलाहाबाद-२

दिनांक ३०-१२-९४

प्रिय बन्धु कुशवाहा जी,

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि इलाहाबाद के नागरिक मेरे मित्र कैलाश कल्पित का उनकी ७०वीं वर्षगाँठ पर अभिनन्दन कर रहे हैं। आज हिन्दी जगत मे उन्हें कैलाश कल्पित के नाम से जाना जाता है, किन्तु मैं तो उन्हें तब से जानता हूँ जब वे मेरे सहपाठी के रूप में कायस्थपाठशाला कालिज में कैलाश बहादुर सक्सेना उर्फ 'गरगट्टगर' के नाम से जाने जाते थे। 'गर गट्ट गर' नाम की एक कविता उन्होंने कुछ वर्ष पहले मुंशी काली प्रसाद कुलभास्कर (कायस्थ पाठशाला ट्रस्ट के संस्थापक) के जन्मदिवस समारोह पर सुनाई थी और वह इतनी प्रभावी हुई थी कि ट्रस्ट के उस समय के प्रेसीडेण्ट न्यामूर्ति कमलाकान्त वर्मा ने उन्हें गोल्ड मेडिल देने की घोषणा की थी। बस तभी से वे कैलाश के साथ ही 'गर गट्ट गर' के नाम से भी पहचाने जाने लगे थे। वे डिबेटों में तो भाग लेते ही थे, कालिज की हाकी, फुटबाल की टीम के भी खिलाड़ी थे। इण्डोर खेलों में कैरम के वे माहिर खिलाड़ी थे। सन् ब्यालीस के राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लेने के कारण वे कालिज से निकाल दिये गये थे। बाद में कई साल हम लोग एक दूसरे से दूर-दूर रहे। मैंने एम० काम० करके अपना व्यवसाय शुरू किया और कैलाश रेलवे की नौकरी में चले गये। सन् पचास के आस-पास जब हम फिर मिले तो कैलाश के नाम आगे 'कल्पित' जुड़ चुका था। वे उन दिनों 'कल्पना' नामक मासिक पत्रिका का सम्पादन कर रहे थे। कुछ वर्षों बाद इनकी दो-तीन पुस्तकें जब निकली तो वे चर्चा के पात्र बने। गीतांजलि के अनुवाद पर वे उ० प्र० सरकार द्वारा पुरस्कृत हुए तो अपनी कुछ अधिक पहिचान, वे लेखकों के बीच में रखने लगे।

मेरे लिए यह प्रसन्नता की बात है आज कैलाश कल्पित जी की जो प्रतिष्ठा है और उन्होंने जो साहित्य दिया है वह अपना विशेष स्तर रखता है। उन्हें अनेक पुरस्कार मिल चुके हैं। उनकी कहानियाँ उच्च मानवीय स्तर जीने की प्रेरणा देती हैं। नगर के ऐसे सुपरिचित हस्ताक्षर का सहपाठी होने में गौरव अनुभव करता हूँ।

कैलाश कल्पित एक समाज सेवी भी हैं। वे कायस्थ पाठशाला ट्रस्ट के आजीवन ट्रस्टी हैं और चित्रगुप्त वंशज सभा के आजीवन सदस्य भी हैं। सुना है केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद दिल्ली के भी वे आजीवन सदस्य हैं। ऐसे समाजिक सहपाठी के सम्मान समारोह में मैं हृदय से भागीदार बनता हूँ। शुभकामनाएँ।

त्रिलोकी नाथ सक्सेना

श्री अजित कुशवाहा
संयोजक
श्री कैलाश कल्पित अभिनन्दन समारोह
इलाहाबाद

हरिमोहन मालवीय
सचिव

हिन्दुस्तानी एकाडमी
इलाहाबाद

दिनांक १५-१२-९४

प्रिय अजित कुशवाहा जी

आपका १०।११।९४ का परिपत्र प्राप्त हुआ। हार्दिक धन्यवाद।

भाई श्री कैलाश कल्पित की ७१ वीं जयन्ती के उपलक्ष्य में आपने स्मारिका प्रकाशन का जो संकल्प घोषित किया है, उसके लिए आप बधाई के पात्र हैं। मैं सहर्ष परामर्श समिति के लिए अपनी स्वीकृति प्रदान करता हूँ।

मैं दीर्घकाल से कल्पित जी का स्नेहभाजन हूँ। कार्यालीय जिन्दगी जीने का कल्पित जी का अपना अलग लहजा है। कल्पित जी कर्तव्य पालक रेलवे के कर्मी रहते हुए भी साहित्य की धारा से जुड़े रहे। राष्ट्रभाषा हिन्दी और हिन्दी के साहित्यकारों के प्रति उनका आत्मीय लगाव सदैव रहा। विश्व कवि रवीन्द्र नाथ टैगोर, महाप्राण निराला उनके प्रिय कवि हैं। अपनी सामर्थ्य-सीमा में एक कुशल गृहस्थ और सजग रचनाकार का जीवन जीने की उनकी तड़प स्पृहणीय है।

सन् १९९१ में वे उत्तर प्रदेश शासन की ओर से हिन्दुस्तानी एकेडेमी के सदस्य नामित हुये थे। उनका सबसे सक्रिय सहयोग मुझे एकेडेमी कर्मचारियों के वेतन सम्बन्धी समस्याओं के हल करने में प्राप्त हुआ था। कल्पित जी ने परिश्रम पूर्वक वेतन सुधार का काम जिस रीति से सम्पन्न किया, उससे कर्मचारी बंधुओं को कुछ राहत आर्थिक मिली थी। उदारमना कल्पित जी ने इस कार्य मे जितना श्रम किया और जिनकी सूझ-बूझ का परिचय दिया था, इसका मैं साक्षी हूँ।

हिन्दी प्रतिष्ठान मंच के वे सब कुछ हैं। निर्भीकता उनसे मन में फूट-फूट कर भरी हुई है। साहित्य-सृजन के क्षेत्र में वे चिर सजग और चिर युवा के रूप में कार्यशील है। जीवन के ७० वसन्त के वे दृष्टा हैं।

कल्पित जी का व्यक्तित्व और तेवर उनके प्रकाशित पत्र-संग्रह 'सृजन पथ के पत्र : कुछ प्रेषित कुछ प्राप्त' में उजागर है। वे अपना सर्व श्रेष्ठ सृजन हिन्दी, जगत् को देने को आज भी आतुर हैं। उन्होंने जो साहित्यकर्म किया है उसे सम्यक् रूपेण रेखांकित किया जाना शेष है।

कल्पित जी की साहित्य मनीषा को मेरा प्रणाम निवेदित है। वे स्वस्थ रहें यही प्रभु से प्रार्थना है। सविनय हरिमोहन मालवीय।

डॉ. वीरेन्द्र कुमार दुबे

एम.काम., एम.ए. (राजनीति विज्ञान/अर्थशास्त्र),
एल-एल बी., पी-एच.डी., डि. लिट् (मानव),
पी. जी. डिप्लोमा—लोक प्रशासन

फोन . ३१३३२९
१५९२, नेपियर टाउन
जबलपुर-४८२००१

दिनांक—२-१२-९४

सदस्य—एजूकेशनल, कन्सलटेन्ट्स कान्सरटीज्म, नई दिल्ली
आजीवन सदस्य—भारतीय लोक प्रशासन संस्थान, राष्ट्रीय शैक्षिक नियोजन एवं प्रशासन संस्थान, भारतीय वाणिज्य संघ, भारतीय अर्थशास्त्र संघ एवं इंडियन एसोसिएशन ऑफ मैनेजमेन्ट डेव्हलप्मेन्ट।

महोदय,

यह प्रसन्नता की बात है कि श्री कैलाश कल्पित अभिनन्दन समारोह समिति ने ७०वीं वर्षगाँठ का आयोजन आगामी २५ जनवरी '९५ को मनाने का निर्णय लिया है। श्रद्धेय कैलाश कल्पित जी निरन्तर राष्ट्रभाषा हिन्दी के लिये संघर्ष कर रहे हैं, अतः यह हम सभी लोगों के लिये गर्व का विषय है कि वे सम्मानित हों। उनकी २९ पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं तथा उन्हें अनेक बार उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान लखनऊ द्वारा पुरस्कार एवं सम्मान प्राप्त हुआ, जो कि गौरव का विषय है।

मैं श्रद्धेय कैलाश कल्पित जी के ७०वीं वर्षगाँठ के उपलक्ष्य में उनके दीर्घायु की मंगल कामना करता हूँ।

शुभकामनाओं सहित

डॉ० वीरेन्द्र कुमार दुबे
सलाहकार सदस्य
उच्चस्तरीय हिन्दी सलाहकार समिति
जल-भूतल परिवहन मंत्रालय,
भारत सरकार, नई दिल्ली

प्रति
संयोजक,
श्री कैलाशकल्पित अभिनन्दन समारोह समिति
गोविन्द भवन, शिवचरनलाल रोड,
इलाहाबाद-३

मंजूषा की निधियाँ—कहां कौन, क्या-क्या

व्यक्तित्व एवं कृतित्व

डा० राम कमल राय (१७) डा० राम प्रसाद मिश्र (११) डा० शिव-गोपाल मिश्र (५८) डा० कैलाश नाथ पाण्डेय (७३) जय गोपाल मिश्र 'फतेहपुरी' (२३) डा० तिलकराज गोस्वामी (२६) श्री पन्नालाल गुप्त 'मानस' (८५) श्री रमेश चन्द्र द्विवेदी (१०२) श्री अजीत कुशवाहा (७१) डा० विजयानन्द (१०३) श्री सुधीर अग्निहोत्री (१०६) श्री शैलेन्द्रकुमार (७०)

कथाकार कैलाश कल्पित की कहानियों पर कुछ मनीषियों के विचार (३०)

महाप्राण पं० सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' डा० राम कुमार वर्मा, डा० राम प्रसाद मिश्र, डा० बल्देव प्रसाद मिश्र, आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी, कथाकार यशपाल, डा० कल्याणमल लोढ़ा, डा० कमल किशोर गोयनका, अमृत राय, पं० महेश नारायण शुक्ल, डा० राधावल्लभ शर्मा, डा० तिलकराज गोस्वामी, कथाकार 'रावी', डा० रामदरस मिश्र।

कैलाश कल्पित के उपन्यासों पर कुछ मनीषियों के विचार (४७)

अमृत लाल नागर, आचार्य जगदीश चन्द्र मिश्र, डा० रामकुमार मिश्र, डा० राम प्रसाद मिश्र, श्रीमती सुमित्रा कुमारी सिनहा, श्रीमती शकुन्तला सिरोठिया, डा० विष्णु पंकज, डा० कृष्ण मोहन सक्सेना, श्री कनक मिश्र, पं० महेश नारायण शुक्ल।

'सृजन-पथ के पत्र : कुछ प्रेषित कुछ प्राप्त' पत्र-ग्रन्थ पर कुछ सम्मतियाँ

डा० विद्या निवास मिश्र (६२), डा० जीवन प्रकाश जोशी (६०) डा० डा० राम प्रसाद मिश्र (६०), यशपाल जैन (६२), श्री नरेन्द्र मोहन (६२), डा० राम कमल राय (६२); विजय कुमार श्रीवास्तव 'विकल' (५५), डा० महेश चन्द्र गुप्त (६२) डा० कृष्ण मोहन सक्सेना (६१)

कैलाश कल्पित – एक इण्टरव्यूकार के रूप में

—डा० विष्णु पंकज (६४)

कैलाश कल्पित से एक साहित्यिक इण्टरव्यू

—श्री विनय कुमार मालवीय (६६)

लेखकीय स्मिता का प्रश्न और पुस्तक व्यवसाय

—कैलाश कल्पित (१११)

सम्पादकीय

प्रसंग-वश

राजनीतिक दुष्चक्र एवं संत्रस्त वातावरण में भी जब किसी साधक सुधी मनस्वी साहित्यकार की चर्चा आती है, तो मन को एक सुखद अनुभूति होती है। राजनीतिक, रैलियाँ, झण्डाबाजी और हल्लाबोल की नीतियों ने आज भारत की वाग्धारा और ऊर्जा को कल्मषता की चादर से आवृत्त कर लिया है। स्वार्थ और अहं के तुष्टीकरण ने विवेक का पथ अवरुद्ध कर लिया है। ऐसे समय मे जब सप्त-दशक की व्यथा संजोये 'कैलाश कल्पित' का नाम आता है, तो लगता है "कल्पना" को कैलाश तक पहुंचाने वाला शुद्ध हृदय अविचल, स्निग्ध पुरुष हमारे सम्मुख खड़ा है, जो अपने युग-बोध से हमें भविष्य की जीवनोन्मुखी ऊष्मा से अभिप्रेरित कर रहा है।

आज बहुत सी व्यवसायिक पत्रिकाएँ राजनीतिक अभिनंदन और नायक, खलनायक यशोगान में पूर्ण साज-सज्जा एवं रूप-शृंगार के साथ जनता को परोसे जा रहे हैं, और साहित्यिक स्वस्थ पत्रिकाएँ अर्थाभाव में दम तोड़ रही हैं। साहित्य में भी एब्सर्डिटी का समावेश हो गया है, और मात्र उसी के लिए धूप-दीप-नैवेद्य हैं। ऐब्सर्डिटी और शुष्कता के इस युग में जब निर्जन भूमि में पड़ा, आकाश की स्नेहधारा से सिञ्चित अपनी ही ऊर्जा से अंकुरित, धूप-छाँह में कसमसाता कोई तरु दृष्टिगोचर होता है तो मुझे कैलाश-कल्पित के संघर्षशील, आदर्शोन्मुख व्यक्तित्व का स्मरण हो आता है।

अपनी सत्तर वर्ष की आयु में 'कल्पित जी' ने 'कल्पना' से 'युग-बोध' तक की यात्रा में अनेक कटु-तिक्त अनुभवों से साहित्य-वीथी को संवारा है। 'कल्पना' को सार्थक करते हुए उन्होंने "साहित्यकारों के संग" जैसे ग्रन्थ द्वारा अभिव्यक्ति के स्वरों को उभारा है। रवीन्द्र गीतांजलि (अनुवाद), इन्द्रबेला और नागफनी, गीत-गरिमा, अनुभूतियों की अजन्ता, आग लगा दो, भारत देश हमारा सदृश काव्य कृतियों से अपनी सम्वेदनाओं को स्वर दिया है, 'चारु-चित्रा, शुभ्रा, युगबोध, स्वराज जिन्दाबाद, उपन्यासों से कलापक्ष और युग के संत्रास को गद्य-पद्य की रससिक्त मञ्जूषा में पिरोया है।" 'राख और आग' कालासाहब गोरी मेम, 'सितारे अंधेरे के'; 'प्रतीक मानवता के', जैसे कहानी

संग्रहों से कथा-साहित्य को गति दी है, 'रवीन्द्र पत्रांजलि', 'पत्रों के दर्पण से शरत चन्द्र' 'पत्र लेखन कला' आदि से हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया है, साथ ही 'राजकाज हिन्दी संदर्भिका' द्वारा राजकाज में हिन्दी को प्रतिष्ठित कराने का प्रयास किया है।

'कल्पित' जी स्वाध्यायी साहित्यकार तो हैं ही, किन्तु अपने स्वाध्याय के साथ अपने अग्रज और अनुज साहित्य साधकों को भी साथ ले चलना नहीं भूलते।

'सृजन-पथ के पत्र, कुछ प्रेषित कुछ प्राप्त' उनकी इस सहयात्रा का प्रतिफल है, जिसमें ऋग्वेद का पवित्र स्वर 'सं गच्छध्वं, संवदध्वं, सं वो मनांसि जानताम् (साथ चलें, साथ रहें, एक मन से समझें') गूँजता है। हिन्दी की पूर्ण प्रतिष्ठा के लिए उन्होंने जोगिया जामा पहनकर शहर की सड़क व गली में अलख जगाई है, और सभाएँ आयोजित की हैं।

कल्पित जी मनसा, वाचा, कर्मणा, स्नेह, औदार्य और युगबोध के सहज कवि हैं। सादगी और संघर्ष उनके जीवन के अवदान हैं। उनके बहू-बेटे, परिजन सभी संस्कार और स्नेह से पूर्ण हैं। परिवार में कोई अजानापन नहीं है।

आज राजनीति के हाँथों पुरस्कार एवं प्रशस्ति के प्रतीकों ने भले कुछ कलाकारों और खेमेबाज लेखकों को चर्चा में ला दिया है, किन्तु इसका यह अर्थ नहीं है कि एकान्त आत्मतुष्ट साधक रचनाकार विस्मृति की गर्त में रह जाएँगे। भवभूति के स्वर "उत्पत्स्यते किमऽपि, कोऽपि समानधर्मा, कालोह्ययं निरवधीः विपुला च पृथ्वी" में सत्य है। कल्पित जी के साहित्य की उपलब्धि इसी सत्य पर आधारित है।

सामयिक लेखकों में कल्पित जी का अपना एक स्थान है। देश की विभिन्न प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में उनकी कविता, कहानी और लेख प्रकाशित

[शेष पृष्ठ १ २ पर)

डा० रामकमलराय, इलाहाबाद

आदरणीय कैलाश कल्पितजी को इलाहाबाद की किसी भी साहित्यिक गोष्ठी में देखा जा सकता है। उन्हें इस बात की दरकार नहीं रहती कि उन्हें बहुत व्यक्तिगत आग्रह से बुलाया जाय। वे साहित्य के प्रति एक सहज निष्ठा से ओत-प्रोत रहते हैं। निरभिमान व्यक्तित्व उनकी साहित्यिक प्रतिबद्धता की पहली पहिचान है। साहित्य की जमीन पर जो कुछ शिखर निर्मित होते हैं वही किसी भाषा की साहित्यिक समृद्धि के एकमात्र प्रमाण हैं। उनकी श्रेष्ठता और ऊँचाई का प्रमाण उन अनेक मध्यम साहित्यकारों की साधना से प्राप्त होता है जो किसी समाज में साहित्यिक परिवेश का निर्माण करते हैं। प्रसाद, निराला, पन्त, महादेवी, अज्ञेय मुक्तिबोध या नरेश मेहता तो उँगलियों पर गिने जा सकते हैं किन्तु उन्हें अपने बोध धारण करने वाले. उन्हें उनकी गरिमा तक का एहसास कराने वाले ऐसे सैकड़ों शान्त, प्रतिबद्ध एवम् निष्ठावान साहित्य साधक होते हैं जिनकी निरन्तर साधना से ही एक सघन और व्यापक सृजन धर्मी भूमि तैयार होती है। कैलाश कल्पित उन्हीं निष्ठावान साहित्य कर्मियों में एक हैं।

मध्यम् शिक्षा एवम् रेलवे की नौकरी के बीच उन्होंने निरन्तर उपन्यास, कहानी, नाटक, कविता और अन्य विधाओं में लिखा है। 'शुभ्रा' एवम् 'वासन्तिका' नामक उनके उपन्यास विशेष चर्चित हुए थे। आपात्काल में उनकी संवेदनशील चेतना पर जो आघात लगा था उससे उनकी जो कविताएँ प्रसूत हुई वे 'अनुभूतियों की अजन्ता' नामक संकलन में प्रकाशित हुई। 'युग बोध' और 'स्वराज्य जिन्दाबाद, नामक उपन्यास उनकी यथार्थ चेतना का साक्ष्य प्रस्तुत करते हैं। किन्तु जिस एक पुस्तक के नाते उन्हें बराबर याद किया जायेगा, वह है उनके पत्रों का संकलन 'सृजन पथ के पत्र, कुछ प्रेषित कुछ प्राप्त'।

इस पुस्तक के पत्रों को मैंने सांगोपांग पढ़ा और अचरज से भर उठा। पत्र-साहित्य के महत्व को लेकर उनके मन में प्रारम्भ से ही एक दूरदर्शी अवधारणा रही है। अपने समय के सभी छोटे-बड़े-मझोले साहित्यकारों को उन्होंने पत्र लिखा है। उनके द्वारा भेजे उत्तरों को सहेज कर रक्खा है। इससे अधिक आश्चर्य इस बात पर होता है कि उन्होंने अपने द्वारा भेजे गये पत्रों की प्रति पूरी निष्ठा से बचा कर रक्खी है। इससे यह सिद्ध होता है कि उनके मन में पत्र-साहित्य और पत्र-लेखन कला को लेकर गम्भीर अवधारणा रही है। पत्र उन्होंने श्रेष्ठ से श्रेष्ठ साहित्यकारों को लिखा है जैसे श्रीमती महादेवी वर्मा, डा० धीरेन्द्र वर्मा, डा० बाबूराम सक्सेना, डा० रामविलास शर्मा, श्री सियाराम शरण गुप्त, श्री वृन्दावन लाल वर्मा, राहुल सांकृत्यायन, डा० रामकुमार वर्मा आदि। दूसरी ओर अपने समकालीन लेखकों जैसे

कमलेश्वर, जगदीश गुप्त, शिवमंगल सिंह सुमन, विष्णु कान्त शास्त्री, डा० रामस्वरूप चतुर्वेदी, बालकृष्ण राव, नागार्जुन, प्रभाकर माचवे सुमित्रा कुमारी सिन्हा आदि का समूह है जिन्हें कल्पित जी ने पत्र लिखा है और उनके उत्तर सहेज कर रक्खे हैं। इनके अतिरिक्त राजनीति एवम् अध्यात्म, पत्रकारिता आदि क्षेत्रों के महारथियों से भी उन्होंने पत्रों द्वारा सम्पर्क साधा है। श्री अटल बिहारी बाजपेयी, श्री प्रभुदत्त ब्रह्मचारी, श्री पद्मकान्त मालवीय, ठाकुर श्रीनाथ सिंह, श्री वेदप्रताप वैदिक, ठाकुर प्रसाद सिंह, दुलारे लाल भार्गव ऐसी ही विभूतियाँ हैं। कैलाश कल्पित के पत्रों के विषय वैविध्यपूर्ण हैं। कहीं इनमें कोई साहित्यिक चिन्तन है, कहीं सामाजिक और कहीं नैतिक। इन पत्रों से यह भी स्पष्ट होता है कि श्री कैलाश कल्पित में अपार धीरज है। वे पूरे धैर्य से उत्तर की प्रतीक्षा करते हैं और सम्वाद की जमीन निर्मित करते हैं। परन्तु कहीं-कहीं वह धीरज अन्ततः टूटता भी है जैसा कि महादेवी जी के प्रसंग में हम देखते हैं। एक सीमा तक धीरज रखने के पश्चात् कैलाश जी अधीर हो उठते हैं। उनका आहत अभिमान फुँफकार उठता है और फिर वे महादेवी जी को वह जली-कटी सुनाते हैं जैसा सुनने का अवसर महादेवी जी को शायद ही कभी मिला हो। परन्तु कैलाश कल्पित की तकलीफ को महादेवी जी समझती हैं और उचित अवसर पर न केवल उसका मार्जन करती हैं, वरन् उन्हें अपने आशीर्वाद से अभिषिक्त भी करती हैं।

'सृजन-पथ के पत्र' का न केवल ऐतिहासिक महत्व है बल्कि सर्जनात्मक महत्व भी कम नहीं है। मैंने महात्मा गाँधी के पत्रों को पढ़ा है, जवाहर लाल और सुभाषचन्द्र बोस के बीच के पत्राचार को पढ़ा है। आचार्य जानकी बल्लभ शास्त्री और निराला जी के बीच हुए पत्राचार को पढ़ा है। मेरा निश्चित मत है कि साहित्यिक परिवेश को समझने के लिए साहित्यकारों के बीच और राजनैतिक परिवेश को समझने के लिए राजनीतिज्ञों के बीच के पत्राचार एक बहुत बड़ी कुंजी होते हैं। कैलाश कल्पित के पत्रों का संकलन भी उनके युग को समझने में से गहराई से सहायता करता है।

मैं यह मानता हूँ कि ऐसे शान्त साहित्य-साधकों की साहित्य-निष्ठा से बहुत कुछ सीखा जा सकता है। उनकी साहित्य सेवा को रेखांकित करना ही आवश्यक नहीं है, उनका उचित सम्मान भी करना उतना ही आवश्यक है। उनके जीवन के इस महत्वपूर्ण सोपान पर मेरी उनके लिए गहरी श्रद्धा अर्पित है।

अल्लापुर, इलाहाबाद

साहित्य के चौराहे पर ड्यूटी देता

एक मौन सिपाही

यह जानकर अपार हर्ष हुआ कि सन्त-स्वभाव के मानव, यशस्वी उपन्यासकार, प्रशस्य कहानीकार, महत्त्वपूर्ण भेंट वार्ताकार तथा अप्रतिम पत्रसाहित्य-प्रस्तोता श्रीकैलाश कल्पित के ७० वर्ष पूर्ण करने के उपलक्ष में अभिनंदन-समिति २५ जनवरी १९९४ को 'स्मारिका' निकालने जा रही है तथा सम्मान आयोजन भी कर रही है। मैं दोनों की सफलता की कामना करता हूँ।

कल्पित जी ने अक्षर की अखंड आराधना की है। वे पेशेवर-साहित्यकार नहीं हैं, साहित्य-साधक हैं। आज पहले कोई पार्टी पकड़ी जाती है, तब कलम। एकाध पार्टियाँ ऐसी भी हैं जो अपने 'बंधकों' को दनादन पुरस्कार दिलाती हैं, 'मीडिआ' (मैं 'मैडिया' कहता हूँ) की बल्लियों द्वारा ऊपर उछालती हैं। इस लेन-देन, उछाल-पछाड़, आपाधापी में साहित्य के तपस्वी साधक हक्के-बक्के, अलग-थलग पड़े रह जाते हैं और छद्म-साहित्यकार अपने मुखौटों के कारण पूजे जाते हैं। फिर भी, तप व्यर्थ नहीं जाता। आईनेअकबरी में तुलसीदास का नाम नहीं, आकाशवाणी (आभासवाणी) एवं दूरदर्शन (दुर्दर्शन) के पास निराला के शब्द एवं उनकी छवि नहीं---प्रेमचन्द, निराला, अश्क, डा० देवराज प्रभृति को कोई भारी पुरस्कार नहीं मिले (टॉल्सटॉय हार्डी प्रभृति को नोबेल प्राइज नहीं मिले), यही इन सब का गौरव है। कल्पित जी इन्ही के वर्ग में अपने स्थान पर चुपचाप खड़े हैं।

'चारुचित्रा' जैसे कला के समग्र रूप को समाहित करने वाले उपन्यास, 'पिता' जैसी मार्मिक कहानी, 'साहित्यकारों के संग' जैसे अनूठे साक्षात्कार (भेंटवर्ता)-ग्रन्थ, 'सृजनपथ के पत्र : कुछ प्रेषित कुछ प्राप्त' जैसे अपूर्व पत्रसंग्रह उनकी प्रतिभा एवं उनके अध्यवसाय के उत्कृष्ट प्रमाण हैं। 'चारुचित्रा', 'शुभ्रा', 'युगबोध', 'स्वराज्य जिंदाबाद' प्रभृति उपन्यासों में उन्होंने कला की गरिमा से युग की विडंबना तक के विविध चित्रण किए हैं। उनका उपन्यासकार-रूप सर्वथा उल्लेखनीय है। 'सितारे अँधेरे के' कहानी संग्रह में उन्होंने बेरोजगारी, साम्प्रदायिकता, एकता, मानवता के प्रभावी अंकन किए हैं। भेंटवार्ता और पत्रसाहित्य की विधाओं में उनके कार्य बे-जोड़ हैं। नाटक, निबन्ध, बालसाहित्य विधाओं में भी उन्होंने हाथ आजमाया है। ऐसे बहुआयामी साहित्य-सर्जक का सम्मान शतशः प्रशंसनीय (वस्तुतः दायित्व-निर्वाह) है।

कल्पित जी ने हिन्दी को उसके न्यायपूर्ण संवैधानिक अधिकार को प्रदान कराने की दिशा में भी लगातार संघर्ष कर एक हिन्दी-वीर का गौरव प्राप्त किया है, जो राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन के नगर के निवासी होने के कारण विशेष उल्लेख्य हो जाता है। रामानन्द, मालवीय, टण्डन, गणेश शंकर विद्यार्थी जैसे हिन्दी-उन्नायकों को जन्म देने वाली, बालकृष्ण भट्ट, सुभद्राकुमारी चौहान, बच्चन जैसे हिन्दी के साहित्य-सर्जकों को जन्म देने वाली, महान् युगप्रवर्तक आ० महावीर प्रसाद द्विवेदी, महाकवित्रयी निराला-पंत-महादेवी, नाट्यसम्राट डॉ० रामकुमार वर्मा से संपृक्त प्रयाग की वसुधा हिन्दी को सदा संपन्न करती रहेगी---यह आशा कल्पित जी के अभिनन्दन से बलवती होती है।

डा० रामप्रसाद मिश्र, दिल्ली-९२

[पूर्व प्रकाशित पत्रों एवं अभिनन्दन स्मारिकाओं से]

अमृतलाल नागर

दूरभाष ८२३५०
चौक, लखनऊ-२२६००३
दिनांक—२७-९-८५

प्रिय भाई कैलाश,

कल्पना और बुद्धि से खेलने का सुख दरअसल योगी का सुख होता है। जिसे हम लेखक की 'क्रियेटिव ईगो' कहते हैं, वह मेरे लिये अब विश्वात्मा के रूप में दर्शन देती है। राम करें तुम्हारी लेखकीय दीवानगी दिनोदिन परवान चढ़े। खूब यश लाभ करो। सपरिवार सुखी हो, दीर्घायुष्मान होवो।

'कल्पित' उपनाम से कीर्तिशाली अवश्य बनो पर मेरे लिए तुम कल्पित नहीं कैलास से ठोस रहो।

सस्नेह, मंगलाकांक्षी
अमृतलाल नागर

डा० हरदेव बाहरी, इलाहाबाद

श्री कैलाश कल्पित जी को मैं तब से जानता-मानता हूँ जब आपने अपनी एक पत्रिका 'कल्पना' निकाल कर साहित्य जगत को अपनी ओर आकृष्ट किया था।'' '' मुझे हर्ष है कि अनेक कठिनाइयों और प्रलोभनों के बीच भी आपने अपने प्रतिमानों को ऊँचा रक्खा है। मैं ऐसे कर्मठ साहित्यकार का अभिनन्दन होते देख कर आह्लादित हूँ। (५५वीं वर्षगाँठ स्मारिका से)

डा० उदय नारायण तिवारी, इलाहाबाद

श्री कैलाश कल्पित जी को गत २५ वर्षों से अति निकट से मुझे जानने का सौभाग्य प्राप्त है। वे इस दीर्घ अवधि में अनवरत रूप से हिन्दी साहित्य के विविध अगों को समुन्नत बनाने में प्रयत्नशील रहे हैं। आपके द्वारा लिखित कई श्रेष्ठ पुस्तकों का प्रकाशन—कविता, कहानी, नाटक, उपन्यास आदि के रूप में हो चुका है। हिन्दी के श्रेष्ठ समालोचकों ने उनकी प्रसंशा की है। भगवान से प्रार्थना है कि कैलाश कल्पित शतायु हों।

अ० भा० हिन्दी प्रतिष्ठापन मंच का गठन कर आप हिन्दी भाषा की सेवा जिस लगन से कर रहे हैं, मैं उससे संतुष्ट हूँ। संरक्षक के नाते मैं प्रयास करूँगा कि कलकत्ता के किसी धनाढ्य से कोई अच्छा अनुदान दिलवाऊँ।

महाकवि सुमित्रानन्दन पन्त, इलाहाबाद

श्री कैलाश कल्पित जी अपने संघर्षमय जीवन में आज के जटिल आंदोलित युग में जिस अनवरत लगन तथा निष्ठा के साथ अपनी महत्वपूर्ण कृतियों द्वारा माँ भारती की आराधना की है वह अवश्य सदैव स्मरणीय रहेगी।

महादेवी वर्मा, इलाहाबाद

श्री कैलाश कल्पित जी का जीवन साहित्य को समर्पित जीवन है, उनके दीर्घ, सुखी तथा कर्मनिष्ठ जीवन के लिए मेरी शुभकामनाएँ।

डा० रामकुमार वर्मा

श्री कैलाश कल्पित की प्रतिभा चार क्षेत्रों में आलोकित हो रही है—कविता, उपन्यास, समीक्षा एवं संपादन-कला। इन चारों क्षेत्रों मे वे समान रूप से सिद्धहस्त हैं और उन्होंने समर्थ साहित्यकारों का समर्थन प्राप्त किया है।

पं० इलाचन्द्र जोशी

कल्पित जी अपने वैयक्तिक जीवन में अनेक विपत्तियों और बाधाओं से जूझते हुए हिन्दी भाषा, हिन्दी साहित्य और हिन्दी के साहित्यकारों की जैसी निःस्वार्थ सेवा निरन्तर करते आए हैं, उसी लगन से वह भविष्य में स्वयं अपनी भी सेवा करते रहेंगे। उनके लिए मेरा आशीर्वाद अमर कवि तुलसी के इन शब्दों के साथ निरन्तर फलीभूत होता रहे—

'उमरि दराज महाराजा तेरी चाहिए''

कुँवर बहादुर अस्थाना पू० मुख्य न्यायमूर्ति [उ० प्र०]

जहाँ तक मैं जानता हूँ कल्पित जी एक तपे-तपाये साहित्य साधक हैं.......... उनका साहित्यिक अभिनन्दन करना निश्चित ही उनकी प्रतिभा को सम्मान देना है।

पं० पद्मकान्त मालवीय

साहित्य महारथी श्री कैलाश कल्पित जी से मेरा परिचय वर्षों से है। उनकी साहित्य निष्ठा सर्वथा स्पृहणीय है।

उपेन्द्रनाथ अश्क

उन्होंने (कल्पित जी ने) अनवरत साधना से जो साहित्य रचा है, वह उनकी स्थिति के किसी दूसरे के वश की बात नहीं है।

राजेन्द्र अवस्थी, संपादक कादम्बनी नई, दिल्ली

श्री कैलाश कल्पित के जन्म-दिन के अवसर पर आप मेरी शुभ कामनाएँ स्वीकार करें...उनका अभिनन्दन करके आपने अपने नगर का सम्मान किया है।

विष्णु प्रभाकर, दिल्ली

मेरी कामना है कि वे नित्त-निरन्तर अपने पथ पर बढ़ते रहें और माँ भारती का भन्डार आलोकित करते रहें।

डा० बाबू राम सक्सेना, भू० पू० कुलपति इ० वि० वि०

भाषा शिक्षण में पत्र-लेखन कला की भी शिक्षा दी जाती है। परन्तु हिन्दी में इस विषय की परिपूर्ण सामग्री का नितान्त अभाव है।.....मुझे प्रसन्नता है कि श्री कैलाश कल्पित ने इस अभाव की पूर्ति के लिये एक सराहनीय प्रयास किया है।

स्वयं एक साहित्यकार होने के नाते कल्पित जी ने कुछ प्रसिद्ध साहित्यकारों के वास्तविक पत्र भी सम्मिलित करके इस पुस्तक को और अधिक रोचक और आकर्षक बना दिया है ... मुझे विश्वास है कि कल्पित जी के इस प्रयास को—हिन्दी भाषा

शिक्षण के उपयुक्त पाठ्यक्रमों में भी सम्मिलित किया जायेगा। मैं श्री कैलाश कल्पित को उनके इस नवीन प्रकाशन (पत्र लेखन कला) पर साधुवाद देता हूँ।

पं० कमलापति त्रिपाठी (भू० पू० रेल मंत्री)

'राज-काज हिन्दी सन्दर्भिका' संग्रह का प्रयास समीचीन और सराहनीय है ·····मैं आशा करता हूँ कि नियोजित सन्दर्भिका सरकारी काम में हिन्दी को बढ़ाने मे प्रभावकारी ढंग से सहायक होगी।·····मैं आपके प्रयास की सफलता की विशेष कामना करता हूँ।

शिवसागर मिश्र, निदेशक राजभाषा (रेल मंत्रालय)

अंग्रेजी में काम करने के अभ्यस्त सरकारी तंत्र को हिन्दी में काम लायक बनाने के लिये जरूरी है कि कोई ऐसा सहायक साहित्य उपलब्ध हो जो केवल काल-क्रम और अनुभव के आधार पर कार्यशील वर्तमान सरकारी कार्य पद्धति की आवश्यकताएँ पूरा करता बल्कि हिन्दी में काम करने के उत्साही सरकारी कर्मचारियों का उचित मार्गदर्शक भी हो।

इस दिशा में सरकारी तंत्र के एक अंग के रूप में कार्यरत श्री कैलाश कल्पित का प्रस्तुत प्रयास सराहनीय है। आशा है 'राजकाज हिन्दी सन्दर्भिका' अपने उद्देश्य मे सफल होगी।

हरिमोहन मालवीय सचिव, हिन्दुस्तानी एकाडमी

कल्पित जी मेरे पुराने स्नेही मित्र हैं। महाप्राण निराला जी के प्रसंग मे उनकी चर्चा अपनी किशोरावस्था में सुनता था। कवि गोष्ठियों और कवि सम्मेलनो मे उनकी रचनाओं का आस्वाद लिया है·····भारी गृहस्थी बोझ ढोते हुए और नून, तेल, लकड़ी का चक्कर पालते हुए भी सतत् साहित्य-साधना में रत रहना उनके जैसे लौह पुरुष के ही वश की बात है।·····

अभिनन्दनीय वही नहीं होता जिसका विराट व्यक्तित्व कुछ व्यक्ति, गुट और समूह खड़ा करते हैं। अभिनन्दनीय वह भी है जो अपनी इयत्ता मे अपनी रचना धर्मिता में जुटा रहता है। मेरे आत्मीय मित्र श्री कैलाश कल्पित जी दूसरी प्रकार के व्यक्ति हैं।

डा० राजेन्द्र मिश्र प्राचार्य संस्कृत विभाग शिमला विश्वविद्यालय

आदरणीय भाई श्री कैलाश 'कल्पित' जी हमारी पीढ़ी के उन पुरोधा साहित्यकारो में हैं जिनका क्रान्तिदर्शी व्यक्तित्व संघर्ष जीवाणुओं से निर्मित हुआ है। कवि की महनीयता युग-युग से मात्र इसी तथ्य में समाहित रही है कि उसने लोक-रक्षण के लिए हलाहल कण्ठ में उतारा है।···जब मैं कवि धर्म की दुरूह और विलक्षण परिस्थितियों का आकलन करता हूँ तो लगता है कि कल्पित जी उस परम्परा के ही नवीनतम साक्ष्य है।·····आज वह प्रयाग की काव्य चेतना के प्रतिनिधि ही नहीं है—उसका स्पन्दन भी हैं।

"कल्पना" को साकार रूप देने वाले श्री कैलाश कल्पित

जयगोपाल मिश्र, "फतेहपुरी"
(भू० पू० हिन्दी अधिकारी, उत्तर रेल, इलाहाबाद)

"री कल्पने ! बन कल्पतरु, सबके हृदय को तार दे"

मेरी इस पंक्ति ने तहलका मचा दिया। कल्पित जी ने इसको अपनी मासिक पत्रिका "कल्पना" के लिए वही स्थान दिया जो स्थान "मतवाला" के लिए सेठ जी ने दिया था जिसके सम्पादक स्वयं निराला जी हुए और उसके ऊपर प्रति अंक महाकवि की पंक्ति होती :—

"लाल गुलाल भरा प्याला,
सबको......यह मतवाला।"

कैलाश जी की मेरी मुलाकात साहित्यिक संदर्भ में होती है। यह सन् १९४७ से पूर्व की बात है। देश की आजादी की लड़ाई की हमारे मन में तड़प थी, भीतर आग थी भारतीयता की, हमारे मन में तपन थी राष्ट्रीयता की और हमारे मन-प्राण रमे थे भारती के आकण्ठ सरोवर में, जिसका एक मात्र ध्येय था अपने देश में अपनी राष्ट्र-भाषा

इस संदर्भ में हम दोनों राजर्षि टंडन के निकट आये। हिन्दी साहित्य सम्मेलन के जलसों में शिरकत की। इतना ही नहीं देश के अग्रज नेता बाबू पुरुषोत्तम दास टण्डन के इतने निकट पहुँचे कि उन्हें अंतिम दिनों में हम लोग उनकी सादिच्छा से चित्रकूट धाम ले गये। वे सत्रह दिनों वहाँ रहे और वहीं चित्रकूट-उत्थान समिति की परिकल्पना बाबू बलदेव प्रसाद जी गुप्त के माध्यम से साकार हुई। गुप्त जी गोस्वामी तुलसीदास जी की जन्म भूमि के तुलसी-स्मारक कार्यों के अग्रज नियन्ता हैं।

इसके बाद श्री कल्पित जी का हमारा साथी-संगी का नहीं अनुसंगी का हो गया। हम दोनों रातों दिन निराला जी की सेवा में रत रहने लगे। यह क्रम एक दो साल नहीं अनवरत बारह वर्षों तक चला। इसी बहाने हम मूर्धन्य व्यक्तियों के कण्ठहार बने जिसमें से अनेक कल्पित जी पर सम्मति लिखने वाले साहित्यकार शामिल हैं।

युग-पुरुष निराला जी की सेवा में हमें अपने प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू तथा प्रदेश के मुख्यमंत्री पं० गोविन्द बल्लभ पन्त आदि से भी मिलते रहने का सौभाग्य मिलता रहा। निराला जी की तीमारदारी में निराला जी की ही उदारता बड़ी बाधक थी। वे अपनी सुविधा को लुटा देने में माहिर थे और इसी के लिए वे जग जाहिर भी थे। हमें उनकी दान-वीरता को कायम रखते हुए उनके इलाज को एवं उनकी दैनिक व्यवस्था बनाये रखना पड़ता था जो बहुत आसान न था श्री कल्पित जी हमारे इस गुरुतर कार्य में सदा संगी रहे।

कल्पित जी का उपनाम "कल्पना" पत्रिका के सम्पादन काल से चला जिसकी संचालिका उनकी पत्नी श्रीमती संतोष कुमारी सक्सेना थी, इन्हें यदि मैं उनके जीवन की साहित्य गंगा मानूं तो अत्युक्ति न होगी।

इस महान महिमा का योगदान राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार में अद्वितीय था कारण इस पत्रिका के सम्पादन काल में उनके सारे जेवर, समूची गृहस्थी घाटे के कारण बिक गई थी। दुर्भाग्य से जब रतन और उनके अन्य भाई काफी छोटे ही थे तो वे कल्पित जी को छोड़कर परलोक सिधार गईं।

कल्पित जी का घराना लखनऊ का था और ससुराल बाँदा में थी जिसमें श्रीमती संतोष कुमारी जन्मी थीं। दोनों कायस्थों का खाता पीता घराना था जहां फारसी व उर्दू के ही ग्राहक थे किन्तु इस कल्पित-संतोष जोड़े ने दिशा ही बदल दी और आज जो कल्पित जी हिन्दी आकाश के नक्षत्र माने जाने लगे हैं उसमें उनकी श्रीमती का उतना ही हाथ है जितना महाकवि निराला को हिन्दी में घसीटने का श्रेय उनकी श्रीमती मनोहरा देवी को प्राप्त था।

कल्पित जी निराला परिषद के संस्थापकों में से एक हैं जिसके संरक्षक और निराला जी के चिकित्सक थे आयुर्वेद पंचानन पं० जगन्नाथ प्रसाद जी शुक्ल तथा मंत्री जयविशाल जी। प्रायः लोगों को जय-विशाल और जयगोपाल में भ्रम बना रहता था किन्तु संसार में निराला के प्रति भ्रम निवारण का बड़ा काम इस संस्था ने किया जिसमें कल्पित जी सदा संगी रहे।

इति शुभम्

आपने अपने घर में स्टील के बर्तन तथा आडियो/वीडियो कैसट सजाकर रखे है, क्या किसी आलमारी में पुस्तकें भी सजाकर रखी हैं ?

सौ-सौ बार नमन है"

वसुन्धरा की सौम्य-मूर्ति के प्रति अर्पित घनश्याम सघन है।
कविवर बन्धु तुम्हारी सरलाकृति पर सौ-सौ बार नमन है॥

प्रतिभा जहाँ स्वयं प्रतिभाषित स्निग्ध रूप समुहाने।
शतशः वंद्य गीत गाने को कवि उत्सुक सुख माने॥
ग्राम्य - गिरा अपनी अनबोली, गीत अगायन वादी—
किंकर्त्तव्य, मूढ़ लज्जित हूँ, कवि-स्वर जहाँ सुहाने॥
एतदर्थ अब तुम्हें समर्पित हार सदृश सम्पूर्ण सुमन है।
कविवर बन्धु तुम्हारी सरलाकृति पर सौ-सौ बार नमन है॥१॥

जीवन में हर व्यक्ति व्यस्त है किन्तु तुम्हारी तुलना—
भावुकता में बहे किसी अवरुद्ध कंठ का खुलना॥
वीणा-वादिनि की हो जिस पर वरद-हस्त सी छाया—
जीवन के हर धूमिल क्षण का धवल हंस-सा धुलना॥
सम्भव है हर वस्तु उसे, कब सरस्वती का पुत्र विमन है?
कविवर बन्धु तुम्हारी सरलाकृति पर सौ-सौ बार नमन है॥२॥

अस्त-व्यस्त समय में भी जो साहित्यिक गति विधियाँ—
परिणत होकर काव्य रूप में है हिन्दी की निधियाँ॥
मन का जिसने कभी सन्तुलन खोया नहीं कदाचन—
निःसृत होती रही जहाँ से जाने कितनी कृतियाँ॥
कल्पित कल्पवृक्ष सा शोभित हिन्दी भाषा नन्दन-वन है।
कविवर बन्धु तुम्हारी सरलाकृति पर सौ-सौ बार नमन है॥२॥

प्रत्यागमन कभी क्या होता बीते जीवन-क्षण का।
बचपन की क्रीड़ायें, कितनी, आकर्षण यौवन का॥
मैंने तो आबद्ध सुमन की पंखुड़ियों में पाया।
अलि-सा, साहित्यिक सम्पुट में तुम्हें मित्रवर मन का॥
अब इस सत्तर वर्ष अवधि में वह बचपन यौवन नूतन है।
कविवर बन्धु तुम्हारी सरलाकृति पर सौ-सौ बार नमन है॥४॥

बाबूलाल "सुमन"
२६५ अ, राजापुर, इलाहाबाद

कैलाश कल्पित : फर्श से अर्श की ओर

डॉ० तिलकराज गोस्वामी

इलाहाबाद के पचासों साहित्यकारों में वे आठ-दस जिनसे मेरी खूब पटती है, उनमें एक भाई कैलाश कल्पित भी हैं। लगभग तीन दशकों से मैं उन्हें जानता हूँ। उनकी अनेक रचनाएँ मैं पढ़ चुका हूँ और उनमें से कतिपय रचनाओं की छाप मेरे मन-प्राणों पर अंकित है। सैकड़ों गोष्ठियों-सम्मेलनों मे उनके साथ रचना पाठ करने के अवसर मिले हैं। कई समस्याओं पर उनसे बातें-बहसें हुई हैं। राष्ट्र व राष्ट्र भाषा के प्रति हम दोनों के विचारों मे काफी हद तक समानता है। विचारों में ही नही वरन् अनेक बातों में हम दोनों मित्रों में बहुत समानता पाई जाती है। दोनों भारत सरकार के लेखा विभागों से कार्यरत रहे, मैं महालेखाकार कार्यालय से सेवानिवृत हुआ और वे मण्डल रेल प्रबन्धक कार्यालय मे। लेखा विभाग के जोड़-बाकी नीरस कार्य को निष्ठापूर्वक करते हुये भी हम दोनों पूरी लगन के साथ साहित्य-लेखन व अध्ययन में लगे रहे। मेरी तरह कल्पित जी ने भी साहित्य-लेखन को हाबी अर्थात् शौक की तरह नहीं अपनाया बल्कि अपने जीवन का पावन मिशन मानकर गहरी रुचि व लगन से उसमें लगे रहे। इस अटूट लगन तथा परिश्रम के परिणाम आज हमारे सामने है। साहित्य की लगभग सभी विधाओं में दो दर्जन से अधिक मेरी पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं और लगभग इतनी ही भाई कल्पित जी की भी। उम्र में वे मुझसे पाँच वर्ष बड़े हैं। उनका जन्म सन् १९२५ में हुआ था जबकि मेरी पैदायश १९३० की है। पारिवारिक जिम्मेदारियों से हम दोनों पूरी तरह निवृत्त हो चुके हैं। ईश्वर-कृपा से हम दोनों के बच्चों को अच्छी शिक्षा व संस्कार मिले हैं और वे सम्मान पूर्वक जीविका अर्जित कर रहे हैं। आज के जीवन की लगभग सभी सुविधाएँ हम दोनों के परिवारों को प्राप्त हैं।

कैलाश कल्पित जिस ईमानदारी तथा निष्ठा से साहित्य-लेखन व राष्ट्र भाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार मे लगे है, उसकी जितनी सराहना की जाए कम है। उनका योगदान नये लिखने वालों के लिये प्रेरणाप्रद हो सकता है। कल्पित जी एक अच्छे साहित्यकार तो है ही, पर उससे कहीं अधिक वे एक भले नेकदिल इन्सान हैं। मित्रता की परिभाषा वे भली प्रकार जानते हैं। मेरी तो यह मान्यता है कि एक अच्छा लेखक होने के लिए एक अच्छा आदमी होना पहली शर्त है। कलाकार के संस्कार जितने सात्विक होते हैं, उसका चरित्र जितना उज्ज्वल होता है, उतनी ही उसके द्वारा रचित कृति उदात्त होती है, शिव, सत्य व सुन्दर के तत्वों से शोभायमान होती है। उसमें अवश्य ह ' मानव-मन का उत्थान होता है। चरित्रवान व कलानिष्ठ की रचना की अपील केवल कलाविदों के लिये ही नहीं होती बल्कि वह साधारण जनता के लिये भी होती है। कल्पित जी के चरित्र में जो गुण मैं देखता हूँ, वही गुण किसी न किसी रूप में उनके उपन्यास व कहानियों के अनेक पात्रों में दृष्टिगोचर होते हैं। न तो कभी

उनकी बातो व कार्यकलापो म निराशा, कुंठा या हीनता का एहसास होता है और नही उनके पात्र निराश या कुण्ठित नजर आते हैं। जीवन के प्रति यह आशावादी दृष्टिकोण साहित्य-लेखन के लिये एक प्रशन्सनीय गुण होता है।

जैसा कि मैंने पहले कहा है कि मैंने उनकी अनेक रचनाएँ पढ़ी है। पर यहाँ मैं केवल उन दो पुस्तकों का उल्लेख करना चाहता हूँ जो साहित्यिक मापदंडों की दृष्टि से मुझे श्रेष्ठ लगीं। उनके उपन्यास चारुचित्रा को मैं उनकी मास्टरपीस कृति मानता हूँ। अंग्रेजी के महाकवि मिल्टन ने कहा था–'आई वांट फिट आडियेन्स दो फ्यू'। मिल्टन का साहित्य सामान्य व कम पढ़े-लिखे लोगों के लिये नही है। उसके लिये पाठक का विज्ञ व संस्कारयुक्त होना आवश्यक है। ठीक यही बात कैलाश कल्पित के कलात्मक उपन्यास चारुचित्रा पर लागू होती है। इस उपन्यास को पढ़कर उन्हीं पाठकों को सुख व ज्ञान की अनुभूति होगी जो गम्भीर व श्रेष्ठ साहित्य में रुचि रखने हैं और जो भारतीय संस्कृति से वास्तविक रूप से अवगत हैं, जो मानवीय मूल्यों के महत्व को जानने समझते हैं तथा जो उच्च संस्कारों से सम्पन्न हैं। फुटपाथी साहित्य पढ़ने वाला पाठक इसके दो-चार पन्ने पढने के बाद परे रख देगा। जिस व्यक्ति की ललित कलाओ, आज की सामाजिक स्थितियों व परस्पर सम्बन्धों में रुचि है, उसे यह उपन्यास अवश्य ही तुष्टि देगा।

लेखक की शीघ्र प्रकाश्य पुस्तक 'मेरे प्रतिनिधि निबन्ध' में सम्मिलित

किसी भी कृति की पहली शर्त यह होती है कि वह सुरुचिपूर्ण पाठक को पढने के लिए बांध रखे, उसके मन-प्राणों में हलचल मचाती रहे, उसकी उत्सुकता को कायम रखे। चारुचित्रा एक ऐसा उपन्यास है जो गम्भीर व श्रेष्ठ साहित्य में रुचि रखने वाले पाठक को प्रारम्भ से लेकर अन्त तक बांधे रखने की अद्भुत क्षमता रखता है। पूरा उपन्यास अपनी कथावस्तु, व सहज भाषा व शिल्प के कारण पाठक को अपने से अलग नही होने देता। भाषा की सहजता इस कृति का विशेष गुण ह। पात्रों के अनुसार लेखक ने भाषा का इस्तेमाल किया है। उपन्यास के सभी पात्र बडे जीवन्त प्रतीत होते हैं। प्रत्येक पात्र का अपना व्यक्तित्व है और वह पूरी स्वतन्त्रा व बेबाकी से अपने कार्यकलाप करता है। उसकी डोरी कही भी लेखक के हाथ में नजर नही आती। यह इस उपन्यास का एक उल्लेखनीय गुण है। उपन्यास के लगभग सभी पात्र जैसे चारुचित्रा, नलिनी दीदी, कामिनी, कमल, बेनी शर्मा, सान्याल व नटवरलाल आदि अपनी पूरी जीवन्तता के साथ हमारे सामने आते हैं, बातें व कार्यकलाप करते है और हमारे मन पर अपनी छाप अंकित कर जाते है।

"श्रेष्ठ साहित्य जीवन की आलोचना होता है। चारुचित्रा के लेखक ने समाज की अनेक विसंगतियां, समस्याओं व पक्षों को पूरी निष्ठा व शक्ति से प्रस्तुत करने का सफल प्रयास किया है। लेखक को भारतीय कलाओं का कितना ज्ञान है, कितनी दूर तक उसकी पैंठ है यह पढने पर ही पता चलता है लगभग सभी की

ललित कलाओं विशेष रूप से चित्रकला, संगीत व नृत्य पर लेखक पूरे अधिकार से लिखता है। उसके इस गहन ज्ञान की प्रशन्सा करनी पड़ती है। जीवन की अनेक समस्याओं को लेखक एक दार्शनिक की तरह प्रस्तुत करता है। विवाह-संस्कार का व्यक्ति के जीवन में कितना महत्व है, इसका उल्लेख करते हुये वह लिखता है—"हिम-कन्या गंगा में भी जब यौवन की तरंग आती है तो वह भागीरथी मार्ग को भूलकर नर्कसम नालों में बहने लगती है। कितना भीषण रूप होता है तब उसका। क्या तब वह किसी की सुनती है। नहीं, यौवन पर अंकुश रखने के लिये विवाह आवश्यक है।"

उपन्यासकार भारतीय संगीत व नृत्य का गहन ज्ञाता है। "सगीत के वाद्य-वृन्दो व नृत्य शैलियों व विभिन्न प्रकार के रसों की उसे गहरी जानकारी है। एक उदाहरण देखे—महाकक्ष मे वाद्य-वृन्द ने जयजयवन्ती राग छेड़ा। तबले की थिरकन के साथ नर्तक ने दूध से धुले विद्युत प्रकाश में मंच की धड़कन अपने अंक मे समेटी। दर्शक मूर्तवत् होकर उसकी शास्त्रीय प्रस्तुति देखने लगे। कत्थक शैली के अन्तर्गत उसने प्रथम नायिका भेद का सफल प्रदर्शन किया, फिर वहाँ विभिन्न रसों का अवतरण किया गया। करुण, शान्ति, ताण्डव, रौद्र, वीर, अद्भुत व शृङ्गार आदि रसों की पूर्ण अभिव्यक्ति के लिये मंच पर क्रमशः हरा, सफेद, नीला, लाल, गुलाबी, नारंगी आदि इन्द्रधनुषी रंग फेंके गये। ....मंच पर शनैःशनैः अन्धकार हुआ। बादल गरजे, बिजली चमकी और घुँघरुओं की रिन्झिन ने पानी बरसा दिया।"

कैलाश कल्पित के हृदय मे अपनी संस्कृति के प्रति कितना आदरभाव है, इसके प्रमाण उपन्यास में अनेक स्थानों पर उपलब्ध होते हैं। हमारी संस्कृति सनातन मानी गयी है। हमारे महापुरुष इसके प्रचार-प्रसार के लिए विदेशों तक गये और वहाँ अपनी कीर्ति के झंडे गाड़े। अपनी पाँच हजार वर्षों से भी अधिक प्राचीन संस्कृति की छाप आज भी संसार के अनेक भागों में दृष्टव्य है। लेखक हमें बताता है कि सम्राट अगस्टस के राज्यकाल मे अर्थात् २७ ई० पू० भारत के राजदूत रोम राज्य में रहा करते थे। सम्राट जस्टिनियन ने तो अपने राज्य के नियम व उपनियम बनाने में भारतीय मुनियों द्वारा रचित स्मृतियों से सहायता ली थी। भारतीय संस्कारों का प्रभाव प्राचीन इटली की सभ्यता में भी पाया जाता है। अग्नि को साक्षी बनाकर विवाह करना अथवा पति के कुल और पत्नी के कुल में अधिक दूरी होने पर ही विवाह होना प्रत्यक्ष ही भारतीयता की छाप है। ज्ञान और विद्या की इतालियन मूर्ति मिनर्वा भारत की सरस्वती की प्रतीक है। शुभ कामों में प्रथम देवता जेनस भारत के देवता गणेश ही है। पेरु देश के निवासी अपने सब से बड़े पर्व को राम सितवा के नाम से सम्बोधित करते हैं। कुल मिलाकर 'चारुचित्रा' उपन्यास एक सशक्त, प्रेरक व ज्ञानवर्द्धक कृति है और इसके लिये कैलाश कल्पित साधुवाद के पात्र हैं।

कल्पित भाई की दूसरी पुस्तक जिसने मुझे प्रभावित किया, वह उसका कहानी-संग्रह 'सितारे अन्धेरे के' है। इस संग्रह में अठारह कहानियाँ सम्मिलित हैं। १६०

पृष्ठों के इस संग्रह में सम्मिलित ये सभी कहानियाँ पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी हैं। उनमें से कतिपय कहानियों की साहित्य जगत में चर्चा भी हुयी है। लेखक ने अपनी कहानियों के पात्र मध्यवर्गीय परिवारों से लिये हैं। स्वतन्त्रता-प्राप्ति के बाद हमारे समाज में जो परिवर्तन आए हैं, जीवन-मूल्यों के प्रति जो बदलाव आया है, राष्ट्रीय चरित्र का जैसा पतन हुआ है, उसको लेखक ने बड़े सधे ढंग से अपनी इन कथाओं में प्रस्तुत किया है। ये कहानियाँ कम्पित जी की सामाजिक निष्ठा तथा वैचारिक जागरुकता का परिचय देती हैं। भाषा व शैली में किसी प्रकार की कृत्रिमता नहीं। चूंकि लेखक कवि भी हैं शायद इसी कारण अनेक स्थलों पर भाषा काव्यमयी हो गयी है। दो-चार कहानियों को छोड़कर शेष सभी कहानियाँ रोचक व पठनीय हैं। मनोवैज्ञानिक धरातल पर परख करने पर ये कहानियाँ अपनी प्रखरता के साथ हमारे सामने आती हैं। कहीं-कहीं उर्दू शब्दों का इस्तेमाल भाषा को अधिक रोचकता व सटीकता प्रदान करता है।

संग्रह की पहली कहानी 'अशरफ की वसीयत आशा के नाम' एक रोचक कथा है जिसमें शुरू से अन्त तक उत्सुक्ता बनी रहती है। कहानी की नायिका आशा के उच्च चरित्र को बड़े कुशल अन्दाज में प्रस्तुत किया गया है। आशा के पति शारदा प्रसाद जी शक्की स्वभाव के हैं, उनकी प्रस्तुति भी बड़ी स्वभाविक है। जीवन-मूल्यों की स्थापना के लिये लेखक के मन में जो आकांक्षाएँ मचल रही हैं, यह कहानी उनकी परिचायक है। आशा जैसी महिलाएँ आज के समाज में बहुत कम देखने को मिलती हैं। जहाँ आशा आदर्श जीवन को प्रस्तुत करती है वहाँ अशरफ की पहली पत्नी बेगम हुस्ना बहुत सीमा तक अपने सुख के लिये ही परेशान नजर आती है। 'कहानी अमन अली की' हमारी आज की व्यवस्था पर बहुत गहरी चोट करती है। इसमें लेखक ने धूर्त राजनेता का पर्दाफाश किया है। आज के वातावरण में अमनअली जैसे इमानदार आदर्शवादी लोगों को किन-किन खतरों का सामना करना पड़ता है, वह इस कहानी में दिखाया गया है। कहानी में वेदना के साथ-साथ हास्य-व्यंग्य का पुट भी देखा जा सकता है।

लेखक की एक सशक्त कहानी है 'लड़ाई'। इसमें दिखाया गया है कि किस प्रकार पूंजीपति अथवा सत्ताधारी वर्ग कोरे आश्वासनों से या कुछ टुकड़े फेंककर जनता को भरमाते रहते हैं। झुम्मन मियां की भूमिका सराहनीय अंदाज में पेश की गयी है। मेरी दृष्टि में संग्रह की सब से सशक्त कहानी 'पिता' है। कहानी में बड़े मार्मिक ढंग से अपनी पुत्री बिट्टो व पुत्र सतीश के भविष्य के लिये पिता परेशान है। सुशिक्षित बेटे की बेकारी के कारण पिता हर समय चिन्ता में डूबा रहता है। अन्त में पिता जो सरकारी कर्मचारी है, रेल से कटकर इसलिये आत्महत्या कर लेता है ताकि उसकी मृत्युपरान्त उसके पुत्र को दयाभाव के कारण उसके स्थान पर नौकरी मिल जाय। बेरोजगारी की भयानक समस्या पर बड़े जोरदार अंदाज में चोट की गयी है। यह ऐसी कहानी है जो बीसों वर्ष बाद भी पाठक को याद रहेगी। कहानी 'मन्सूर का मन्दिर' आज के धार्मिक आडम्बरों पर कहीं गहरे से चोट करती है। संग्रह की अन्य कहानियाँ भी पठनीय हैं।

आकांक्षा
९१सी/८सी, सर्वोदय नगर, भारद्वाज पुरम, इलाहाबाद–६

कुछ मनीषियों के विचार

पं० सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' [आज से 38 वर्ष पूर्व] प्रयाग

कैलाश 'कल्पित' हिन्दी के चमकते हुए नये तारों में हैं, इलाहाबाद के नागरिक लेखकों में नामी, स्फूर्त, प्रसन्न और सहिष्णु नवयुवक की कुल तैयारियों का एकीकरण कैलाश जी में मिलता है। आधुनिकता उनकी कहानी कला का मेरुमूल है अर्थात् रचनाएँ तुली हुई वर्णनात्मक होती हैं। मेक्स की पुट शिक्षा, मार्जन, संस्कृति और सामाजिकता के उत्कर्ष को लिये होती है। इसका फल साहित्य के नागरिक जीवन पर अच्छा प्रभाव डालता है। हम कहानी लेखक की उत्तरोत्तर श्रीसम्पन्नता चाहते हैं। आधुनिक अपर प्रौढ़ तथा सामयिक वयस्क नगर और बाहर के लेखकों की तरह कैलाश साहित्य के पायेदार प्रतिनिधि ठहरेंगे, इसमें द्विधा नहीं।

पद्मभूषण डा० रामकुमार वर्मा

एम० ए०, पीएच० डी०, डी० लिट्०, इलाहाबाद

श्री कैलाश कल्पित बहुमुखी प्रतिभा से सम्पन्न साहित्यकार हैं।....इधर उनकी कहानियों का एक संग्रह प्रकाशित हुआ है—'सितारे अंधेरे के'। अट्ठारह कहानियों द्वारा अट्ठारह कक्षों को उन्होंने अपने कौशल से जगमगा दिया है।.... कुछ कहानियाँ तो ऐसी हैं जो देश के इतिहास में परिवर्तन ला सकती हैं। सबसे अच्छी कहानी तो 'मंसूर का मंदिर' है, जो सम्प्रदायों का विष दूर करती है। मैं कैलाश कल्पित को इस कहानी संग्रह की प्रभाव-प्रवणता के लिए बधाई देता हूँ....।

डा० राम प्रसाद मिश्र,

एम० ए० पीएच० डी०, नई दिल्ली

...श्री कैलाश कल्पित 'सितारे अंधेरे के' की कहानियों में एक कुशल कहानीकार के रूप में दृष्टिगोचर होते हैं। कहानी संग्रह का १२ पृष्ठीय 'प्राक्कथन' अधुनातन कहानी की बहुआयामी समीक्षा के कारण अतीव मूल्यवान है।....कल्पित जी न तो राजेन्द्र यादव इत्यादि के सदृश साम्यवादी है, न निर्मल वर्मा इत्यादि के सदृश व्यक्तिवादी, वे शतशः भारतवादी हैं जिनकी संवेदना राष्ट्र के कोटि-कोटि शोषित प्रपीड़ित-संत्रस्त नर-नारियों से संयुक्त है। यद्यपि वे अपने ऊपर प्रेमचन्द एवं यशपाल के प्रभाव की चर्चा करते हैं, तथापि न तो 'कफन' इत्यादि के भयावह-यथार्थवाद से अभिभूत हैं, न 'सेवासदन' के अतिशय आदर्शवाद से, वे न 'पर्दा' के नग्न सत्वाद से और न 'खानदान' के नग्न यौनवाद से—वस्तुतः वे अस्मिता से ऊभ-चूभ मौलिक कलाकार हैं।

उनकी कहानियाँ हिन्दू-मुस्लिम एकता 'अशरफ की वसीयत आशा के नाम', 'कहानी अमनअली की', 'खून का रिश्ता' इत्यादि में—और 'मंसूर का मंदिर' तो

एक उच्चकोटि की कहानी ह-हा) की प्रेमचन्दी एवं यशपाली विरासत में लासानी जरूर हैं; किन्तु प्रकृत्या वे युग वैषम्यजन्य जीवन-विभीषिका के शिल्पी हैं। उन्होंने भ्रष्टाचार, दहेज, नारी अन्याय, उत्कोच कालातीत-अभिजातवाद इत्यादि को बड़े गहरे रंगों में उकेरा है (पिता, कायर, ऊपरी आमदनी, लंबे हाथ', 'प्यार का प्रति-मान' इत्यादि कहानियों में) किन्तु वे कहीं भी संतुलन एवं शालीनता च्युत नहीं हैं। 'आदर्श जीविका' में शाला शिक्षकवर्ग पर उनका व्यंग्य चुभता हुआ है। 'स्लीपिंग बर्थ की तलाश', 'पर्दा गिरने के बाद' इत्यादि घटनाएँ हैं, कहानियाँ नहीं, किन्तु जीवन के सत्य इनमें भी विवृत हुए हैं।

'पिता' कल्पित की सर्वश्रेष्ठ कहानी है, जिसका पुत्र आजीवका के हेतु बलिदानी नायक (पिता), हृदय को हिलाकर रख देता है। 'पिता' अपने सशक्त यथार्थ में 'कफन' से अधिक प्रभावी है, क्योंकि 'कफन' में प्रेमचन्द ने यथार्थ का प्रचंड-चित्रण करते समय मेहनतकश-गरीब को नितांत-पतित बना डाला है (उतना जितना वह है नहीं) जबकि 'पिता' में कल्पित जी ने गहनतम यथार्थ को गहनतम मानवीय मूल्य से संयुक्त करने में सफलता प्राप्त की है। 'मंसूर का मंदिर' भी यथार्थ मानवीय मूल्यों से संयुक्त करने के कारण एक चिरस्मरणीय कहानी बन गई है। संग्रह का संवेदन जनपरक है, अधुनातन है; भाषा-शैली (शिल्प की बाजीगरी से दूर रहकर भी) तद्गत। निस्सदेह इस संग्रह से हिन्दी कहानी-साहित्य संपन्न हुआ है।

× × × ×

प्रसिद्ध उपन्यासकार, यशपाल पुरस्कार-विजेता कहानीकार एवं सहृदय कवि श्री कैलाश 'कल्पित' की प्रतिनिधि एवं श्रेष्ठ कहानियों का संग्रह **'प्रतीक मानवता के'** उनके स्वस्थ-स्वच्छ व्यक्तित्व एवं समर्पित सोद्देश्य कृतित्व का ठीक-ठीक परिचय कराने मे सफल सिद्ध होता है। इधर एक अर्से से, जीवन की कुत्सा, जुगुप्सा एवं विडंबना मात्र के चित्रण को प्रगतिशीलता का पर्याय मान लिया गया है, मनोविज्ञान का प्रतीक मान लिया गया है; और साम्यवादी एवं व्यक्तिवादी दोनों ही अपने-अपने ढंगों से साहित्य को विकृतियों का संग्रहालय बनाने में जुटे पड़े हैं। प्रगतिशीलता एवं मनोवैज्ञानिकता दोनों को ही जड़ीभूत रूढ़ियों का रूप दे दिया गया है। ऐसे दमघोंटू वातावरण में कैलाश 'कल्पित' जैसे मुक्त किन्तु प्रगतिपंथी, संवेदनशील किन्तु संस्कृति प्रेमी कहानीकार की मानवता के उज्ज्वल पक्षों को उजागर करने वाली कहानियाँ शीतल स्वच्छ बयार की प्राणदायिनी तरंगें प्रतीत होती हैं। निर्लोभता, बलिदान, सच्ची धर्म निरपेक्षता, कर्तव्य परायणता, राष्ट्रहितवाद, सहज संवेदन प्रभृति मानवीय सद्वृत्तियों को चित्रित करने वाली 'कल्पित' जी की कहानियाँ प्रेमचन्द, कौशिक, सुदर्शन, भगवती प्रसाद बाजपेयी इत्यादि की यथार्थपुष्ट-आदर्शप्रवण कहानियों की परम्परा को विकसित करती प्रतीत होती हैं।

यह सत्य है कि 'कल्पित' जी की कहानियों में कला का बांकपन और शिल्प का चमत्कार नहीं प्राप्त होता। वे अजायबघर के कलाकार नहीं, जनजीवन के कहानीकार हैं। किन्तु उनकी कहानियाँ जीवन को अच्छी प्रेरणा देती हैं, जीवन यात्रा को संबल प्रदान करती हैं। इन कहानियों का स्वागत होना चाहिये, इन्हें पाठ्यक्रमों में स्थान प्रदान किया जाना चाहिये।

डा० बलदेव प्रसाद मिश्र डी० लिट०, रायपुर

प्रिय कल्पित जी! आपकी पुस्तकें (राख और आग, कालासाहब गोरी मेम, इण्डिया रिटर्न एवं इन्द्रबेला और नागफनी) बड़े चाव से देख गया। आपकी इन कृतियों से आपकी बहुमुखी प्रतिभा का अच्छा परिचय प्राप्त हुआ। कहानियों में आपने पर्याप्त प्रभविष्णु कलात्मकता के साथ युगचेतना के रंग उभारे हैं। कविताओं में आपने विविध विधाओं द्वारा भाव-गाम्भीर्य भी दिया है और चुटीले व्यंग्यों का सृजन भी किया है। अपने भविष्य के सम्बन्ध में मेरी शतशत हार्दिक शुभकामनाएँ स्वीकार कीजिये।

आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी, उज्जैन

... आपकी पुस्तक 'काला साहब गोरी मेम' यथा समय मिली थी! कुछ कहानियाँ पढ़ गया हूँ। संकलन में जब 'उसका स्नेह', 'महत्वाकांक्षी', और मर्यादा का प्रश्न' जैसी सुन्दर कहानियाँ दी हैं तो पुस्तक का नाम 'काला साहब गोरी मेम' क्यों रखा गया, समझ में नहीं आया? शायद यह प्रकाशक की सूझ है! मेरा आशीर्वाद लें।

यशपाल, लखनऊ

आपकी पुस्तकें 'राख और आग' तथा 'इण्डिया रिटर्न' मिलीं। इनमें से बहुत-कहानियों को पढ़ डाला और मुझे रोचक लगी हैं।

डा० कल्याणमल लोढ़ा,

भू० पू० हिन्दी विभागाध्यक्ष, कलकत्ता विश्वविद्यालय

'सितारे अंधेरे के' कहानी संग्रह की कहानियाँ पढ़ीं। इन कहानियों में आप ने धरती के आदमी को ही अपना आधार बनाया है। अंधेरा हो चाहे उजाला, सूरज-चाँद का आलोक हो या सितारों की झिलमिलाहट, धरती सदैव धरती ही रहती है—ठोस, स्थिर और स्थायी। इसी धरती की बात आपने इन कहानियों में कही है।

आपका यह कथन सार्थक है कि विकृत समाज की धुंध के अंधेरे में सामान्य जीवन व्यतीत करते दिखाई देने वाले व्यक्ति मात्र जीवनभोगी नहीं होते, उनमें अनेक मानवीयता की धरा पर मेरु-सा व्यक्तित्व रखने वाले भी होते हैं। 'अशरफ की वसीयत आशा के नाम' की आशा और 'मन्सूर का मन्दिर' की रशीदा और स्वदेश एवं अन्य कई पात्र इसी मानवीयता की धरा पर पले हैं।

(शेष पृष्ठ ४१ पर देखें)

1
2
3

9-1-94
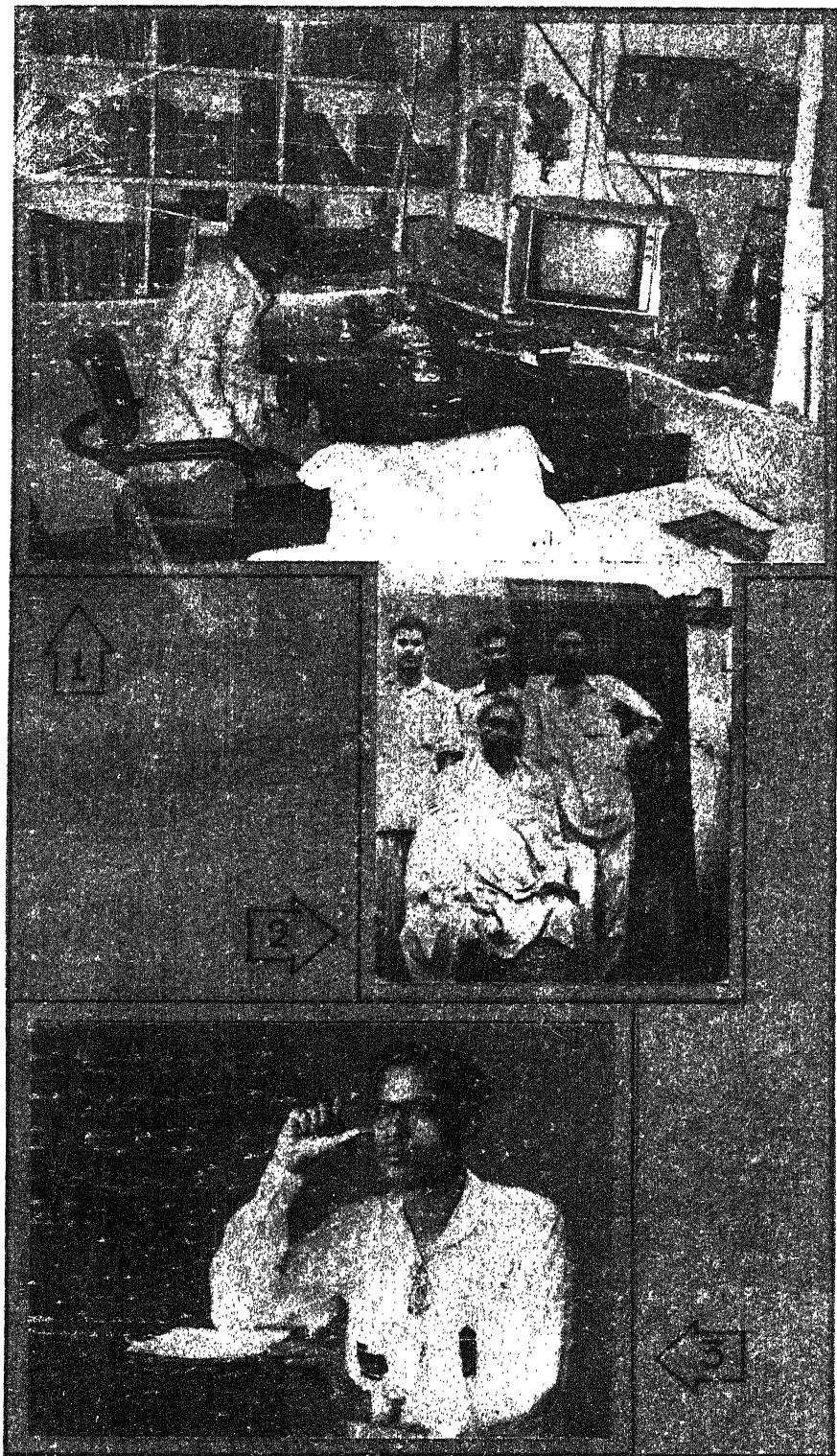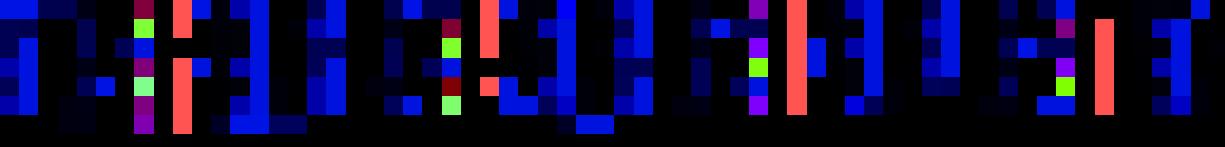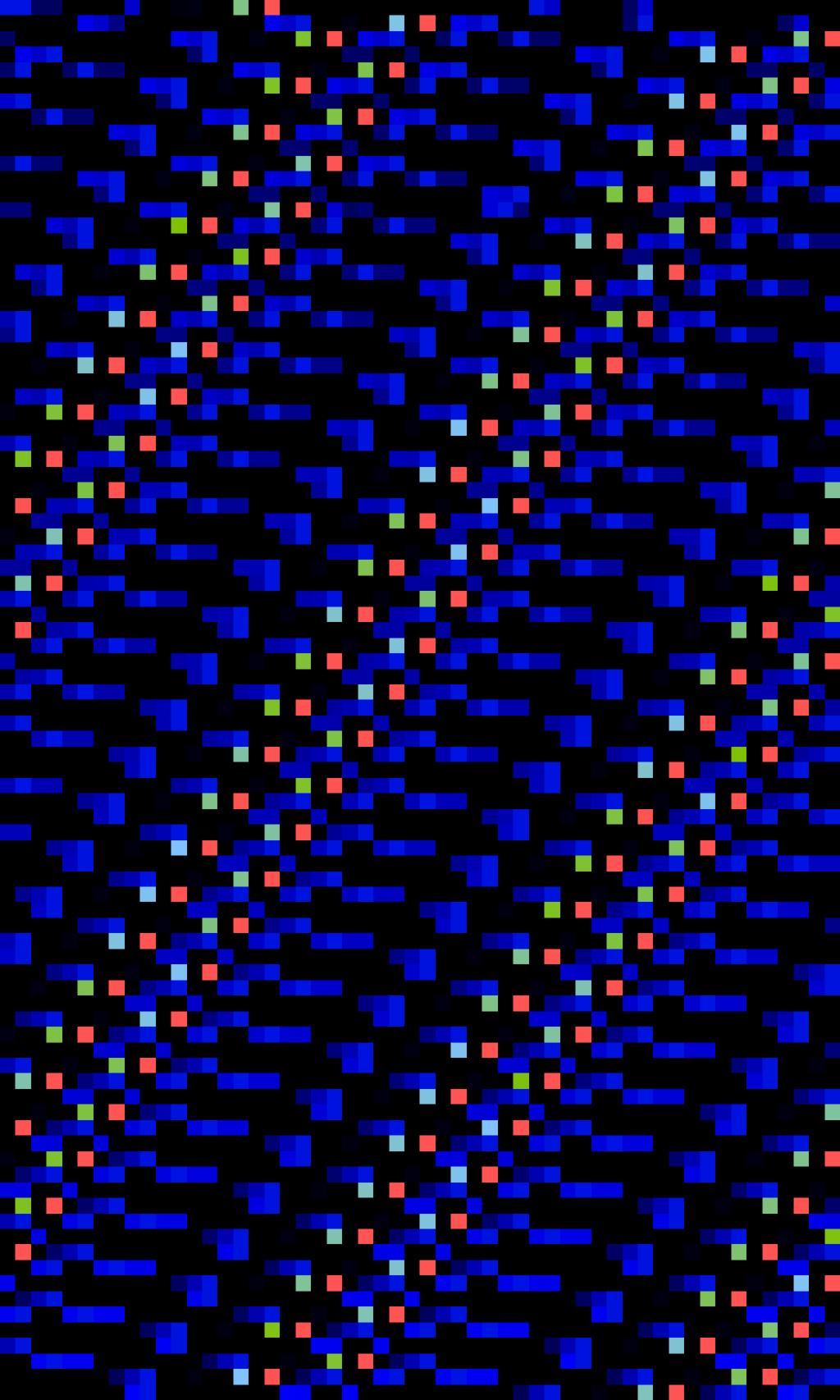
चित्र - परिचय

कैलाश कल्पित अपने लेखन कक्ष में

निराला जी के प्रथम सम्पर्क में कैलाश कल्पित (१९४९) चित्र में शिवगोपाल मिश्र व जय गोपाल मिश्र भी

२५ वर्ष की आयु में कैलाश कल्पित (लेखक बनने की तैयारी) बिना बटन की कमीज़, एक जेब पर दावात की आकृति दूसरी जेब पर लेखनी की

महाकवि सुमित्रानन्दन पंत व उनकी गोद ली हुई बेटी के साथ कैलाश कल्पित (चित्र - १९७७)

कैलाश कल्पित के साथ श्री उपेन्द्रनाथ अश्क

कैलाश कल्पित के साथ बिहारी सतसई के अनुवादक अमरीकी कवि वैरन हालैण्ड

५०वीं वर्षगाँठ के अवसर पर पं० पद्यकान्त मालवीय सभा को सम्बोधित करते हुए । मंच पर (बाएं से दाएं) सर्वश्री श्रीकृष्णदास, डॉ हरदेव बाहरी, बाला जी, पद्मकान्त मालवीय, राजाराम शुक्ल, बाबूलाल सुमन, कैलाश कल्पित, श्रीप्रकाश तथा डॉ संत कुमार

श्री कैलाश कल्पित के ५०वें जन्मदिवस पर उमाकान्त मालवीय कविता पढ़ते हुए चित्र में बाबू लाल 'सुमन', नौबतराय 'पथिक' तथा डॉ० राजेश्वर सहाय त्रिपाठी आदि दृष्टिगत

होटल टिप्सो इलाहाबाद में 'अनुभूतियों की अजन्ता' काव्य संग्रह के लोकार्पण गोष्ठी में विजय कुमार श्रीवास्तव, कैलाश कल्पित, इलाचंद्र जोशी, डॉ रणवीर रांग्रा, डॉ शिवगोपाल मिश्र तथा डॉ हरदेव बाहरी आदि ।

५५ वीं वर्षगाँठ के अवसर पर हिन्दी साहित्य सम्मेलन के संग्रहालय में श्री प्रयागदत्त चतुर्वेदी (आई०ए०एस०) प्रशासक इलाहाबाद महानगरपालिका से नागरिक अभिन्दन-पत्र प्राप्त करते हुए । चित्र में महाकवि बाबा नागार्जुन तथा उपन्यासकार इलाचन्द्र जोशी भी दृष्टिगत ।

राजर्षि पुरुषोत्तम दास टण्डन की मूर्ति को माल्यार्पण करते हुए कैलाश कल्पित साथ में श्री पन्नालाल गुप्त 'मानस', अंजनी कुमार 'दुर्गेश' तथा विजय कुमार श्रीवास्तव

कैलाश कल्पित पं० इलाचन्द्र जोशी के स्नेहपाश में

श्री कैलाश कल्पित द्वारा प्रतिष्ठापित अ०भा० हिन्दी प्रतिष्ठापन मंच की एक विशेष सभा को सम्बोधित करते हुए श्री लक्ष्मीकान्त वर्मा   मंच पर आसीन डॉ० हरदेव बाहरी पन्नालाल गुप्त मानस प्रेमचंद गुप्त तथा महासत प्रभुदत्त ब्रह्मचारी

कैलाश कल्पित के साथ एक पार्टी में डॉ कैलाश बुधवार (बी०बी०सी०लंदन के हिन्दी कार्यक्रम संयोजक)

अ०भा० हिन्दी प्रतिष्ठापन मंच, अलवर शाखा (राजस्थान में) द्वारा आयोजित हिन्दी दिवस काव्यपाठ करते हुए गीतकार गुलशन, सुरेश पंडित तथा अन्य कवि १४-९-९४

कैलाश कल्पित के निवास पर डॉ० राम कुमार वर्मा (१९८०)

अभिषेक श्री समारोह इलाहाबाद में श्री कैलाश कल्पित, हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष रामेश्वर शुक्ल 'अंचल' जी से सम्मानित होते हुए, बीच में श्री नर्मदेश्वर चतुर्वेदी पार्श्व में विनोद रस्तोगी तथा डॉ० हरदेव बाहरी

कलाभारती संस्थान, बस्ती में डॉ० श्याम सिंह 'शशि' द्वारा सम्मान प्राप्त करते हुए कैलाश कल्पित, संयोजक कवि राजेन्द्र परदेसी तथा डॉ० प्रताप नारायण वर्मा भी दृष्टिगत।

'सृजन-पथ के पत्र' के सम्पादन के लिए श्री कैलाश कल्पित तथा प्राचीन मिस्र में भारतीय संस्कृति के प्रखर लेखक श्री नवीन खन्ना को कवि-आलोचक डॉ राहुल माल्यार्पण करते हुए ।
दांये से बाएं : श्री कैलाश कल्पित, डॉ गंगा प्रसाद विमल, पद्मश्री यशपाल जैन, डॉ जीवन प्रकाश जोशी तथा डॉ० विजय (प्रगति मैदान दिल्ली में) ।

विभिन्न पुस्तकों, पुरस्कारों एवं सम्मान पत्रों से अलंकृत श्री कैलाश कल्पित का कक्ष

अखिल भारतीय हिन्दी प्रतिष्ठापन मंच, बम्बई द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी — ६ अक्टूबर १९९४

बैठे हुए (बाएं से दाएं) - डॉ प्रेम भार्गव (उपाध्यक्ष) आमंत्रित अतिथियों के साथ
पीछे (बाएं से दाएं) - डॉ नरेन्द्र कुमार जोशी (उपमंत्री), डॉ मुकुटधर बाजपेई, श्री कृष्ण कुमार शर्मा (सदस्य कार्यकारिणी), डॉ विजय कुमार भार्गव (उपमंत्री एवं संयोजक संगोष्ठी), डॉ कैलाश नाथ पाण्डेय (मंत्री), डॉ सत्यनारायण त्रिपाठी (सदस्य कार्यकारिणी), डॉ दया शंकर, श्री विजय शंकर ओझा (सदस्य), श्री विनोद कुमार मिश्र (लेखा परीक्षक) आदि ।

[पृष्ठ ३२ के आगे]

आपने इन कहानियों में हिन्दुओं और मुसलमानों को एक साथ प्यार की डोरी में बांध कर जीवन की अस्मिता का उद्घाटन किया है। मैं कहानी-कला को जीवन की इसी अस्मिता से संपृक्त समझता हूँ।....इसके पूर्व भी मैंने आपकी रचनाएँ पढ़ी हैं—सब में आप में इसी अन्तर्ध्वनि की गूँज देखी है। प्रस्तुत कहानी संकलन की भूमिका भी महत्त्वपूर्ण और उपयोगी है, बधाई।

डा० कमल किशोर गोयनका, नई दिल्ली
(कथा साहित्य, विशेषतयः प्रेमचंद साहित्य के विशेष अध्येता)

'सितारे अंधेरे के' पुस्तक मिली।....आपके साहित्यिक कार्यों से मैं पूर्णतः परिचित हूँ और आपके प्रति आदर भाव रखता हूँ। आपने खूब कार्य किया है और साहित्य की सेवा की है। इस सग्रह की कहानियाँ पढ़ीं और आपकी रचनाशीलता, प्रतिभा तथा आपके व्यक्ति का और भी प्रशंसक हो गया हूँ। आपने समाज की मर्म-स्पर्शी स्थितियों को पकड़ा है और उन्हें शब्दों में व्यक्त करके जीवंत बना दिया है। कुछ दृश्य तो हृदय को जकड़ लेते हैं और मन पर अक्स खिंच जाता है। इसके लिए मेरी बधाई है।

अमृतराय,
(सुप्रसिद्ध कथाकार एवं संपादक)

....आपकी कहानियों का मध्यवर्गीय संसार आपका अपना अच्छी तरह परिचित और भोगा हुआ संसार है, उसकी जीवन-शैली और उसकी दैनदिन समस्याओं को अच्छी तरह उकेरा गया है। आपकी कथादृष्टि बिल्कुल अपनी है जो अधिकतर आदर्शो-मुखी यथार्थवादी है, पर कहीं-कहीं मुझे कहानियाँ पढ़ते हुए ऐसा लगा कि जैसे आदर्श और यथार्थ का संयोग बहुत स्वाभाविक और विश्वासोत्पादक नहीं बन पड़ा है, तथापि कहानियाँ मुझे रोचक लगीं....शुभ कामनाओं सहित,

आपका
अमृतराय।

साहित्य मनीषी, मर्म-मर्मज्ञ
माननीय पं० महेशनारायण शुक्ल,
(पूर्व मुख्य न्यायाधीश, उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद

कैलाश कल्पित जी वर्तमान कहानीकारों में एक विशिष्ट स्थान के अधिकारी हैं। आज की परिस्थितियों और वातावरण के प्रति ऐसी जागरूकता और सजगता बहुत कम लेखकों की लेखनी से इतनी सजीव रूप में ढल कर निःसृत हुई है। आज की समस्यायें, नैतिक परंपराओं का अवमूल्यन, स्वार्थपरायणता की पराकाष्ठा, भ्रष्टाचार का सर्वाधिक प्रसार आध्यात्मिक आदर्शों का विलोपन तथा राजनीति

के कुप्रभाव द्वारा पूरे समाज के ढाँचे का विकृत हो जाना—यह सब उनकी कहानियों मे प्रत्यक्ष उपस्थित हो जाता हैं; और उनका यथार्थवादी दृष्टिकोण, उनकी सरल, सुबोध एवं व्यंगात्मक शैली उनके संदेश को पाठक तक पहुँचाने में पूर्ण सक्षम है।

'कहानी अमन अली की' एक आदर्शवादी, निःस्वार्थ सेवक की दुखान्त कहानी है। काया में लघु होते हुए भी वह अत्यन्त कुशलता के साथ एक ऐसे व्यक्ति का मार्मिक चित्र प्रस्तुत करती है जिसने जीवनपर्यन्त यातना सहते हुए भी बेईमानी, घूसखोरी तथा झूठ से समझौता नहीं किया और जिसे अपने आदर्शों के निर्वाह का मूल्य अपनी प्राणाहुति द्वारा चुकाना पड़ा।

कल्पित जी की सशक्त कहानियाँ अपने रोचक घटना-चक्र तथा सूक्ष्म चरित्र-चित्रण के माध्यम से इस कटु यथार्थ को उद्घाटित करती है कि आज के विषाक्त युग मे असत्य ने सत्य को, कूटनीति ने दार्शनिकता को तथा धूर्तता ने सात्विकता को निष्कासित कर दिया है।

कल्पित जी की सूक्ष्म, एवं मनोवैज्ञानिक दृष्टि भी उल्लेखनीय है। घटनाओं के आघात प्रतिघात से मानवव्यक्तित्व मे जो आन्तरिक परिवर्तन घटित होते रहते है, साथ ही बाह्य जीवन के परदे के पीछे मनुष्य के अन्तः मानस में जो सतत द्वन्द्व चलते रहते है, और जो आन्तरिक वेदना रह-रह कर अव्यक्त टीस उत्पन्न करती रहती हैं उन सबका अत्यन्त अथार्थ समावेश उनके चरित्र-चित्रण में मिलता है। 'उखड़ा हुआ आदमी' एक ऐसे व्यक्ति के दुखी जीवन की कहानी है जो अपनी पत्नी को खो चुका है और वर्षों तक उसके गृह में कोई गृहणी न होने के कारण उसे बड़ा कष्टमय जीवन झेलना पड़ता है। वह कल्पना करता है कि कुछ ही वर्षो बाद उसकी बहुयें आ जायेंगी और घर भरा पूरा हो जायेगा, किन्तु बहुओं से तो उसे केवल Kitchen—'किचेन' सुख मिल जायेगा परन्तु सहचर्यता (Companionship) तथा सच्ची मैत्री का शक्तिशाली सम्बल उसे जीवन-यात्रा में अब कभी उपलब्ध न होगा।

लेखक के मनोवैज्ञानिक विश्लेषण पर पाश्चात्य मनोवैज्ञानिक चिंतकों का गहरा प्रभाव है, मुझे तो उनकी कहानियों में फ्रायड तथा डी० एच० लारेन्स की छाया साफ नजर आती है। फ्रायड तो कला अथवा साहित्य को अभुक्त काम की प्रेरणा मानता था। उसके अनुसार हमारी वासना को यदि प्रत्यक्ष जीवन में तृप्ति नहीं मिलती, तो वह अन्तर्मन में जाकर पड़ जाती है और फिर ऐसी अवस्था में जबकि हमारा चेतन मन जागरूक नहीं होता वह अपने को 'परितृप्त करने का प्रयत्न करती है। यह अवस्था या तो स्वप्न की अचेतना अवस्था होती है या साहित्य-सृजन की अर्ध-चेतनावस्था / तन्मयता की अवस्था है। काम के दमन से स्वभाव में जो ग्रन्थियाँ पड़ जाती हैं उनमें सबसे मुख्य है मातृ-रति की ग्रन्थि जो न केवल स्वप्न और काव्य के अनेक स्थायी प्रतीकों की वरन् जीवन की अनेक प्रवृत्तियों की भी जननी है

'खोया हुआ कल और आदमी का जानवर' भी ऐसी ही सुप्त ग्रन्थियों के चमत्कार की कहानी है। वह एक भयावह, मनोवैज्ञानिकसत्य का नग्न चित्र उपस्थित करती है। उसके नायक के मन में अपने किसी निकट पवित्र सम्बन्धी से जुड़ी हुई नारी (अपनी भाभी, माँ, बहन जैसी) के प्रति विकार की भावना उत्पन्न होती है, जिसे वह स्वप्न में देखता है और स्वप्न से जागने पर उसे ग्लानि का अनुभव होता है, वह बड़बड़ा उठता है—'आदमी और जानवर में कोई अंतर है या नहीं ? सभ्यता और संस्कृति के सहस्त्र आघातों के उपरान्त भी क्या मुझमें वह जानवर अब भी कहीं छुपा बैठा है ? वह तो नाग की तरह अपने परिवार को ही खा जाने वाला है।' इन पंक्तियों में फ्रायड और लारेन्स की प्रतिध्वनि सुनाई देती है।

कला की प्रौढ़ता की पहचान यह है कि उसमें सूक्ष्मातिसूक्ष्म आकार में अधिक से अधिक विराट को समेटा जा सके; लघु कथा की सफलता के लिये तो यह गुण अनिवार्य है। कैलाश कल्पित जी इस कसौटी पर खरे उतरते हैं। उनका यह चमत्कार उनकी मात्र तीन पृष्ठ की लघु कथा "अन्दर बाहर का द्वन्द्व" में देखने में मिलता है। इतनी सीमित परिधि में मुख्य पात्र का अन्तर्द्वन्द्व समग्रता के साथ उपस्थित हुआ है, और गिरते हुये नैतिक मूल्यों का हास्य-व्यंग चित्र 'ऊपरी आमदनी' में सुन्दरता से उभर कर आया है।

मैं कैलाश कल्पित जी के लगभग सम्पूर्ण कृतित्व से परिचित हूँ इसमें आश्चर्य ही क्या कि जिस कलाकार की कविवाणी ने यह घोषणा की थी :—

मत छेड़ो उर के तारों को,
हैं इनमें कुंठाओं के स्वर,

उसका कथा-साहित्य, समाज की कुंठायों, विकृतियों और असंगतियों का दर्पण बन जाये।

'मेरा अपनापन, लघु दर्पण,
बिम्बित करता जग का जीवन,
जग के आघातों की प्रतिध्वनि,
मेरी वाणी हो जाती है,
शोषित के शोषण की गाथा,
मुझसे मुखरित हो जाती है।'

डा० विष्णु पंकज, इन्द्रपुरी, जयपुर

[दैनिक अणिमा (दिनांक ३ जुलाई १९८८) जयपुर]

हिन्दी के वरिष्ठ साहित्यकार कैलाश कल्पित ने उपन्यास कविता, कहानी, साक्षात्कार, अनुवाद आदि अनेक क्षेत्रों में अपनी पैनी कलम के चमत्कार दिखलाये हैं। प्रस्तुत संग्रह में उनकी अठारह विशिष्ट कहानियाँ संकलित हैं।........'अशरफ

की वसीयत आशा के नाम', 'कहानी अमनअली की' 'खून का रिश्ता' और 'मन्सूर का मंदिर' कौमी एकता की प्रतीक कहानियाँ हैं।

'मंसूर का मंदिर' एक उच्चकोटि की चिरस्मरणीय कहानी है, जिसमे धार्मिक कट्टरता का विरोध किया गया है। 'पिता' सम्भवतः इस संकलन की सबमे सशक्त कहानी है जिसमें आज के सामाजिक परिवेश की मर्जीवता मे उभारा गया है। 'कायर में कुंवारी माँ की समस्या उठाई गई है। 'उखड़ा हुआ आदम' और 'अन्दर बाहर का द्वन्द्व' मनोवैज्ञानिक स्तर पर मानसि ऊहापोह को प्रस्तुत करती है। 'आदर्श जीविका' कचरा टीचरों पर व्यंग्य है। 'ऊपरी आमदनी में' औरत खोरी और घूस खोरी का नतीजा बताया गया है। 'लंबे हाथ' में दहेज समस्या उठाई गई है। 'प्यार का प्रतिमान' मे यह मनोवैज्ञानिक सत्य सामने लाया गया है कि अभि-व्यक्ति के अभाव में सहज इच्छाएँ समाप्त नहीं होतीं। सभी कहानियो में लेखन की कुशलता, संवेदनशीलता, सन्तुलन और शालीनता देखने योग्य है।''''कहानीकार ने नई या पुरानी कहानी के चक्कर में न पड़कर सिर्फ कहानियाँ पेश की हैं। वह विदेश से आयातित संस्कृति, सामाजिक पलायन और व्यक्तिवाद का पक्षधर नहीं है। कहानियाँ जीवन के धरातल से जुड़ी हैं और सामाजिक दायित्व के विकास में सहयोगी है।''' ये कहानियाँ पाठक को सोच के लिये मजबूर कर देती हैं जो लेखक की सफलता का सूचक है।

डा० रामवल्लभ शर्मा, एम० ए०, पीएच० डी०,
(आकाशवाणी छतरपुर, पुस्तकों की समीक्षा से कुछ अंश)

पुस्तक है—'सितारे अंधेरे के'। यह हिन्दी के प्रतिष्ठित साहित्यकार श्री कैलाश कल्पित का नवीनतम कहानी-संग्रह है। इसमें अठारह कहानियाँ संकलित है। ये सभी कहानियाँ १९५६ से १९८२ तक की अवधि में लिखी गई है और विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी हैं। कल्पित जी की इन कहानियों मे न तो सामाजिक दायित्व की उपेक्षा है और न ही कथ्य और शिल्पगत नवीनता के नाम पर अटपटे प्रयोग किये गये हैं। इन सभी रचनाओं में श्रेष्ठ मानव-मूल्यों की तलाश है और कथाकार ने बड़ी सहजता से जीवन के आदर्शों को पाठों तक सम्प्रेषित किया है। कथाकार कहानी विधा को समाज को स्वस्थ परिवेश में ले जाने का सशक्त माध्यम मानता है। उसके अनुसार साहित्यकार का दायित्व है कि वह यथार्थ का चित्रण करते हुए समाज की नकेल वांछित दिशा की ओर मोड़ने का प्रयास भी करे।''''आज जब चारों ओर देश और समाज में घुटन भरा माहौल है, सर्वत्र अंधकार-ही-अंधकार नजर आता है, श्रेष्ठ जीवनमूल्य चुक गये हैं। आयातित भोगवादी संस्कृति हावी हो गई है, मानवता, प्रेम, उदारता, स्नेह, सौहार्द, धर्मनिर्पेक्षता सत्य और अहिंसा आदि जीवन के उजले पक्ष मूल्यों के विघटन के

कारण धुंधले हो गये है और साहित्य में सामाजिक यथार्थ के नाम पर भोड़ा, मादक और उत्तेजक चित्रण हो रहा है, तब ये कहानियाँ जीवन में नई आशा का सन्चार करती हैं। उन शाश्वत जीवन-मूल्यों को प्रस्तुत करती हैं जो कालजयी हैं। जिस प्रकार अंधकार से भरे आकाश में सितारे टिमटिमाकर अंधकार को मिटाने की चेष्टा करते हैं, उसी प्रकार कल्पित की ये कहानियाँ, समाज को प्रेम, मानवता, समाज सेवा, दया और करुणा का संदेश देती हैं।''''कुल मिलाकर इस संग्रह की की कहानियाँ पाठक के मन में चुपचाप वैचारिक बीज बो देती हैं।

डा० तिलकराज गोस्वामी इलाहाबाद

(सुपरिचित कवि एवं कथाकार)

''''स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हमारे समाज में जो परिवर्तन आये है, जीवन-मूल्यों मे जो बदलाव आया है, राष्ट्रीय चरित्र का जो पतन हुआ है, उसको लेखक ने बड़े कुशल ढंग से अपनी इन कथाओं में प्रस्तुत किया है। ये कहानियाँ कल्पित जी की सामाजिक निष्ठा तथा वैचारिक जागरूकता का परिचय देती हैं''''भाषा व शैली मे किसी प्रकार की कृत्रिमता नहीं। चूँकि लेखक कवि भी है, शायद इसी कारण अनेक स्थानों पर भाषा काव्यमयी व अधिक प्रभावपूर्ण हो गयी है। दो-चार कहानियों को छोड़कर शेष सभी कहानियाँ रोचक व पठनीय हैं।

संग्रह की पहली कहानी 'अशरफ की वसीयत आशा के नाम' एक रोचक कथा है जिसमें शुरू से अन्त तक उत्सुकता बनी रहती है। कहानी की नायिका आशा के उच्च चरित्र को बड़े सधे ढंग से प्रस्तुत किया गया है। आशा का पति शारदा प्रसाद जो शक्की सुभाव का है, उसकी प्रस्तुति भी बड़ी स्वाभाविकता है। जीवन मूल्यो की स्थापना के लिए लेखक के मन में जो आकांक्षा मचल रही है, यह कहानी उसकी परिचायक है। 'कहानी अमन अली की' हमारी आज की व्यवस्था पर बहुत गहरी चोट करती है। लेखक ने बड़े कुशल ढंग से धूर्त राजनेता का पर्दाफास किया है। आज के वातावरण में अमन अली जैसे इमानदार आदर्शवादी व्यक्ति को किन-किन खतरों का सामना करना है, वह इस कहानी में दिखाया गया है।''''हर प्रकार से सफल है।''''लेखक की एक सशक्त कहानी है 'लड़ाई' इसमें दिखाया गया है कि किस प्रकार सरमायदार अथवा सत्ताधारी वर्ग कोरे आश्वासनों से या कुछ टुकड़े फेककर शोषित जनता को भरमाते रहते हैं, किन्तु मेरी दृष्टि में संग्रह की सब से सशक्त कहानी 'पिता' है। इस कहानी में बड़े मार्मिक अन्दाज से अपनी पुत्री बिट्टो व पुत्र सतीश के भविष्य के लिए एक पिता परेशान है।''''वह पिता जी सरकारी कर्मचारी है, रेल से कटकर इसलिए आत्महत्या कर लेता है कि मृत्योपरान्त उसके पुत्र का 'कम्पेस्नेट ग्राउण्ड' (क्षतिपूर्ति के आधार) पर उसके स्थान पर नौकरी मिल जाए।''''

'मंसूर का मन्दिर' आज के धार्मिक आडम्बरों पर कहीं गहरे से चोट करते हैं।''''पति-पत्नी सम्बन्धों को लेकर लिखी कहानी 'कायर' भी महत्त्वपूर्ण है।' 'खोया हुआ कल और आदमी का जानवर' मन-प्राणों को छू लेने वाली एक मनोवैज्ञानिक कथा है। वृद्धावस्था में पति अथवा पत्नी का निधन शेष जीवन मे व्यक्ति को कितना सालता है, इसका उल्लेख बड़े मार्मिक ढंग से लेखक ने किया है।'

रामप्रसाद 'विद्यार्थी रावी'; आगरा

पुस्तक मिली''''''' आपकी कलम ने पहले दर्शन में ही आकृष्ट किया, कुछ मोहित सीमा तक। पुस्तकें मेरे पुस्तकालय में चलकर बहुतों के सामने आएँगी। मैं भी उन्हें ध्यान से पढ़ूँगा। लेख हिन्दी कहानियों का कथा शिल्प और उपलब्धियों का प्रश्न (साप्ताहिक हिन्दुस्तान, नई दिल्ली १, मई १९६६) पढ़ लिया है। कहानी साहित्य पर आपकी व्यापक और गहरी पकड़ का कायल हुआ हूँ। नये की तरह नवरंगी चकाचौंध और पुराने की अन्ध-श्रद्धा से मुक्त आपने बहुत ही स्वस्थ दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है।''''अनुभव करता हूँ कि आपका सम्पर्क मुझे पहले ही प्राप्त होना चाहिये था।

[जून १९६६ के एक पत्र का अंश]

आपकी कहानियाँ पढ़कर कल ही पूरी की है। मानव मन की मनोवैज्ञानिक पकड़ आपकी मजबूत और सर्वग्राही है। विशेषकर नारी-मन की; 'अन्दर-बाहर का द्वन्द्व' इसका ज्वलन्त उदाहरण है। 'अशरफ की वसीयत आशा के नाम' सुसंस्कृत भारतीय चरित्र का एक प्रेरक चित्रण है। 'कहानी अमरअली की' हर राजनीतिज्ञ नेता को नेता बनने के आसार प्रकट होते ही पढ़ा देने योग्य है। 'मंसूर का मंदिर' धार्मिक साम्प्रदायिक कटमुल्लापन पर एक मर्मस्पर्शी प्रहार है। 'कायर' में संस्कारगत कुण्ठाओं का मार्मिक विश्लेषण है। उखड़ा हुआ आदमी' मे आज के औसत आदमी की मौन अतृप्ति का यथार्थ चित्रण है। 'ऊपरी आमदनी' मध्य स्तरीय परिवारों की ओछी होड़ की मुखर कहानी है। 'प्यार का प्रतिमान' में प्यार का शालीनतर पक्ष सुन्दर उभारा है। अन्य कहानियाँ भी आप के ललित कथा शिल्प से मण्डित तो है ही। 'सितारे अंधेरे के' रातों में दीखे और दिनों मे भी मानस पटल पर झिलमिलाते सितारों का एक प्रभावी संकलन है।

[जुलाई १९६८ के एक पत्र का अंश]

डा० रामदरश मिश्र, नई दिल्ली

आपकी 'कहानी अमन अली की' शीर्षक कहानी (सारिका मे) पढ़ी थी। आपने बहुत सहज एवं कलात्मक ढंग से आज के टूटते सम्बन्धों स्वार्थों की भाग-दौड और राजनीतिक पक्ष लेकर अमन अली जैसे मूक-दर्शी पात्र को खड़ा किया और उसके मत के द्वारा राजनीति के भ्रष्ट चेहरों को उजागर किया।

कैलाश कल्पित के उपन्यासों पर कुछ मनीषियों के विचार

अमृत लाल नागर, लखनऊ

कल्पित जी का उपन्यास 'युगबोध' मैंने रुचि से पढ़ा। उन्होंने इसे समय की नाड़ी पर हाथ रख कर ही लिखा है और अच्छा लिखा है, बस शिकायत केवल इस बात की ही है कि उसनें भाषण बहुत हो गए, अन्यथा कहानी और भी गठी हुई नजर आती। जो हो, श्री कैलाश कल्पित का यह उपन्यास पढ़ने लायक है। आप ने (प्रकाशक ने) उसे प्रकाशित कर के अच्छा काम किया है, लेखक और प्रकाशक दोनों ही को बधाई देता हूँ। [प्रभात प्रकाशन, दिल्ली को लिखा गया पत्र]

× × × ×

प्रकाशकों ने मुझे 'शुभ्रा' और 'युग बोध' पुस्तके भेज दीं है—तुम्हें शुभाशीर्वाद अर्पित करता हूँ। दोनों किताबें पढ़ गया।

शुभ्रा' के कथा तत्व पर उचित बल दिया गया है और युगबोध में विचार तत्व का बोझ कथा पर अक्सर अनावश्यक रूप से लाद दिया गया है। दोनो किताबे पढ कर पहले प्रभाव रूप में यही बात मेरे मन में आयी।

शुभ्रा में अमला का कैरेक्टर तुमने अच्छा आंका है। बड़े बाप की बेटी एक मध्यवित्त के होनहार युवक को व्याह दी जाती है। अंग्रेजी जमाने से और विशेष रूप से स्वतन्त्रा प्राप्ति के बाद हमारे समाज में यह चलन काफी बढ़ा है। साधारण हैसियत के तरक्की पसन्द लड़के 'बड़ों' के दामाद बनकर ऊँची हैसियत पा जाते है। अनिल इसी टाइप का दामाद है। स्वाभाविक रूप से ही यह अपनी ऊँची हैसियत वाली बीवी की ऊँची सोशल लाइफ के प्रति मजबूरन घुटने टेक देता है। कहानी आगे बढ़ाने के लिए इन दो चरित्रों का चयन तुमने बहुत अच्छा किया है, इसके लिए बधाई स्वीकारो। गर के बेटे की मां बनकर अमला की अपराध भावना का जागना और अपने सद्यःजात 'गर कानूनी' बेटे को त्यागना बहुत स्वाभाविक ढंग से ही आया है। लेकिन इस उपन्यास में शुभ्रा का आना मुझे खासा बेकार और आरोपित-सा लगा। अनिल के होनहार भाई से लिपिस्टिक वाली शुभ्रा का विवाह हो जाना तक तो गनीमत है, गर्भवती हो कर सहसा उसके विधवा हो जाने की कल्पना भी तर्क संगत है लेकिन उसके बाद उसे लेकर अनिल के चरित्र में जो अनावश्यक फिल्मी नाटकीयता तुम ले आये हो, वह बुरा न मानना भाई, मुझे बड़ी भद्दी लगी। इसमें अमला विशेष रूप से अनिल के चरित्र में व्यर्थ 'नटखतब' तुम्हारी कल्पना को दिखाना पड़ा। खैर, अमला के इस करतब को तो मैं किसी हद तक पचा भी गया, लेकिन इसके बहाने से अनिल

का कैरेक्टर तुमने जिस तरह बनावटी बना दिया उसके लिए तुम्हें माफ नहीं करूँगा क्योंकि तुमने एक बहुत अच्छी कहानी उठाकर उसे ख्वाहम ख्वाह बिगाड़ दिया 'शुभ्रा' जिसका नाम तुमने इस किताब को दिया है वह बेमतलब का कैरेक्टर बन गयी।

इस उपन्यास के सम्बन्ध मे अपनी स्पष्ट किन्तु भरपूर स्नेह भरी सर्जनात्मक आलोचना के बावजूद तुम्हारी यह किताब रोचक है। आलोचना इसलिए की कि तुम्हारी रचना प्रक्रिया पर भविष्य के लिए सद्प्रभाव पड़े। मैंने अब तक एक कायदा बराबर निबाहा है, चरित्र के मनोवैज्ञानिक विकास के अनुसार, दो-तीन दृश्यों की कल्पना कर लेता हूँ और फिर विचार कर के उनमें से एक का चुनाव करता हूँ। कल्पना कहीं न कहीं बुद्धि (तर्क) सम्य होनी चाहिये, इससे कल्पना में सौन्दर्य-दृष्टि का विकास होता है।

तुम्हारा कथात्मक प्रबन्ध 'युगबोध' भी पढ़ गया। 'शुभ्रा' में जहाँ एक स्त्री का बहका हुआ स्वातंत्र्य-बोध तुमने दर्शाया है, वहाँ इस कथात्मक प्रबन्ध में तुमने कई नारी चरित्र दर्शाए हैं, यह बात उम्दा है। दीपक वर्मा का चरित्र मुझे निहायत खोखला लगा। वह लेखक की मन: तरंगों (Moods) की कठपुतली मात्र बन गया है, उसका अपना मनोवैज्ञानिक व्यक्तित्व कतई निखार नहीं पा सका। मेरा विनम्र मत यह है कि चरित्र का चुनाव करना तो लेखक के अधिकार की बात होती है, किन्तु बाद में यदि लेखक स्वयं अपने चरित्र की मनोवैज्ञानिकता का अनुसरण करता है तो चरित्र अच्छा बनता है। इसमें भाषणबाजी तुमने बोर करने की हद तक कर गयी है और इस तरह तुमने एक विशाल चित्र फलक (केनवेस) को 'बोनसाई' बना दी है। इस किताब को पढ़ कर जहाँ तक मैं समझा, कि तुमने पूरे जमाने को अपने उपन्यास का नायक बनाना चाहा था, जो बड़े हौसले का काम था। किसी वजह से इस बड़े हौसले को तुम्हें मजबूरन छोटा बनाना पड़ा। यह गलती मैंने स्वयं भी दो-तीन बार की है, हालाँकि भाषण बाजी के बजाय तकनीक दूसरी ले ली, पर यह तरकीब खुद मुझे अच्छी नहीं लगी। मैं यह स्वीकार करता हूँ कि रोटी का साधन भी मात्र लेखन कार्य होने के कारण ही मुझे दो—एक बार ऐसे आत्म-समझौते करने पड़े थे। लेकिन भाई, तुम तो अपनी रोटी-दाल के लिए कहीं मात्र लेखन-कार्य पर ही अवलम्बित नहीं हो, फुर्सत से लिखते, बड़ा उपन्यास लिखते तो तुम्हारा 'युगबोध' निश्चय ही याद रखने लायक रचना बन जाती। उपन्यास की रूहे-अफजा-मिठास में शुद्ध निबन्ध रूपी वैचारिकता की रेत मिला देना अच्छा नहीं होता *[शायद 'शेखर एक जीवनी' की तरह] 'बूँद और समुद्र' के बाद यह अक्ल मैंने पाई और आगे उसका लाभ भी उठाया। केवल

---

* सम्पादकीय टिप्पणी है, नागर जी की नहीं।

'बिखरे तिनके' के समय अपनी आर्थिक मजबूरी के कारण मुझे अपने प्लाट के 'बोनसाई 'बनानी पड़ी, इसका मुझे आज तक दुःख है ।

कल्पना और बुद्धि से खेलने का सुख दरअसल योगी का सुख है, जिसे हम लेखक की 'क्रियेटिव ईगो कहते हैं, वह मेरे लिए अब विश्वात्मा के रूप में दर्शन देती है । राम करें तुम्हारी लेखकीय दीवानगी दिनों दिन परवान चढ़े । खूब यश लाभ करो । सपरिवार सुखी हो । दीर्घायुष्मान होवो ।

'कल्पित' उपनाम से कीर्तिशाली अवश्य बनो पर मेरे लिए तुम कल्पित नही कैलास से ठोस रहो ।

आचार्य जगदीशचन्द्र मिश्र, (सहारनपुर)

कैलाश कल्पित, लिखित उपन्यास शुभ्रा आद्योपान्त पढ़ा कथानक का तारतम्य, घटनाक्रमों की सुसूत्रता, भाषा का प्रवाह, संवादों के चुटीलेपन तथा सूक्ष्मतर चित्त-वृत्तियों के रम्य मनोवैज्ञानिक विश्लेषण ने ऐसी रसात्मकता इस उपन्यास में भर दी है कि पाठक उसे अपने ही इर्द-गिर्द घटने वाली घटनाएँ समझकर उसमें डूबता चला जाता है । पात्रों में वह अपनी ही प्रतिकृति देखने लगता है और उपन्यास के लिये यह सर्वाधिक श्रेष्ठ गुण है ।

शुभ्रा में विवश प्रेमिका की, जो पर-स्त्री बन गई है, मनोदशा का निखार बढ-चढ़कर आया है । अविनाश हताश प्रेमी का जीता-जागता रूप है । अनिल सन्ताप और पश्चाताप के हिन्डोलों में झूलता हुआ सर्वमान्य व्यक्ति है । सुरेखा एवं अमला सान्त्वना और सुहृदयता की तस्वीर हैं । कहने का तात्पर्य यह है कि कल्पित की लेखनी ने पात्रों के साधारणीकरण में सफलता को छू लिया है । कथावस्तु भी उत्सुकता का जामा पहिने हुये आदि से अन्त तक पाठक को साथ लिए चलती है और फलादेश तक ले जाती है । सत्य तो यह है कि गूढ़ातिगूढ़ मानवीय चित्त-वृत्तियों का मानवीकरण अत्यन्त सफलता पूर्वक इस उपन्यास में हुआ, जो कल्पित की उपन्यास कला की श्रेष्ठता का परिचायक है ।

डा० रामकुमारी मिश्र, एम० ए०, डी० फिल्, डी० लिट०, (इलाहाबाद)

'शुभ्रा' श्री कैलाश कल्पित का एक मौलिक उपन्यास है । इस उपन्यास के माध्यम से लेखक ने मनुष्य को युग विशेष की परिस्थितियों, आवश्यकताओं एवं सामाजिक विषमताओं के बीच रखकर उसके व्यक्तिगत मनोवेगों एवं स्नायविक दुर्बलताओं का सहज एवं स्वाभाविक चित्रण किया है । प्रस्तुत उपन्यास का नायक अनिल एक बैंक मैनेजर है । अमला उसकी धर्म-पत्नी है, जो सुन्दर एवं सुशिक्षित होने के साथ ही साथ स्वतन्त्र प्रवृत्तियों वाली और विलासप्रिय है । उसका स्वयं का रूपदर्प

तथा उसके पति की कार्य-व्यस्तता उसके जीवन-पथ को मोड़ने में सक्षम होते हैं। यहीं से कथा नया मोड़ लेती है। पत्नी के प्रति अन्यमनस्कता का यह भाव जहाँ एक ओर अमला के जीवन-पथ में बाधक है, वहीं उससे कहीं अधिक अनिल का स्वयं का जीवन छिन्न-भिन्न करता दिखाई देता है। लाभ उठाते हैं समाज की दृष्टि में ऊँचे गिने जाने वाले मिस्टर गिडवानी और मि० अग्रवाल जैसे दम्भी व्यक्ति जिनकी उपमा हाथी-दाँत से दी जा सकती है। अमला निश्चित ही आज के युग और परिस्थितियों के अनुकूल सँवरी हुई महिला है, जिसे प्रत्यक्ष रूप मे तो समाज आदर देता है, किन्तु परोक्ष रूप में उसकी अवहेलना करता है, समाज की यह दोहरी दृष्टि ही ऐसी नारियों को पथ-भ्रष्ट बनने के लिए बाध्य करती है, स्वभाव से उन्मुक्त होते हुए भी अमला छिछोरी नहीं है। वही दूसरी ओर समाज के अभिशाप-स्वरूप मि० अग्रवाल और मि० गिडवानी जैसे दो महारथियों का सामना करने से वह पीछे नहीं मुड़ती। यही नहीं, उनके पुरुषत्व को नीचा भी दिखाती है।

उपन्यास पढने पर आरम्भ में अमला के नारी जीवन की चारित्रिक दुर्बलताओ के प्रति रोष प्रकट होता है। किन्तु अन्त में जब वह बारम्बार पुरुषों को पछाड़ती हुई दिखाई देती है तो स्वभावतः प्रशंसा की पात्री बन जाती है।

अनिल निश्चय ही एक चरित्रवान, परिश्रमी पुरुष है। अमला के चले जाने पर उसकी खोज एवं उसके नवजात शिशु के पालन-पोषण की चिन्ता, पत्नी के प्रति प्रेम की गहनता, भाई के प्रति कर्त्तव्य-परायणता, शुभ्रा के प्रति अग्रज का भाव, सुरेखा जैसी नर्स के प्रति मित्रता का भाव तथा अपने अनुज स्वर्गीय दिनेश के पुत्र कुलदीप के प्रति अगाध पुत्र-स्नेह की भावना, उसके पूर्ण मानव होने में कोई कसर नही रखती। अनिल के जीवन के सभी पक्ष दृढ़ एवं दृढ़तर दिखाई देने पर भी उसकी स्वयं की स्नायविक दुर्बलता उसके सम्पूर्ण जीवन को कटु एव विपाक्त बना देती है। यहाँ पर अनिल स्वतः ही मनवेगों और परिस्थितियो का दास बन जाता है। अमला जैसी सुन्दर पत्नी को खो कर उसकी-सी रूप-राशि के लिए लालायित रहना उसकी दुर्बलता नहीं तो और क्या हो सकती है? यह सच है कि मनुष्य की दमित भावनाये एक न एक दिन अवश्य उभड़ती हैं और मनुष्य तुष्टि में ही सन्तोष पाता है, किन्तु अपने ही छोटे भाई की विधवा पत्नी शुभ्रा जैसी पवित्र नारी से अनिल का अनुचित व्यवहार अन्यायपूर्ण लगता है। होश आने पर अनिल पछताता है और स्वयं जड़ बन जाता है, और समाज की दृष्टि में वह अपने को पतित होता देखता है।

शुभ्रा को यदि उपन्यास का मेरुदंड कहें तो कोई अत्युक्ति न होगी। 'यथा नाम तथा गुण' के अनुसार इस नारी पात्र के चारों ओर ही सभी पात्र गुम्फित से लगते हैं। वह मात्र शारीरिक सौंदर्य में ही शुभ्र नहीं अपितु अपने समस्त आचरणो में भी वैसी ही शुभ्र है। वह विधवा है, किन्तु इतनी दृढ़, स्वयंपूर्ण है कि समस्त विषम

परिस्थितियाँ उसके चरण चूमती हैं, उसकी दृढ़ता के आगे वे अपने प्रभाव तो क्या, छींटे तक डालने में असमर्थ सिद्ध होती हैं। अपने ही जेठ अनिल द्वारा कुसमय में आलिंगित होने से उसकी चारित्रिक दृढ़ता को गहरी ठेस पहुँचती है। अन्ततः वह अपने सौन्दर्य को विकृत करके समाप्त कर देना ही श्रेयस्कर समझती है। भारतीय आदर्शों में पाली हुई एक आदर्श नारी के लिए यही अपेक्षित भी था।

उपन्यास की 'सुरेखा' नामक नर्स भी एक पूर्ण नारी है। अपनी कर्त्तव्य-परायणता एवं परिश्रम से जहाँ वह अनिल को नया जीवन-दान देती है, वहीं उससे वह प्रतिदान रूप में कुछ भी न ग्रहण कर और अनिल को उसके घर भेज कर अपने त्यागपूर्ण जीवन का प्रमाण उपस्थित करती है।

पूरा उपन्यास मनुष्य के अन्तर्द्वन्द्वों से ओत-प्रोत है। लेखक ने मानव आदर्शों के साथ ही उनकी मानसिक दुर्बलताओं का भी चित्रण पात्रों के अनुरूप ही किया है।

उपन्यास की भाषा अत्यन्त स्वाभाविक है और शैली प्रभावपूर्ण।

समाज की नस पकड़ने में सक्षम श्री कैलाश जी बधाई के पात्र हैं। विश्वास है कि 'शुभ्रा' पाठकों को कुछ सोचने के लिए प्रेरित करेगा।

डा० रामप्रसाद मिश्र, दिल्ली

.....'युगबोध' हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि एवं उपन्यासकार श्री कैलाश कल्पित का सद्यः प्रकाशित सामाजिक उपन्यास है। नायक के जीवन-संग्राम के माध्यम से कुशल उपन्यासकार ने समाज के प्रत्येक स्तर पर जमे भ्रष्टाचार का बहुत ही प्रभावी एवं रोचक चित्रण किया है। रेलवे का दफ्तर हो या हलवाई की दुकान, राजनीतिज्ञ हो या पत्रकार, अफसर हो या बाबू सब तरफ उपन्यासकार की अनुभवभरी नजर उठी है। युगबोध कोरा उपन्यास न हो कर युग इतिहास भी है।

यद्यपि उपन्यासकार श्री कैलाश कल्पित न तो प्रेमचंद की तरह आदर्शोन्मुख यथार्थवादी है और न जैनेन्द्र की तरह यथार्थोन्मुख-आदर्शवादी तथापि वे आदर्श की अवहेलना की कसम भी नहीं खा बैठे। उनका यथार्थ स्वस्थ्य यथार्थ है, रुग्ण यथार्थ नहीं। उनका आदर्श नूतन आदर्श है, पारंपरिक नहीं। वे न कोरे आदर्श लोक के चितेरे है न कोरे यथार्थ लोक के, वे जीवन के चितेरे है जो आदर्श एवं यथार्थ दोनों को आत्मसात करना चलता है। वे एक स्वस्थ कलाकार है। उपन्यास बहुत रोचक है जो पाठक को बंदी बना लेता है। इस दृष्टि से 'चारुचित्रा' क्लिष्ट लग सकता है, किन्तु अपने स्फीत कलालोक के कारण वह कलाकृति बन गया है, जबकि 'युगबोध' जीवन-कृति है—जीवन से निःसृत, जीवन से पालित, जीवन से पोषित एवं जीवन को पोषित करने की साधना से प्रेरित। पुस्तक का प्रस्तुतीकरण प्रशस्य है, पुस्तक पठनीय ही नहीं संग्रहणीय भी है।

'चारु चित्रा' हिन्दी-साहित्य का एक ऐसा विशिष्ट सामाजिक उपन्यास है, जिसमें जीवंत एवं रोचक कथानक के साथ संगीत चित्रकला, नृत्य प्रभृति ललित कलाओं को प्रशस्य रूप से सम्पृक्त किया गया है। इस उपन्यास के कारण सामाजिक, ऐतिहासिक, आंचलिक, मनोवैज्ञानिक, समस्या मूलक प्रभृति उपन्यास-वर्गों में 'कला-परक' वर्ग जोड़ना समीचीन होगा, क्योंकि 'कलापरक' उपन्यास कहने पर 'चारुचित्रा' का परिचय 'सामाजिक उपन्यास' कहने की तुलना में अधिक सरलता से हो जायगा। उपन्यास का सांस्कृतिक धरातल उच्चकोटि का है जो महान् भारत का तर्क-संगत परिचय कराता हुआ प्रेरणा प्रदान करता है। जीवन के यथार्थ का सम्मान करते हुए भी उपन्यासकार श्री कैलाश कल्पित ललित-कला-बोध एवं इतिहासबोध अनुस्यूत करने मे जितने सफल हुए हैं, उतना कोई अन्य उपन्यासकार नहीं। 'चारुचित्रा' को हिन्दी उपन्यासों की प्रथम पंक्ति में प्रतिष्ठा प्राप्त होनी चाहिए।

'स्वराज जिन्दाबाद' (उपन्यास) में भारत की चतुर्मुखी भ्रष्टाचारमयी परिस्थिति के बिन्दुओं का प्रासंगिक एवं जातिप्रथा की विषाक्त स्थिति का प्रमुख चित्रण प्राप्त होता है। कल्पित जी अपनी कृतियों मे कोरा मनोरंजन नहीं रखते, कोई-न-कोई सामाजिक उद्देश्य चित्रित करते हैं। प्रस्तुत उपन्यास का एक उद्देश्य अन्तर्जातीय विवाह के समर्थन एवं प्रतिपादन में निहित है। दो समानान्तर कथानक अनेक भ्रष्टाचार बिन्दुओं को समेटते हुए गतिशील होते है। दोनों नायक-नायिका क्रमश: दीपक वर्मा (जो वास्तव में ब्राह्मण है) एवं वंदना (जो श्रीवास्तव कायस्थ है) तथा दिवाकर (जो उत्तर प्रदेश का ठाकुर है, किन्तु सिंह नहीं लिखता) एवं जनक नन्दनी (जो बिहार की खटिक है) अन्तर्जातीय विवाह करते है, यही नही सब दूसरा विवाह भी करते हैं! दीपक एवं वंदना दोनों पत्रकार हैं, जनकनन्दिनी भी। वंदना प्रदर्शन-सुन्दरी (सेल्स गर्ल) है। उपन्यास मे प्रदर्शन-सुन्दरियों के शोषण एवं पत्रकारिता पर राजनीति के हस्तक्षेप के चित्रण अच्छे हुए हैं। वस्तुत: 'स्वराज जिन्दाबाद' सामाजिक उपन्यास में भी समस्या प्रधान उपन्यास है, प्रधान तत्व है। युग के विराट भ्रष्टाचार के अन्तर्गत अन्तर्जातीय-विवाह का चित्रण एवं प्रतिपादन जिसमें युग-सजग एवं जागरूक उपन्यासकार सफल सिद्ध होता है।

कवयित्री सुमित्रा कुमारी सिनहा, (लखनऊ)

कविता की क्यारियों में विचरण करते-करते कैलाश कल्पित ऐसा काव्यात्मक उपन्यास प्रस्तुत कर देंगे, मैंने तो सोचा ही नहीं था। कथा की सूत्रबद्धता और भाषा के लालित्य के साथ ही पात्रों के वैचित्र्य का जो इन्द्रधनुषी स्वरूप इस उपन्यास मे उभरा है वह आज के लेखन में दुर्लभ वस्तु है। चारुचित्रा और निकष के चरित्र, साहित्य की कसौटी पर आदर्श ही नहीं सामाजिक परिवेश मे प्रेरणामूलक भी हैं। २८-३-८६ ऐसे उपन्यास लिखने की जो तैयारी लेखक ने की होगी, वह उपन्यास के पढ़ने

: बाद ही समझी जा सकती है। उपन्यास की रोचकता और हृदयग्राहिता ऐसी कि एक बार हाथ में पुस्तक हो तो छोड़ने से पूर्व समाप्त कर देने को बाध्य होना पड़े। मेरी इस लेखक को लेखनी के रंग, रस, रूप की त्रिधारा के चिरन्तन बहते रहने की कामना सहित, बधाई।

कवयित्री सकुन्तला सिरोठिया, (इलाहाबाद)

जीवन की सम्पूर्ण व्यस्तता, काव्य सृजन के साथ अध्ययन और अध्यापन में ही रही, अतः मैंने बहुत से उपन्यास भी पढ़े। चूँकि चित्रकला से भी अपना लगाव रहा इसलिए ऐसे उपन्यास के पढ़ने की लालसा जागना स्वाभाविक हो गया जिसकी नायिका एक चितेरी है और नायक साहित्य का शोधार्थी अध्ययन के स्तर पर नायक 'निकष' और भावना के स्तर पर नायिका 'चारुचित्रा' अपने-अपने विषय मे जिन ऊँचाइयों पर पहुँचते हैं, चारित्रिक स्तर पर भी वे दोनों उन क्षितिजो को छूते हैं जो समाज की वांछित अभिलाषा है। कैलाश कल्पित साहित्य के व्यक्ति तो हैं ही, किन्तु उनकी पैठ संगीत, इतिहास और चित्रकला में जितनी गहराई के साथ इस उपन्यास में दृष्टिगत है वह निश्चित रूप से उनकी अध्ययनशीलता का प्रतीक है। इस सफल सृजन के लिए बधाई।

ड'० विष्णु पंकज, (इन्द्रपुरी, जयपुर)

श्री कैलाश कल्पित द्वारा लिखित उपन्यास चारुचित्रा' एक उच्च स्तरीय विचारोत्तेजक और रोचक कृति है। रचना का कथानक-चित्रण, पात्र-निरूपण वैचारिकता और औपन्यासिक बुनावट सभी दृष्टियों से लेखक ने इसे एक अविस्मरणीय रचना बना दिया है। इस उपन्यास की नायिका चारुचित्रा सहज ही मृगनयनी और चित्रलेखा जैसे उपन्यासों की नायिकाओं की भाँति एक चिरस्मरणीय-पात्र के रूप मे सामने आती है। हिन्दी के प्रमुख उपन्यासकार के रूप में श्री कल्पित को उल्लेखनीय स्थान दिलाने में मात्र यह उपन्यास सक्षम है। हिन्दी ही नहीं, बंगला और गुजराती के प्रमुख उपन्यासों की टक्कर में इस उपन्यास को सगर्व रखा जा सा सकता है।

डा० कृष्ण मोहन सक्सेना, (लखनऊ)

चारुचित्र में चित्रकला, संगीत और साहित्य का जैसा अद्भुत संगम और विभिन्न पात्रों का इन्द्रधनुषी रूप दिखाई दिया वैसा इधर जो कुछ चर्चित उपन्यास हुए उनमें भी नहीं दिखाई देता। किसी को यदि चरित्र की ऊँचाइयाँ, और उनके मनोवैज्ञानिक विश्लेषण का उत्कर्ष देखना हो तो वह कैलाश कल्पित का उपन्यास 'चारुचित्रा 'अवश्य पढे।

निर्देशक कनक मिश्र

सदस्य, इण्डियन फेडरेशन आफ् डायरेक्टर्स एसोसिवेशन (बम्बई)

आपका उपन्यास 'चारु चित्रा' पढ़कर एक अनोखे आनन्द की अनुभूति हुई। आपके असीम ज्ञान के उजाले में कुछ देर विचरण करने का मौका मिला। आपने इस उपन्यास में विभिन्न कलाओं के अध्ययनात्मक अंशों का उपयोग बड़े सुरुचिपूर्ण ढंग से किया है। गहरी अन्तर्दृष्टि व कलाकार-पात्रों की भावनाओं का चित्रण बहुत ही सुन्दर और यथार्थवादी है। आपकी इतनी गहरी पैठ व कलात्मक विषयों की जानकारी ने मुझे चकित कर दिया है। नृत्य, संगीत, चित्रकला व वारांगनाओं की भावनाओं का चित्र भी बड़ा सही था। मनोविज्ञान का भी बड़े सही ढंग से उपयोग किया गया है।

बन्धुवर कोई कुछ भी कहे, मुझे तो आपके उपन्यास के पठन में बड़ा मजा आया। चारुचित्रा से उसके लेखक की सशक्त कलम का परिचय मिला, वाह !

पं० महेश नारायण शुक्ल

पूर्व मुख्य न्यायाधीश उ० प्र०

Reading 'CHARUCHITRA' is pleasurable experience. It reminds me of Oscar wilde's famous novel 'The Picture of Dorian Gray', particularly by the author's amazing—though amateurish fund of knowledge of the different branches of arts. It is a neat, elegant and immaculate work, rather pretty and seductive in its elusive charm. There are some books which have become immortal by their 'finale' e. g. wauthering Heights. The concluding passage of 'CHARUCHITRA' is also exquisite and memorable.

क्या आप चाहते हैं आपके बच्चे आदर्श नागरिक बनें ? उन्हें पाठ्य पुस्तकों के अतिरिक्त बाल एवं किशोरोपयोगी पुस्तकें व पत्रिकाएँ लाकर दें।

एक विश्लेषणात्मक दृष्टि

विजय कुमार श्रीवास्तव 'विकल'

विश्व में पत्र-साहित्य को जो ऊँचा सोपन प्रदान किया गया है, उसके समक्ष हिन्दी में पत्र साहित्य बहुत कम प्रकाशित हुआ है। गत वर्षों में अधिकतर दिवंगत साहित्यकारों अथवा राजनीतिज्ञों के पत्र प्रकाशित हुए हैं। जीवित महानुभावों के पत्रों को प्रकाश में लाने की पहली कठिनाई तो यह है कि समकालीन-गण समकालीनों के पत्रों को कोई महत्व नहीं देते और दो-चार दिन अपनी टेबिल पर रख कर उसे कूड़े की टोकरी में फेंक देते हैं, दूसरा कारण यह भी है कि हमारा समाज सामान्य ललित साहित्य ही जब क्रय कर नहीं पढ़ता तो फिर पत्र-साहित्य का आनन्द लेना तो एक सोपान और ऊँचे मानसिक-स्तर के व्यक्ति की बात है। गत दो दशकों में जिन समकालीन जीवित साहित्यकारों के पत्र-ग्रन्थों की चर्चा हुई है संदर्भित पत्र-ग्रन्थ 'सृजन-पथ के पत्र' उसी श्रेणी में आता है। इसमें ३९४ पत्र साहित्यकारों अथवा सम्पादक साहित्यकारों से सम्बद्ध हैं, २५ पत्र राजनीतिज्ञों से सम्बद्ध हैं, ५३ पत्र साहित्य के पाठकों के हैं तथा ३ पत्र अन्य हैं, अर्थात् कुल ४७५ पत्र प्रकाशित हैं। इस पत्र ग्रन्थ में इसके सम्पादक / लेखक श्री कैलाश कल्पित को जहाँ समकालीन अनेकानेक सुपरिचित साहित्यकारों के पत्र प्रस्तुत करने की सफलता मिली है वहीं उन्हें अपनी पीढ़ी से वरिष्ठ और अति प्रतिष्ठित साहित्यकारों के भी अनेक पत्र प्राप्त कर इस पत्र-ग्रन्थ में सम्मिलित करने की सफलता मिली है। इन महानुभावों में से कुछ के नाम यूँ हैं—डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी, डा० धीरेन्द्र वर्मा, डा० बाबूराम सक्सेना, सियाराम शरण गुप्त, शान्तिप्रिय द्विवेदी, राहुल सांकृत्यायन, डा० रामकुमार वर्मा, डा० रामविलास शर्मा, डा० हरिवंश राय 'बच्चन', क्षेमचन्द्र सुमन के साथ ही अमृतलाल नागर, आचार्य जगदीश चन्द्र मिश्र, ठाकुर श्रीनाथ सिंह, दुलारे लाल भार्गव, पद्मकान्त मालवीय नागार्जुन, अमृत राय डा० प्रभाकर माचवे, विष्णु प्रभाकर, भीष्म सहानी डा० रणवीर रांग्रा तथा राही मासूम रजा आदि। कल्पित जी की आयू के दो चार वर्ष आगे या पीछे जीवित साहित्यकारों में विशेष उल्लेखनीय हैं—डा० रामदरश मिश्र, डा० जगदीश गुप्त, डा० राम प्रसाद मिश्र, डा० जीवन प्रकाश जोशी, अमरकान्त, मनोहर श्याम जोशी, कमलेश्वर, से० रा० शास्त्री रमाकान्त श्रीवास्तव, डा० कमल किशोर गोयनका, डा० कृष्ण मोहन डा० जीवन शुक्ल, ठाकुर प्रसाद सिंह, हिमांशु जोशी, डा० राजेन्द्र मिश्र तथा प्रदीप सिंह आदि

इसी प्रकार राजनीतिज्ञों के पत्रों में विशेष उल्लेखनीय हैं अटल बिहारी बाजपेयी, मुरली मनोहर जोशी, अशोक सिंहल, केसरी नाथ त्रिपाठी और हेमवती नन्दन बहुगुणा। कल्पित जी ने अपनी ओर से जिन महत्वपूर्ण राजनीतिज्ञों को पत्र लिखे उनमें हैं—इन्दिरा गांधी, राजीव गांधी, पं० कमलापति त्रिपाठी, कल्याण सिंह, बनारसी दास, मधु दण्डवते आदि।

साहित्यकारों के पत्रों में समकालीन लेखन पर विचार विमर्श है, विशेष कर कल्पित जी के सृजन के इत्तवृत्त में, साथ ही अनेक पत्रों से समकालीन रचनाकारों की व्यावहारिक प्रवृत्ति भी मिलती है। कुछ पत्रों में शोध संदर्भ भी हैं। कविता के भविष्य पर विचार है, साहित्य को हाशिये से उठाकर केन्द्रीय धारा में लाने का चिन्तन भी है और उपन्यास एवं कहानी के परिप्रेक्ष्य में सामाजिक विडम्बनाओं की चर्चा है। राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रतिष्ठापन के प्रश्न को भी यहाँ वहाँ महत्ता के साथ उठाया गया है, साथही उर्दू को दूसरी राज भाषा बनाने का विरोध भी है। एक पत्र प्रभुदत्त ब्रह्मचारी को लिखा गया है जिसमें साम्यवादी झण्डे को उठाये राजेन्द्र यादव के लेख का उल्लेख हैं। यादव जी ने रामायण के पात्रों पर अनर्गल आरोप लगाये हैं। एक अन्य पत्र में, जो इस युग के लगभग सभी महत्वपूर्ण राजनीतिज्ञों व सम्पादकों को भेजा गया है अयोध्या के मन्दिर निर्माण पर दैनिक जागरण के सम्पादकीय का समर्थन है। इस पत्र के उत्तर में सिवा अशोक सिंहल के सभी महानुभाव मौन हैं, शायद इसलिए कि इस राष्ट्रीय मुद्दे का समाधान देकर उनके समर्थन से कल्पित जी कोई महत्त्वपूर्ण व्यक्ति न बन जाएँ।

इन प्रकाशित पत्रों से एक तथ्य यह भी निकलता है कि श्री कैलाश कल्पित जहाँ कुछ अभिजातीय प्रवृत्ति रखने वाले अपने से वयस्क साहित्यकारों से अपने साहित्यिक जीवन के प्रथम सोपानों पर उपेक्षित हुए हैं वहीं साम्यवादी विचारधारा से जुड़े रचनाकार, विशेष रूप से कहानीकार उनके पत्रों के उत्तर देने तक से परहेज करते रहे हैं। इस प्रकार के संघर्षों से कल्पित जी क्षुब्ध अथवा विचलित नहीं होते, बल्कि अपने अस्तित्व पर पूर्ण आस्था रखकर उनके व्यवहारों को जैसा का तैसा सामने रख देते हैं। उन्होंने श्रमिकों अथवा समाज के कमजोर वर्ग के संघर्ष का किसी भी साम्यवादी लेखक से कम चित्रण अपनी कहानियों में नहीं किया है, बल्कि अपनी कविताओं में तो और भी प्रखर रूप से उनके पक्ष को रखा है, किन्तु वे साम्यवादी कैम्प के सदस्य नहीं बने। 'राख और आग' तथा 'काला साहब गोरी मेम' की कहानियाँ या फिर 'अनुभूतियों की अजन्ता', 'इन्द्र बेला और नागफनी' और 'आग लगा दो' जैसे कविता संग्रहों की कविताओं को देखा जा सकता है। उन्होंने साम्यवादी कैम्प

कुँवर बहादुर अस्थाना महात्मा गाँधी मार्ग
पूर्व मुख्य न्यायमूर्ति, उ० प्र० इलाहाबाद—२-१.-६४

आपकी समिति ने श्री कैलाश कल्पित की ७०वीं वर्षगाँठ मनाने की सभा संयोजित की है। हम श्री कैलाश कल्पित को मुबारकबाद देते हैं और उनका अभिनन्दन करते हैं।

श्री कल्पित को और जीवन मिले। यह हम लोगों का सौभाग्य होगा कि वे हिन्दी की सेवा और अधिक वर्षों तक कर सकें।

कुँवर बहादुर अस्थाना

श्री राम विलास गुप्त 'विलास'
सदस्य, अभिनन्दन समिति
इलाहाबाद

[पृष्ठ ५६ का शेष]

में अपनी रजिस्ट्री नहीं कराई और दुर्भाग्य से आलोचकों की भी पक्षधरता की नीति रही, इसीलिए वे इतने चर्चित नहीं हो पाये जितना उन्हें हो जाना चाहिये था।

हाँ मैं 'सृजन-पथ के पत्र' के सम्बन्ध में कुछ कह रहा था। आधुनिक पत्र-साहित्य में मेरे विचार से यह पत्र-ग्रन्थ अपने ढंग का प्रथम संग्रह है जिसमें एक साथ २२० महानुभावों के ४७५ पत्र (पाठकों के पत्र सहित) प्रकाशित हैं। वस्तुतः यह एक नये प्रकार की डायरेक्ट्री बन गया है। अधिकतर लेखकों के पते सहित उनके हस्ताक्षर भी दिये गये हैं जो अपने आप में एक उपलब्धि बनते हैं। ऐसे ग्रन्थों की प्रस्तुति में श्रम, समय और लम्बी योजना का समन्वय आवश्यक होता है। आफसेट की छपाई से पुस्तक की प्रस्तुति में चार चाँद लग गये हैं।

आशा है इसका साहित्यिक मूल्यांक होगा और इस ग्रन्थ की महत्ता दिन पर दिन बढ़ती जायगी।

१२५८ बी, करेली, इलाहाबाद

७०वीं वर्षगाँठ पर

मेरे मित्र कैलाश जी

डा० शिव गोपाल मिश्र

२५, अशोक नगर, इलाहाबाद—१

कैलाश जी मुझसे आयु में बड़े हैं किन्तु वे मेरे साथ मित्रवत् व्यवहार करते रहे हैं। मेरा उनसे परिचय १९४९ में हुआ। उस समय मैं विश्वविद्यालय में अध्ययन कर रहा था। परिचय का माध्यम था उनके द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित पत्रिका 'कल्पना'। उन्होंने मेरी कुछ रचनाएँ प्रकाशित की थीं। बाद में हम दोनों का मिलन-स्थल स्वर्गीय पं० सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' के यहाँ दारागंज में होता था।

कैलाश जी रेलवे में कार्य करते हुए भी हिन्दी के प्रति उन्मुख थे। मूलतः वे कहानी-कथा में रुचि रखते थे और लेखन भी करते थे किन्तु कविता के प्रति भी उनका रुझान था। शायद निराला जी के प्रति आकर्षण का मूल कारण कविता में उन्मुक्तता को रूपायित करने के ही फलस्वरूप था।

कैलाश जी साहित्यिक गोष्ठियों में जाने और अपनी रचनाओं को सुनाने में कोई संकोच नहीं करते थे। वे अपनी डायरी से कविताएँ सुनाते। स्वर अच्छा न होने पर भी और उर्दू का लहजा होने पर भी वे अपनी रचना को प्रस्तुत करते। धीरे-धीरे उनकी कविताएँ प्रौढ़ बनती रहीं और अब वे सिद्धहस्त कवि—नई कविता के कवि हैं।

कैलाश जी मुझे जन्मजात कहानीकार प्रतीत होते हैं। वे अधिकांश साहित्यिक पत्र-पत्रिकाएँ मँगाकर पढ़ते, अपनी रचनाएँ भेजते और प्रकाशित हो जाने पर मुझे बताते। उनकी कहानियों में मध्यम वर्ग की विशेषतया शहरी जीवन की झाँकी देखने को मिलती है।

बाद में कल्पित जी ने उपन्यास भी लिखे, उन्होंने अपनी सारी कृतियाँ समय-समय पर मुझे भेंट की और उनके विषय में मैं यथा-मति अपने विचार प्रकट करता रहा।

कैलाश जी यद्यपि अपने नाम के साथ 'कल्पित' उपनाम का प्रयोग करते किन्तु मैं उन्हें कैलाश जी ही कहता। उनकी कहानी—उपन्यास विधा से प्रभावित होकर मैं उन्हें 'दूसरा प्रेमचन्द' कहता हूँ।

कैलाश जी प्रारम्भ से प्रयाग तथा अन्यत्र के मूर्धन्य साहित्यकारों के इन्टरव्यू लेने में काफी श्रम करते रहे हैं। महिला साहित्यकारों के इण्टरव्यु से सम्बद्ध उन्होंने एक पुस्तक प्रकाशित की तो वह अनूठी थी। बाद में निराला, राहुल, रामकुमार वर्मा आदि के इण्टरव्यू भी उन्होंने पुस्तक रूप में प्रकाशित किये।

कैलाश जी प्रारम्भ से मुद्रण प्रकाशन में पटु रहे हैं अतः उन्हें अपनी कृतियों के प्रकाशन में कठिनाई नहीं हुई। बाद में उनकी ख्याति से आकृष्ट हो दिल्ली के प्रकाशकों ने भी उनकी कृतियाँ प्रकाशित कीं।

रेलवे के सेवाकार्य से अवकाश प्राप्त करने के बाद कैलाश जी और भी सक्रिय रहे हैं। उन्होंने हिन्दी के प्रचार-प्रसार में भी हाथ बटाया है। इधर काफी अवधि तक रुग्ण भी रहे हैं किन्तु उनके उत्साह में कोई कमी नहीं आई। उनका बोलने का लहजा, उनका आत्मविश्वास, उनकी साहित्य के प्रति जिज्ञासा एवं न बुझने वाली प्यास उन्हें आन्दोलित करती रहती है।

वे अत्यन्त मिलनसार तथा हृदय के निर्मल साहित्यकार हैं। माँ भारती को उनसे जो कुछ प्राप्त हुआ है वह अमूल्य है। आने वाली पीढ़ी कैलाश जी को सदैव स्मरण करेगी।

मैं कैलाश जी को उनकी ७०वीं वर्षगाँठ पर मित्र के रूप में हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित कर रहा हूँ। वे दीर्घायु हों, यही अभिलाषा है। □

सृजन-पथ के पत्र : कुछ प्रेषित कुछ प्राप्त

कुछ और सम्मतियाँ

डा० जीवन प्रकाश जोशी, दिल्ली

आपकी पुस्तक "सृजन-पथ के पत्र : कुछ प्रेषित कुछ प्राप्त" प्राप्त हुई। सन् १९८४ में प्रकाशित मैंने पहली बार 'अंचल पत्रों में' पुस्तक में अंचल जी के पत्रों के साथ अपने पत्र भी रक्खे। यह परंपरा अब आपने और बढ़िया तरीके से आगे बढ़ाई है। आपने अपनी पुस्तक में २२० से कुछ अधिक माने जाने और कुछ महान (भी) लोगों के पत्रों को शामिल कर पत्र-लेखन की विविध वर्णीय छटा विकीर्ण की है। वस्तुत: आपकी यह पुस्तक हिन्दी पत्र-साहित्य की एक ऊँची ऐतिहासिक उपलब्धि है।

पुस्तक में पत्रों के द्वारा न जाने कितने महत्वपूर्ण मुद्दे तथा तथ्य व्यक्त हो गये हैं। कुछ समर्थ-सम्पन्न सृजेताओं के स्वभाव व संस्कार कटुता-प्रियता भद्रता-अभद्रता का लेखा-जोखा लिये आपकी पुस्तक में आपके कुछ पत्र, जो लेखा-जोखा आगे कहीं कभी पाया नहीं जा सकता, उसे उजागर कर गये हैं और आपके पत्रों में आपका जो सरल-शिष्ट-सहज स्वभाव-व्यवहार एवं अमर अटूट स्वाभिमान प्रकट हुआ है, वह वस्तुत: प्रणम्य है।

कैलाश जी इस पुस्तक के द्वारा आपने अपने को स्मरणीय एवं प्रणम्य बना दिया।

डा० राम प्रसाद मिश्र दिल्ली

'सृजन-पथ के पत्र : कुछ प्रेषित कुछ प्राप्त' हिन्दी के पत्र-साहित्य के पथ पर मील का एक पत्थर है जिसे विधा के इतिहास में तो अविस्मरणीय गौरव प्राप्त होगा ही, जिससे कम से कम चालीस वर्षों के साहित्य का अंतरंग परिचय भी प्राप्त होगा। दो-सौ बीस विविध विधाकार साहित्यकारों, राजनीतिज्ञों' पत्रकारों एवं प्रबुद्ध पाठकों को प्रेषित तथा उनसे प्राप्त सहस्त्राधिक पत्रों का यह विराट संकलन सामान्यत: साहित्य की प्रवृत्तियों विशेषत: श्री कैलाश कल्पित के स्फीत सृजन (जो कविता, कहानी, उपन्यास, भेंट वार्ता या साक्षात्कार, पत्र प्रभृति विधाओं तक प्रसरित है) से प्रशस्य परिचय कराने में सक्षम सिद्ध हुआ है।

स्वातंत्र्योत्तर साहित्य अप्रतिबद्ध रहने में झिझकता रहा है। कारण ! लाभ ! सीधे या तिरछे सरकार या अमेरिका या अभी 'कल' तक के सोवियत संघ या चीन या पाकिस्तान या अन्य देश से प्रतिबद्धता नाम दाम-काम बनाने का माध्यम रहा है। ""जो साम्यवादी या व्यक्तिवादी खेमों में

नहीं घुसा अर्थात् सीमा या संकीर्णता के वरण में हिचका-झिझका, वह साहित्य से बाहर ! भारतीयता की हत्या साहित्यकार का गौरव ! परकीयता की दासता रचना की गरिमा ! साहित्येतिहास के ये सत्य कब तक कैद में रह पायेंगे ? उत्तर भविष्य पर, किन्तु इनमें से एक भारतीयवादी की उपेक्षा—इस पत्र संकलन में विवृत हुई है। साधक साहित्यकारों से लेकर तिकड़मी मसिजीवियों तक के पत्र साहित्य के अंतरंग सत्य का उद्‌घाटन करते हैं और प्रबुद्ध पाठकों के पत्र कहीं-कहीं व्यापक—जन समीक्षा के निदर्शन प्रतीत होते है। सांप्रदायिकता विरोध की रोटी तोड़ने वाले साहित्यकारों की गहरी समीक्षा पाठकों के पत्रों में दृष्टिगत होती है। कल्पित जी का पाठक-लेखक-पत्राचार के प्रकाशन का नव्य प्रयोग भव्य भी है। यह उनकी एक देन है। पूर्वाग्रह मुक्त 'पाठकालोचना' साहित्य की एक विधा बन सकती है।

लेई और कैंची के सहयोग में चटक-मटक-लटक से लबालब राजनीति मूलक साहित्य लिखने वाले संवेदन के ठेकेदार बन बैठे हैं और मुर्गमुसल्लम-मदिरा, एक कश के साथ एक सिप् (काफी हाउस ब्रांड) हवाई यात्रा, ऐयाशी ही उनकी प्रगति की कुंजी बन गई है। कल्पित जी के पत्रों में इनको नंगा करके चौराहे पर खड़ा किया गया है। उनके पत्र साहस एवं राष्ट्र प्रेम के स्मरणीय अभिलेख है। सच्चे साहित्यकारों ने उनके तप को ठीक ही सराहा है। उनकी कला जीवन पर रीझी है, कला के अतिरेक या शिल्प के बांकपन या वाद के तीखे तेवर पर नहीं। पत्र एवं पत्रोत्तर इस सत्य को भी खोलते है। यह ग्रन्थ प्रत्येक साहित्य प्रेमी के लिये अपरिहार्य-वर्ग में समाविष्ट होने योग्य है।

प्रस्तुत पत्र संकलन प्रायः अर्द्धशताब्दि की साहित्यिक गतिविधियों, हिन्दी-समस्याओं एवं आपके साहित्य सृजन का युगपत् इतिहास-सा बन गया है। मैंने इसे ध्यान से देखा है। बारंबार देखूंगा। यह बारंबार देखने योग्य है भी।

डा० कृष्ण मोहन सक्सेना, लखनऊ

वास्तव में यह (सृजन-पथ के पत्र) एक समृद्ध उपन्यास है। आपकी जीवनी जब कोई लिखेगा तो विभिन्न पक्षों को विश्लेषित करने में सहायता मिलेगी। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जी के प्रकाशित पत्र-ग्रन्थ परम्परा में इसका एक मानक स्थान बनेगा। अपने समय के कितने महत्वपूर्ण लेखक आप है, लेखन के संकीर्ण दायरे से निकल कर, लेखक-वर्ग से तादात्म स्थापित करने मे भी आपने कितनी प्रभावी पहल की और निराशावादी नहीं रहे। आपका यह कार्य किसी और बड़े कार्य की भूमिका तथा आधार बनेगा.

डा० विद्यानिवास मिश्र, प्रधान सम्पादक नवभारत टाइम्स नई दिल्ली

आपका पत्र प्राप्त हुआ। ('सृजन-पथ के पत्र' में प्रकाशित) आपके नाम भेजे पत्र पढ़े। आप भाग्यशाली हैं, इतने महान साहित्यकारों के स्नेह से पोषित हैं। उनके पत्रों का संग्रह छपाकर अपनी आत्मीयता के विस्तार का परिचय आपने दिया है।···मेरी व्यक्तिगत प्रतिक्रिया यही है कि आपने अपने बारे में जो इतनी सतर्कता और पत्रों की ऐसी सुव्यवस्था (बरती है) श्लाघ्यनीय है।

डा० महेशचन्द्र गुप्त, निदेशक (राजभाषा) रेल मंत्रालय

'सृजन-पथ के पत्र" के प्रकाशन के लिये बधाई। वस्तुतः आपने साहित्य सृजन में नये कीर्तिमान स्थापित किये हैं। हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया है। आप अभी भी जुटे हैं यह आनन्द की बात है। जब मेरा इलाहाबाद प्रवास होगा तब आपसे भेंट करके पुस्तक मूल्य देकर ले लूंगा।

श्री नरेन्द्र मोहन, प्रधान सम्पादक 'दैनिक जागरण' कानपुर

आपने कृपा करके मेरे पास जो पुस्तक (सृजन-पथ के पत्र : कुछ प्रेषित कुछ प्राप्त) भेजी है, उसके लिए मैं आपका कृतज्ञ हूँ। मैं इस पुस्तक की समीक्षा भी जागरण में यथाशीघ्र प्रकाशित करवा दूँगा। आशा है आप स्वस्थ्य व सानन्द होंगे।

श्री यशपाल जैन, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली

'सृजन-पथ के पत्र' पुस्तक मिली। आपने पत्रों का बड़ा सुन्दर संग्रह किया है। नामी लेखकों के साथ अनेक अनामी लेखकों को जोड़कर संग्रह को सार्वजनिक महत्व का बना दिया है। कुछ पत्र बड़े प्रेरक हैं, कुछ सामान्य हैं। यदि आपने औपचारिक पत्रों को छोड़ दिया होता तो संग्रह और अधिक सुपाठ्य बन गया होता, पर वह शायद आपके लिए संभव नहीं था। जो हो, मैं इस प्रकाशन के लिए आपको हार्दिक बधाई देता हूँ।··पुस्तक की छपाई तथा साज-सज्जा सुरुचिपूर्ण है और आवरण आकर्षक है।

डा० रामकमल राय, इलाहाबाद

" जिस एक पुस्तक के नाते उन्हें बराबर याद किया जायगा, वह है उनके पत्रों का संकलन 'सृजन पथ के पत्र : कुछ प्रेषित कुछ प्राप्त'। इस पुस्तक के पत्रों को मैंने सांगोपांग् पढ़ा और अचरज से भर उठा। पत्र-साहित्य के महत्व को लेकर उनके मन में प्रारम्भ से ही एक दूरदर्शी अवधारणा रही है। अपने समय के सभी छोटे-बड़े-मझोले साहित्यकारों को उन्होंने पत्र लिखा है उनके द्वारा भेजे उत्तरों को सहेजकर रक्खा है। इससे अधिक आश्चर्य इस बात

चन्द्रकान्त बंदिवडेकर

७, शाकुन्तल
साहित्य सहवास, बांद्रा (पूर्व)
बम्बई—४०००५१

दिनांक—१ दिसम्बर १९९४

प्रिय अजित कुशवाहा,

सस्नेह नमस्कार !

आपका पत्र मिला। श्री कैलाश कल्पित जी की साहित्यिक सेवाओं का आप लोग अभिनन्दन कर रहे हैं, यह सुखद बात है। हिन्दी भाषा क्षेत्र इतना विशाल है कि हिन्दी की सेवा में समर्पित व्यक्तियों की साहित्य सेवा का मूल्यांकन लगभग असम्भव है। ऐसी स्थिति में कैलाश कल्पित जैसे लेखक के कृतित्व का स्वस्थ्य विश्लेषण और मूल्यांकन करने के लिए बहुत बड़ा उनका चहेता वर्ग तैयार हुआ है यह प्रसन्नता की बात है।

समाज में निष्काम भाव से सेवा करने वालों के कृतित्व को आज जानने वाला और उसका अभिनन्दन करने वाला वर्ग भी है, यह बात विशेष सुखकर लगी।

मैं कैलाश कल्पित जी के कृतित्व का अभिनन्दन करता हूँ आप सब लोग जो इस पवित्र कार्य में हाथ बँटा रहे हैं, धन्यवाद के पात्र हैं। सानन्द होंगे।

आपका
चन्द्रकान्त बंदिवडेकर

[पृष्ठ ६२ का शेष]

पर होता है कि उन्होंने अपने द्वारा भेजे पत्रों की प्रति पूरी निष्ठा से बचा कर रक्खी है। इससे यह सिद्ध होता है कि उनके मन में पत्र साहित्य और पत्र-लेखन कला को लेकर गम्भीर अवधारणा रही है।···'सृजन पथ के पत्र' का न केवल ऐतिहासिक महत्व है बल्कि सर्जनात्मक महत्त्व भी कम नहीं है।·· मेरा निश्चित मत है कि साहित्यक परिवेश को समझने के लिये साहित्यकारों के बीच और राजनैतिक परिवेश को समझने के लिये राजनीतिज्ञों के बीच के पत्राचार एक बहुत बड़ी कुंजी होते हैं। कैलाश कल्पित के पत्रों का संकलन भी उनके युग को समझने में गहराई से सहायता करते हैं। ●

कैलाश कल्पित

एक इण्टरव्यूकार के रूप में

[डा० विणु पंकज, जयपुर]*

हिन्दी के वरिष्ठ साहित्यकार श्री कल्पित ने कविता, कहानी, उपन्यास जैसी अनेक साहित्यिक विधाओं पर अपनी सशक्त लेखनी चलाई है किन्तु वे हिन्दी के प्रथम आठ प्रमुख इण्टरव्यूकारों में भी एक हैं।

स्वर्गीय बनारसीदास चतुर्वेदी तथा स्व० डा० पद्म सिंह शर्मा 'कमलेश' ने इण्टरव्यू-साहित्य को विधागत स्वरूप दिलाने में अथक परिश्रम किया था। चतुर्वेदी जी ने १९२० में ही इन्टरव्यू लेने आरम्भ कर दिये थे और कमलेश जी के इण्टरव्यु-संग्रह सन् १९५२ में निकले। कल्पित जी ने ठीक कमलेश जी बाद इण्टरव्यू-विधा को गति प्रदान की और १९५३ से विभिन्न साहित्यकारों के इण्टरव्यू लेने आरम्भ कर दिये थे। यद्यपि उन्होंने कमलेश जी के ढंग पर इण्टरव्यू लेना आरम्भ किया पर साथ ही उन्होंने इस पद्धति मे कुछ सुधार का प्रयाम भी किया, अतः हिन्दी के इण्टरव्यू साहित्य में कल्पित जी का योगदान उल्लेखनीय माना जायगा। उन्होंने कुछ बहुत बड़े साहित्यकारों के इण्टरव्यूज लिये और विशिष्ट महिला-साहित्यकारों के इण्टरव्यू लेकर उन्हें पृथक से प्रकाशित कराया।

कल्पित जी का पहला इण्टरव्यू-संग्रह सन् १९५७ में 'साहित्य के साथी' शीर्षक से (नेशनल प्रेस, इला०) प्रकाशित हुआ था। इसमें उन्होंने प्रमुख कवि सर्वश्री सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', सुमित्रा नन्दन पंत, सियाराम शरण गुप्त, डा० राम कुमार वर्मा, डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी, ठाकुर गोपाल शरण सिंह, उपन्यासकार डा० वृन्दावन लाल वर्मा, महापंडित राहुल सांस्कृत्यायन और महासंत प्रभुदत्त ब्रह्मचारी जी जैसे मनीषियों के इण्टरव्यू संकलित किये थे। इनके साथ ही इसमें डा० रामकुमार वर्मा की महाकवि निराला से हुई साहित्यिक नोक-झोंक भी सम्मिलित है जो विशेष पठनीय है।

सन् १९६२ में कल्पित जी का दूसरा इण्टव्यू संग्रह, जो महिला साहित्यकारों से सम्बद्ध है 'साहित्य साधिकाएं' नाम से प्रकाशित हुआ। इस संग्रह

---

*डा० विष्णु पंकज ने हिन्दी में इण्टरव्यू साहित्य पर पहला शोध ग्रन्थ हिन्दी इण्टरव्यू : उद्भव और विकास' १९८४ में प्रस्तुत कर अपनी पी० एच० डी० की उपाधि प्राप्त की थी। प्रस्तुत लेख श्री कैलाश कल्पित की पुस्तक 'साहित्यकारों के संग' में प्रकाशित 'दो शब्द' की प्रस्तुति है।

में कुछ ऐसे प्रश्नों के उत्तर महिला साहित्यकारों [सुमित्रा कुमारी सिनहा तथ शकुन्तला सिरोठिया आदि] से प्राप्त किये गये जो सामान्यतः संकोचव महिलाओं से नहीं पूछे जाते । अतः यह कहा जा सकता है कि इण्टव्यू लेने व कल्पित जी की अपनी विशेष तकनीक है जिसका उद्देश्य कलाकार विशेष व अच्छा परिचय देना तथा समसामयिक विषयों एवं समस्याओं पर उसके प्रत्य और संशयहीन विचार पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करना रहता है। ये इण्टरव मुख्यतया प्रश्नोत्तर शैली में लिए गये हैं। इण्टरव्यू नायकों के परिचय के सा इण्टरव्यू लेने की पृष्ठिभूमि, उनका परिवेश चित्रण, इण्टरव्यूकार पर प प्रभाव आदि को भी अंकित किया गया है। इन सब विशेषताओं से इ इण्टरव्यूओं का महत्त्व बहुत अधिक बढ़ गया है। इस विधा के विकास में ज उल्लेखनीय योगदान कल्पित जी ने दिया है उसका पुनर्मुद्रण, प्रकाशन औ प्रसार समाज और साहित्य के हित में होना ही चाहिये था। मैं प्रकाशक क परिष्कृत दृष्टि के लिये धन्यवाद देना चाहता हूँ। ● इन्द्रपुरी, जयपुर—

['साहित्यकारों के संग' नामक इण्टरव्यू की पुस्तक 'साहित्य के साथी तथा 'साहित्य साधिकाएँ' का संयुक्त संस्करण है जो १९८७ में किताब घर नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ है। इस संस्करण की विशेषता यह है कि इसमे कवयित्री महादेवी वर्मा का इण्टरव्यू भी जोड़ दिया गया है जो श्री कैलाश कल्पित ने उनसे १९८५ में प्राप्त किया, अर्थात् जो कार्य वे '९५६ में नहीं कर सके, २९ वर्ष बाद १९८५ में उन्होंने उसे पूर्ण किया। यह प्रकरण उनके धैर्य और लगन का परिचायक है। इस पुस्तक में दो भूमिकाएं हैं जो संस्मरण-साहित्य की अमूल्य निधि हैं, साहित्य प्रेमी के लिये पठनीय —सम्पादक]

क्या आप अपने को धार्मिक अथवा नास्तिक व्यक्ति समझते हैं। जन्म से जिस धर्म के हैं, क्या उस धर्म की सीमांसक पुस्तकें भी पढ़ी हैं ?

आपके द्वारा पुस्तक खरीद कर पढ़ने से लेखकों को साहित्य-सृजन की प्रेरणा मिलती है ।

क्या आपका परिवार सुरुचि-सम्पन्न हैं ? अपनी आय से कितने रुपये सुपस्तकें संगीत अथवा कला सामग्री पर व्यय करते हैं ?

क्या आप अपनी मातृ-भाषा के कुछ उन साहित्यकारों के नाम जानते हैं जो पाठ्यक्रम में नहीं पढ़ाए गए ? यदि नहीं तो आप अपने को संस्कार सम्पन्न नागरिक मत समझिए ।

कैलाश कल्पित से एक साहित्यिक इन्टरव्यू

—विनय कुमार मालवीय

प्रश्न—आपकी प्रथम रचना कौन थी ? वह कब और कहाँ प्रकाशित हुई ?

मेरे लिखने की प्रक्रिया कविता से शुरू हुई थी। मेरी सर्वप्रथम कविता सन् १९४३ में 'चमचम' नामक बाल पत्रिका में प्रकाशित हुई, जिसका शीर्षक था 'वर्षा आई वर्षा आई।'

प्र०—साहित्य की ओर प्रेरित करने वाली घटना के बारे में आप कुछ बताने का कष्ट करें।

जब मैं पढ़ता था तो स्कूल में हर शनिवार को होने वाले डिबेट वगैरह में भाग लेता था। उस समय जब मैं अपनी कविता सुनाता था तो अध्यापक उसे पसन्द करते थे। उनसे प्रोत्साहन मिला और उसी का परिणाम था कि आगे लिखने की प्रेरणा मिली।

वैसे स्कूली शिक्षा की दृष्टि से मैं बहुत ही कम पढ़ा-लिखा आदमी हूँ। लेकिन घर में अपने बड़े भाई की किताब की दुकान में बैठने के कारण मुझे अनायास ही सभी प्रकार की किताबें पढ़ने का अवसर मिला। दूसरे विश्व युद्ध के समय इंडियन प्रेस से सरस्वती सीरिज में कुछ बहुत ही प्रभावशाली ढंग से उस युग के राष्ट्र नायकों की जीवनियाँ प्रकाशित हुई थीं जैसे हिटलर, मुसोलिनी, जनरल तोजो, रुजवेल्ट, स्टालिन आदि। इन राष्ट्र नायकों ने विश्व को प्रभावित किया था किन्तु स्कूली शिक्षादीक्षा की दृष्टि से इनके पास भी कोई बहुत बड़ी डिग्री नहीं थी तो मुझमें जो एक हीनभावना थोड़ी बैठी थी वह खत्म हो गई। मन के एक कोने में विश्वास पलने लगा कि बड़े प्रयास करने से बड़े काम बनते हैं।

इसी समय मैंने निराला, जयशंकर प्रसाद, सुमित्रा नन्दन पंत, मैथिली शरण गुप्त, रवीन्द्र नाथ टैगोर जैसे शीर्ष साहित्यकारों की जीवनियां पढ़ी। इनके जीवन से भी मुझे बहुत प्रेरणा मिली। क्योंकि ये सब भी विश्वविद्यालय की डिग्री रखने वाले व्यक्ति नहीं थे बल्कि इन्होंने स्वाध्याय और निजी अध्ययन से ही अपनी क्षमताएँ जगाई थीं। संयोग से निराला जी के बारे मे जानने का मुझे विशेष मौका मिलता रहा, अतः अन्दर ही अन्दर लिखने की तैयारी करने के प्रयास में मैंने जब १९४६ में 'कल्पना' पत्रिका निकाली तो इन सभी महानुभावों से पहले मिला जो डिग्रीहोल्डर नहीं थे। अपने को आश्वस्त करने के लिए एक बार निराला जी से मैंने पूछा पंडित जी ! क्या साहित्य-सृजन के लिये विश्वविद्यालय की डिग्री अनिवार्य है ?

---

* नवभारत टाइम्स, लखनऊ व दिल्ली में, दो फरवरी १९८८ में पूर्व प्रकाशित ·

उन्होंने बहुत जोर का ठहाका लगाकर गालिब का एक शेर कहा—

'इश्क को दिल में दे जगह् गालिब
शायरी इल्म से नहीं होतीं'

यह कह्कर उन्होंने कहा 'देखो लगन से बढ़कर दुनिया में कोई चीज नहीं होती। जिसने जिस चीज के प्रति लगन लगा ली उसे किसी न किसी प्रकार अवश्य प्राप्त कर लिया।'

इस प्रकार मुझे निराला जी से यह मंत्र मिला कि सफलता का मूलमंत्र है इच्छा शक्ति। बस इसी को गांठ बांधकर मैंने निजी अध्ययन करना और कविता, कहानी का जब मौका मिला, लिखता रहा। सन् १९४९, ५०, ५१ मे मैंने 'कल्पना' नामक पत्रिका का प्रकाशन अपनी पत्नी के साथ प्रारम्भ किया था। मैं लेखको को पारिश्रमिक नहीं दे पाता था और प्रचार के माध्यम भी अपने पास नहीं थे। चूंकि पत्रिका में सभी प्रकार की सामग्री की आवश्यकता होती है तो कविता के साथ गद्य रचनाओं की जो आवश्यकता हुई, उसकी पूर्ति हेतु मैं गद्य की ओर भी उन्मुख हुआ।

प्र०—कार्यालयों मे अफसरों द्वारा कर्मचारियों के प्रति की जाने वाली उपेक्षा का चित्रण आपने अपने नाटक 'संत्रास' में किया है। आपके इस नाटक के लिखने के मूल में क्या कोई घटना विशेष है, जिसने इस ओर आपको लिखने के लिये प्रेरित किया ?

मेरे कार्यालय जीवन में प्रायः इस प्रकार की घटनाएं हुई जिनमें अधिकारी वर्ग कार्यालय के लिपिक वर्ग को बड़ी उपेक्षा की दृष्टि मे देखने थे जो मुझे बहुत अखरता था। चूंकि मैं एक संवेदनशील व्यक्ति था और न जाने क्यों आत्मसम्मान के तंतु मुझमें प्रखर रहे, अतः अक्सर मेरी अधिकारियों के साथ झडप हो जाया करती थी। 'संत्रास' नाटक तो उसी की एक झलक है ही वैसे मैंने 'युगबोध' उपन्यास में कार्यालय जीवन के अनेक चित्र प्रस्तुत किये हैं। मुझे अधिकारी वर्ग प्रायः एक अभिजातीय भावना में डूबा दिखाई दिया है और उसके अभिजातीय के साथ अंग्रेजी भाषा चाबुक का काम करती है।

संयोग से मैं अंग्रेजियत प्रवृत्ति का बहुत विरोधी था। अतः अधिकारी जब भी अंग्रेजी में डपटने का प्रयास करते थे तो मैं कहता था यह बात तो आप हिन्दी में भी कह सकते हैं। इसको सुनकर कुछ चुप रह जाते थे और कुछ ऐसे भी थे जो कहते थे 'प्लीज गेट आउट, डोंट ट्राई टू टीच मी।'

प्र० 'साहित्य के साथी' नामक पुस्तक जिसका एक नया संस्करण

'साहित्यकारों के संग' नाम से प्रकाशित हुआ है, में आप द्वारा प्रमुख साहित्यकारों से लिये गये साक्षात्कार हैं। क्या आप बताना चाहेंगे कि आपको उन लोगों से मिलने में कोई परेशानी तो नहीं हुई थी ?

इन बारे में मैंने इस पुस्तक की भूमिका में जिन जिन साहित्यकार से जैसा भी सहयोग मिला है उसका वर्णन किया है। जहाँ तक नितांत असहयोग की बात है उस समय यानी १९५६ में श्रीमती महादेवी वर्मा ने कोई सहयोग नहीं दिया और समय भी नहीं दिया। सबसे सहज और सरल रूप से मुझे श्री वृन्दावन लाल वर्मा, श्री सियाराम शरण गुप्त, ठाकुर गोपाल शरण सिंह से साक्षात्कार मिला।

निराला जी का साहित्यिक इण्टरव्यू तैयार करने में सबसे बड़ी कठिनाई यह हुई कि वह एक बैठक में जमकर बात करने को तैयार हो नही हुये। संभवतः जितने प्रश्न पूछे थे उतने चक्कर मुझे दारागंज के लगाने पड़े उनके प्यार और स्नेह में कमी नहीं थी और बातें तो किया करते थे किन्तु ऐसे प्रश्न जब हम किया करते थे तो वे टाल देते थे। उनके साक्षात्कार की पूर्णता प्राप्त करने के लिए मैंने डा० राम कुमार वर्मा का सहयोग प्राप्त किया और दोनों ही महानुभावों को दो बार एक साथ अपने घर पर भोजन पर आमंत्रित कर उनमे बातचीत कराकर अपने पुस्तक की सामग्री मैंने तैयार की।

सबसे अधिक कठिनाई मुझे महापंडित राहुल सांस्कृतयायन और डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी के साहित्यिक संभाषण में हुई। दोनों ने यह तो कहा कि मैं आपके प्रश्नों का उत्तर दूँगा परन्तु राहुल जी कहते थे कि पहले हजारी प्रसाद जी से इन्टरव्यू लें लें, फिर मुझसे समय ले लेना और द्विवेदी जी कहते थे पहले राहुल का इन्टव्यू लें तो फिर मैं समय दे दूँगा।

प्र०--तो फिर किस प्रकार उन दोनों महानुभावों से आपको इन्टरव्यू ?

किसी प्रकार पहले डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी से इन्टरव्यू मिला और फिर राहुल जी से।

प्र०--आपकी कई पुस्तकें उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत की गई हैं। पुस्तकों को पुरस्कृत करने की प्रक्रिया तथा उसमें आने वाली सारी कठिनाइयों के संबंध में आप कुछ चर्चा करना चाहेंगे ?

इस बारे में मैं क्या बता सकता हूँ। कौन पुस्तकें पुरस्कृत होती हैं और किस प्रकार पुरस्कृत होती हैं, इस बारे में तो पुस्तक समिति के सदस्य ही जान सकते हैं और बता सकते हैं।

मेरे लेखन के साथ यह संयोग ही था कि मेरी पहली काव्य पुस्तक जो रवीन्द्र गीतांजलि के अनुवाद के रूप में थी और जिसे मैंने स्वयं प्रकाशित भी किया था, वह उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा रवीन्द्र शताब्दी पर पुरस्कृत हुई। उस पुस्तक का सम्पूर्ण संस्करण बिना किसी कठिनाई के बिक गया।

इसके बाद मेरी वह पुस्तक 'अनुभूतियों की अजन्ता' जिसके प्रकाशन पर मुझे भय था कि कहीं सरकार से मुझे सजा न मिल जाए, उसी पुस्तक पर मुझे उ० प्र० हिन्दी संस्थान से प्रशस्ति मिली।

अभी १९८९ में मेरा उपन्यास 'चारुचित्रा' हिन्दी संस्थान उ० प्र० द्वारा 'प्रेमचन्द पुरकार' से पुरस्कृत हुआ।

ये सब पुस्तकें कैसे और क्योंकर पुरस्कृत हुईं इसके बारे में मैं कुछ नहीं कह सकता सिवाय इसके कि मैंने पुस्तकें संस्थान को प्रेषित कर दी थीं।

प्र०—अब के कवि सम्मेलनों और तब के कवि सम्मेलनों में आप कुछ अन्तर महसूस करते हैं ?

पिछले १५ सालों में कवि सम्मेलनों का स्वरूप बहुत विकृत हो गया है। आजकल एक तो नई कविता के कवि विशेष रूप से बुलाये जाते हैं और जिनके काव्यपाठ में शायद ही कोई श्रोता आनन्द उठा पाता हो। कवि तो कवि को फिर भी कुछ समझ लेते हैं।

प्र०—साहित्यिक जीवन की किसी विशेष घटना, जिसने आपको सर्वाधिक झकझोरा हो अथवा जो आज भी आपको बार-बार याद आती हो, के बारे मे कुछ चर्चा करना चाहेंगे ?

निराला जी का जो सार्वजनिक अभिनन्दन सन् १९५३ में मैंने कलकत्ते मे देखा, उसे मैं कभी नहीं भूल सका। इस समारोह की अध्यक्षता श्री क्षितिज मोहन सेन ने की थी और इसमें शान्ति कुमार चटर्जी, तथा कलकत्ते के मेयर आदि व अनेक उद्योगपति सम्मिलित हुए थे।

इलाहाबाद से बुलाये गये १७ साहित्यकारों को सेठ झुनझुन वाला और सेठ जयपुरिया की भव्य कोठियों में ठहराया गया था। उस सार्वजनिक सभा का हाल यह था कि जैसे एक सागर लहरा रहा था। चारों ओर अपार जन-समूह था।

प्र०—हिन्दी को यद्यपि राष्ट्रभाषा का दर्जा प्रदान किया गया है, परन्तु आज तक उसे यह स्थान नहीं मिल सका है, इस गतिरोध के सम्बन्ध में आपके क्या विचार हैं ?

[शेष पृष्ठ ७२ पर]

एक प्रखर साहित्यकार

माननीय कल्पित जी

शैलेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

साहित्य जगत तो वैसे समुंदर की भाँति है, फिर भी कुछ गहराइयों का अन्दाजा तो हो ही जाता है। पुराने साहित्यकारों को जब स्मरण किया जाता है, तो वाकई आज के इस आधुनिक युग से विरक्ति होने लगती है फिर भी आज भी गर्व से हम कह सकते हैं कि ऐसे चुनौती भरे युग में भी अनेक लोग साहित्य सेवा निस्वार्थ भाव से कर रहे हैं, उन्हीं में से एक उमंग, उत्साह एवं कभी न बुझने वाला दीपक महानगर प्रयाग में है, जो साहित्य में एक अपना विशिष्ट स्थान प्राप्त किये हुये है। और जिसने 'निराला' जी तथा उनके सम कालीन लोगों के साथ निःस्वार्थ सेवा कर साहित्य को अपना बहुमूल्य योगदान तथा उच्चकोटि की पुस्तकें दी हैं, वह और कोई नहीं है जिनका नाम हर युवा से बुजुर्ग साहित्यकार तक जानता हैं वे हैं श्री कैलाश कल्पित। कैलाश कल्पित जी को जिसने नहीं पढ़ा है वे वाकई में साहित्य जगत में अधूरा है अथवा कुछ खो रहा है। वे हमेशा सजग प्रहरी के भाँति हर मुद्दे पर तथा राष्ट्रीय स्तर का साहित्यिक प्रयास करते हैं और अपने गद्य लेखन व कविताओं के माध्यम् से राष्ट्र को एक नई चेतना व नयी दिशा, नया मार्ग प्रशस्त करने का प्रयास करते हैं। उन्होंने युवा पीढ़ी को साहित्य जगत में कार्य करने का कार्य भी किया है। अपने सरल व कोमल स्वभाव के चलते वे युवा साहित्यकारों में काफी चर्चित हैं। युवा बच्चों की भाँति इन्हें बाबू जी भी कहते हैं। वे हमेशा साहित्य के गलत व अच्छे विचारों से अवगत कराते रहे हैं और नये कवि व साहित्यकारों को उठाने का पूरा प्रयास करते रहते हैं। धन्य है महानगर प्रयाग जहाँ सूर्य और चन्द्रमा दोनों की भाँति रात व दिन में साहित्य के प्रकाश के माध्यम से अनेक साहित्यकार पूरे राष्ट्र को एक अलौकिक दृश्य व दर्पण प्रदत्त कर रहे हैं तथा युवा साहित्यकारों के लिये प्रेरणा श्रोत बनकर विशेषरूप से श्री कैलाश कल्पित प्रयाग की धरती को प्रेरणामयी बना रहें हैं। कैलाश कल्पित अपने आप में एक गौरव का विषय है। निःसन्देह आज मुझे गर्व हो रहा है कि उनके बारे में कुछ थोड़ा-बहुत लिखने का अवसर मुझे भी मिला। ईश्वर उन्हें दीर्घ काल तक हमारे बीच रखें यही हमारी कामना है।

अध्यक्ष

हंसवाहिनी, सामाजिक, साहित्यिक

एवं सांस्कृतिक संस्था इलाहाबाद

चेतना सम्पन्न व्यक्तित्व

—अजीत कुशवाहा

कल्पित जी से कुछ साहित्यकारों ने उनके ७०वें जन्म दिवस पर अभिनन्दन की बात उठायी। जो अन्ततः मेरे पास तक पहुंची और जिसके परिणाम स्वरूप अभिनन्दन समारोह समिति की बैठक में मुझे संयोजक के रूप मे चुन लिया गया। मुझे २५-२६ जनवरी को होने वाले इस कार्यक्रम के लिए अक्टूबर में ही जुट जाना पड़ा।

मैं कल्पित जी से पिछले पाँच-छः वर्षों से जुड़ा हूँ। हुआ यूं कि बाल साहित्यकार श्रीमती शकुन्तला सिरोठिया के ७५वें जन्म दिवस अभिनन्दन समारोह समिति के सचिव के रूप में जुड़ा था और उसी सन्दर्भ में उनसे जुड़े लोगों से मिला। जिसमें से एक कल्पित जी भी थे। यह परिचय धीरे-धीरे घनिष्ट हो चला। मैं अक्सर उनके यहां जाने लगा। इसी बीच उन्होंने मुझसे एक दिन पूछा, क्या आपने मेरा लिखा भी कुछ पढ़ा है? यों तो मैं उनके नाम से पूर्व परिचित था। लेकिन इससे पहले न तो उनसे मिला ही था और न ही उनकी कोई पुस्तक ही पढ़ी थी। यह जान कर कि मैंने उनका लिखा हुआ कुछ नहीं पढ़ा है, उन्होंने मुझे अपना उपन्यास शुभ्रा, स्वराज्य जिन्दाबाद पढने के लिये और 'आग लगा दो' कविता संग्रह भेंट किया। मैं समझता हूँ 'स्वराज्य जिन्दाबाद' उनका प्रतिनिधि उपन्यास है जिसमें उनकी विचारधारा का प्रस्फुटन हुआ है। वे यथार्थ उन्मुख आदर्श के आग्रही हैं। 'आग लगा दो' कविता संग्रह पढ़कर मन में प्रश्न उठता है कि समाज को संवारने और फलते-फूलते देखने वाला व्यक्ति, कैसे यह कर सकता है कि 'आग लगा दो' लेकिन यदि इस कविता को लिखने वाले कवि की मानसिकता का अवलोकन किया जाय तो बात स्पष्ट हो जाती है कि आपात् काल और उसके बाद की स्थिति इतनी विस्फोटक है कि धैर्यवान से धैर्यवान व्यक्ति का भी विश्वास डगमगाने लगता है और उसी मानसिकता के यथार्थ चित्रण के रूप में कल्पित जी ऐसी रचना भी साहस के साथ करते हैं और जिसके माध्यम से जनमानस में एक ओज का वातावरण बनाना चाहते हैं। इस तरह की अनेक व्यंग्य कविताएँ भी उन्होंने लिखी। वैसे भी वे मानते हैं कि वे अपने कथा साहित्य से कविताओं की अपेक्षा अधिक संतुष्ट हैं। लेकिन इसका यह अर्थ नहीं है कि कविताओं को वह दूसरी कोटि में रखते हैं। आपात् काल के दौरान प्रकाशित उनका काव्य-संग्रह 'अनुभूतियों की अजन्ता' एक सशक्त कृति है जिसकी कुछ कविताओं को छोड़कर अन्य कविताएँ जीवन की आस बनाये रखने में सक्षम हैं।

कल्पित जी के व्यक्तित्व के अनेक पहलू हैं। वे जितना अपने समकालीन रचनाकारों से जुड़े रहते हैं उतना ही समय वह नए लिखने वालों को भी देते हैं।

हिन्दी के प्रति उनका विशेष अनुराग है। 'हिन्दी प्रतिष्ठापन मंच' की स्थापना भी उन्होंने इसीलिये की। उसके माध्यम से उन्होंने विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में हिन्दी माध्यम बनाने के लिये लड़ाई लड़ी और अब भी लड़ रहे हैं। इस कार्य मे अनेक साहित्यकार एवं हिन्दी प्रेमी उनके साथ हैं। इस कार्य के निमित्त वह अनेक लोगों से पत्राचार करते रहते हैं। अपने समकालीन साहित्यकारों से भी विभिन्न मुद्दों पर वह सम्पर्क बनाये रखते हैं। ऐसे ही पत्रों का संकलन 'सृजन पथ के पत्र : कुछ प्रेषित कुछ प्राप्त' छप भी चुका है। उसे पढ़ कर उनके चेतना सम्पन्न व्यक्तित्व का अंदाजा लगाया जा सकता है। यदि उन्हें उपयुक्त आलोचक मिला होता तो उनकी लेखनी की और चर्चा हुई होती। लेकिन उन्होंने कभी इस बात की परवाह नहीं की कि कौन उन्हें सराह रहा है और कौन नकार रहा है। वह तो कहते हैं 'मैं तो अपना काम कर रहा हूँ।' इसी सहज भाव के साथ वह साहित्य सृजन में लगे हुए हैं। इस अवसर पर मैं अपने श्रद्धा के सुमन उन्हें अर्पित कर रहा हूँ।

१४३-ए, पुरानी लश्कर लाइन,
इलाहाबाद-२११००३

[पृष्ठ ६९ का शेष]

हिन्दी को अपना स्थान न मिलने के सम्बन्ध में मेरे विचार से प० जवाहर लाल नेहरू मुख्य रूप से जिम्मेदार हैं। मैं तो यहाँ तक समझता हूँ कि टंडन जी से भले ही वे हार खा गए थे किन्तु उनके मन के किसी कोने में यह भावना घर कर गई थी कि हिन्दी को बेकार ही यह प्रतिष्ठा दी जा रही है। अतः कुछ ऐसी चालें चली गई कि नए संविधान के लागू होते ही हिन्दी को १५ साल के लिए बनवास दे दिया गया। अधिकारी वर्ग तो ऊपर की दृष्टि प्रथम देखता है, उसने भी हिन्दी को कभी भी वह प्रतिष्ठा देने दिलाने का प्रयास नही किया।

सारांश यह है कि सर्वाधिक अवरोधक तत्त्व अधिकारियों का अंग्रेजी के प्रति लगाव और जनता को इसका होश ही न होना कि उससे उसका क्या छीना जा रहा है।

पुस्तकें क्रय कर पढ़ना व्यक्ति के सांस्कृतिक विकास का परिचायक है।

अखिल भारतीय हिन्दी प्रतिष्ठापन मंच के सूत्र धार

श्री कैलाश कल्पित

डॉ० कैलाश नाथ पाण्डेय, बम्बई

मैं जब इलाहाबाद में १९७८ में केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद् के एक कार्यकर्त्ता की हैसियत से कार्य कर रहा था तो हमारी मुलाकात परिषद् की एक गोष्ठी मे साहित्यकार श्री कैलाश कल्पित से हुई। गोष्ठी मे इनके हिन्दी सम्बन्धी विचारों से मै बहुत प्रभावित हुआ। चूँकि केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद् का सदस्य केवल केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों, बैंकों, उपक्रमो, निगमों आदि का कर्मचारी ही बन सकता है इसलिए श्री कैलाश कल्पित जी ने तय किया कि हिन्दी के प्रचार व प्रसार के लिए एक ऐसी संस्था का निर्माण किया जाय जिसका सदस्य प्रत्येक भारतीय नागरिक बन सके। इस विचार को मूर्त रूप प्रदान करने के लिए कल्पित जी और मैंने इलाहाबाद में फरवरी १९८३ में अखिल भारतीय हिन्दी प्रतिष्ठापान मंच की स्थापना की। इसके संरक्षक डॉ० राम कुमार वर्मा तथा डॉ० उदय नारायण तिवारी, अध्यक्ष---डॉ० हरदेव बाहरी विख्यात भाषा वैज्ञानिक, महा-मंत्री---श्री कैलाश कल्पित और उपाध्यक्ष मैं----डॉ० कैलाश नाथ पाण्डेय चयनित हुए। श्री विद्याधर पाण्डेय, नगर मंत्री, के० स० हि० प० एवम् अन्य लोगों के सहयोग से छोटी-छोटी गोष्ठियाँ व बैठकें होने लगीं जिसमें हिन्दी सम्बन्धी विषयों पर विशद् चर्चा की जाती रही। दिनांक ९ अप्रैल ८३ को माननीय प्रभुदत्त ब्रह्मचारी के नेतृत्व मे एक जुलूस नगर में निकाला गया जिसमें बैनर व पोस्टर लिए हुए तथा मुँह पर सफेद पट्टी बाँधे हम लोग चल रहे थे। यह जुलूस चौक इलाहाबाद में जाकर सभा मे बदल गया जिसमें श्री लक्ष्मीकान्त वर्मा, साहित्यकार (वर्तमान अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ) सहित डॉ० बाहरी आदि अनेक भाषा प्रेमियों ने भाषण दिया।

मंच की गतिविधियों को दिनोंदिन बढ़ाया जाने लगा। जनता में राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रति जागरूकता लाने के लिए हिन्दी से सम्बन्धित महत्वपूर्ण लेखों को पुनर्मुद्रित करवाकर विधायकों, साँसदों तथा जनता के बीच वितरित किया जाता रहा है। १९८४ में डॉ० गणपति चन्द्र गुप्त का लेख ''इंग्लैंड में अंग्रेजी कैसे लागू की गई'' १९८५ में श्याम रुद्र पाठक का लेख ''अंग्रेजी के राक्षस का भारतीय प्रतिभाओं के साथ बलात्कार'', १९८६ मे श्री कैलाश कल्पित का लेख ''आतंकवाद भाषा के क्षेत्र मे'', १९८७ में जापानी विद्वान योहिच युकिशिता का लेख ''भारत की राष्ट्रभाषा समस्या'' को मुद्रित करवाकर हजारों प्रतियों को देश में फैली हिन्दी संस्थाओं, विद्वानो, विचारकों और जनता के पास भेजा गया। २ फरवरी १९८६ को विज्ञान परिषद हाल

मे सायंकाल ४ बजे मंच की तरफ से उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा उर्दू को दूसरी राजभाषा बनाए जाने के विरोध में एक सभा आयोजित की गई जिसका उद्घाटन-भाषण ज्ञान पीठ पुरस्कार से सम्मानित महीयसी महादेवी वर्मा ने किया। इस सभा में प्रोफेसर वासुदेव सिंह तथा न्यायमूर्ति श्री जगमोहन लाल सिन्हा सहित अनेक विद्वानों ने सारगर्भित भाषण दिया। १४ सितम्बर १९८९ को मंच की तरफ से, संघ लोक सेवा आयोग, नई दिल्ली के मुख्य द्वार पर अंग्रेजी की अनिवार्यता समाप्त कराने के लिए आमरण अनशन पर अपने आठ सहयोगियों के साथ बैठे श्री पुष्पेन्द्र चौहान को प्रशस्तिनिपत्र तथा ५०१) (पाँच सौ एक रुपया) देकर इलाहाबाद में सम्मान दिया गया।

१९८५ में मेरा कार्य-स्थल इलाहाबाद से बदलकर बम्बई हो गया। श्री कैलाश कल्पित जी का यह वाक्य कि "महानगरों में हिन्दी के प्रचार व प्रसार की बहुत जरूरत है" ने हिन्दी के प्रतिष्ठापन के लिए मुझे प्रेरणा दी। मैंने बम्बई में मंच की एक शाखा गठित की जिसमें धर्मयुग के लेखक श्री भँवर लाल ठोलिया का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ। बम्बई में जगह-जगह बैठकें आयोजित की जाने लगीं। १९८९ में जब लोकसभा का चुनाव हो रहा था तो मंच के कार्य-कर्त्ताओं ने बम्बई महानगर में घर घर जाकर "अपना अमूल्य मत किसे और क्यों दें" शीर्षक से मुद्रित पत्रक बाँटा। देश के अन्य स्थानों पर इसका वितरण किया गया। १९९१ में मंच की तरफ से हिन्दी का प्रयोग बढ़ाने से सम्बन्धित एक ज्ञापन पूरे देश में प्रायोजित किया गया और देश के कोने-कोने से प्रधानमंत्री को ज्ञापन भिजवाया गया। १९९२ में मेरे द्वारा "हिन्दी क्यों और कैसे आएगी ?" शीर्षक से लिखा गया लेख पूरे देश में प्रमुख लोगों को भेजा गया। प्रत्येक वर्ष दो-दो बार लगभग २५० व्यक्तियों के हस्ताक्षर से युक्त ज्ञापन भेजा जाता रहा है। समाचार-पत्रों में लगभग २५ पत्र "पाठकों के पत्र-स्तंभ में प्रकाशनार्थ भेजे गए। ९ अक्टूबर १९९४ को बम्बई में मंच की तरफ से "स्वभाषा एवम् स्वदेश" विषय पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गई जिसमें प्रसिद्ध गाँधीवादी व स्वतन्त्रता सेनानी डॉ० ऊषा मेहता, बम्बई उच्च न्यायालय के संविधान पीठ के न्यायाधीश माननीय डी० आर० धनुका, महाराष्ट्र हिन्दी अकादमी के अध्यक्ष, डॉ० राम मनोहर त्रिपाठी, बम्बई विश्वविद्यालय के पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो० चन्द्रकान्त बांदिवडेकर, भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र, बम्बई के वैज्ञानिक डॉ० विजय कुमार भार्गव आदि ने अपने विचारों से संगोष्ठी को हिन्दी के प्रचार व प्रसार में एक 'मील का पत्थर" बना दिया। बम्बई में मंच की गतिविधियों को बढ़ाने के साथ-साथ ही मध्य प्रदेश व राजस्थान में इसकी शाखाएँ खोली गईं।

मंच के स्थापना काल से ही इसका प्रमुख उद्देश्य केन्द्र सरकार के कार्य-कलापों में हिन्दी का प्रतिष्ठापन कराना तथा समस्त भरती / प्रवेश / प्रतियोगी

परीक्षाओं का माध्यम हिन्दी कराना तथा अंग्रेजी विषय की अनिवार्यता को समाप्त कराना रहा है। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु पत्रों, ज्ञापनों की शृङ्खला के अलावा समय-समय पर सांसदों, संसदीय राजभाषा समिति के सदस्यों से मिलकर समस्याओं एवम् उनके निराकरण हेतु उपायों से अवगत कराते रहे हैं। प्रतिवर्ष लगभग ४०० (चार सौ) पत्र राजभाषा हिन्दी के प्रतिष्ठापन हेतु लिखे जा रहे हैं। इसका सुखद परिणाम यह हुआ कि अनेक उन परीक्षाओं का माध्यम हिन्दी भी हो गया जिनकी सूची लेख के अन्त में दी गई है

हमारे हिन्दी मंच के प्रयास के फलस्वरूप ही विश्वविद्यालय अनुदान द्वारा सचालित दूरदर्शन के शिक्षा कार्यक्रम हिन्दी में भी प्रसारित होने शुरू हुए और इसके प्रयास से ही उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा प्रदत्त ३०००), ७०००) और २१०००) रु० वाले पुरस्कार भा० ज० पार्टी के शासन काल में ५०००), ११०००) और २५५०१) रुपए किए गए। श्री कैलाश कल्पित ने पं० केशरी नाथ त्रिपाठी के माध्यम से कराया था।

केन्द्र सरकार के कार्यालयों द्वारा राजभाषा अधिनियम १९६३ व राजभाषा नियम १९७६ के उल्लघन को रुकवाने में तथा भारत सरकार, गृहमंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा हिन्दी के कार्यान्वियन के आदेशों को जारी करवाने में हमारे मंच के सदस्यों के कार्यकलापों का योगदान रहा है। बम्बई में अधिकारियों से मिलकर हिन्दी प्रेमियों को दी गई प्रताड़ना को रुकवाया गया है। "कृपया पत्राचार हिन्दी में करें" मोहरें बनवाकर लोगों के बीच बाँटी गई ताकि भेजे जाने वाले लिफाफों पर, यह मुहर लगाई जा सके। समय-समय पर हिन्दी के लिए संघर्ष करने वाले विद्वानों के भाषण आयोजित किए जाते रहे हैं। १९९२ में अखिल भारतीय अंग्रेजी हटाओ आन्दोलन के अध्यक्ष श्री वेद प्रताप वैदिक का भाषण एक उपलब्धि रहा है। मच के ही एक सक्रिय सदस्य श्री सत्य नारायण उपाध्याय (नागदा जंकशन उज्जैन) के द्वारा हिन्दी के प्रतिष्ठापन हेतु लड़ी जा रही मैदानी लड़ाई भी एक उल्लेखनीय उपलब्धि है। वस्तुतः हिन्दी के प्रचार में मंच अपना योगदान दे रहा है। कश्मीर से कन्याकुमारी तक एवम् कच्छ से कामरूप तक फैले मंच के कार्यकर्त्ता हिन्दी की ज्योति जलाए हुए हैं।

कैलाश कल्पित द्वारा जो बीज १२ वर्ष पूर्व बोया गया था था उसमें अब अकुर फूट रहे हैं। एक व्यस्त साहित्यकार होते हुए भी वे हिन्दी के प्रचार व प्रसार मे आज भी उसी लगन व निष्ठा से लगे हैं जिस निष्ठा से इन्होंने हिन्दी प्रतिष्ठापन मंच की नींव डाली थी। इस बीच उन्होंने कम से कम एक हजार पत्र हिन्दी मंच से विभिन्न कार्यालयो एव अधिकारियो को हिन्दी को प्रतिष्ठा के लिए लिखे उनके इन

पत्रों की एक अलग पुस्तक बन सकती है। चार वर्ष पूर्व उन्होंने हिन्दी मंच की ओर से डॉ० वेद प्रताप 'वैदिक' की पुस्तक 'अंग्रेजी हटाओ : क्यों और कैसे' की १०० प्रतियाँ मँगाकर बाँटी थीं। आपने हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए 'राजकाज हिन्दी संदर्भिका' नामक ग्रन्थ लिखकर दिशा दी कि सरकारी काम किस प्रकार से हिन्दी मे किया जा सकता है। इसकी प्रशंसा पं० कमलापति त्रिपाठी से लेकर अनेक वरिष्ठ शासन अधिकारियों ने की। यही नहीं आपने 'कम्प्लीट बुक आफ इंगलिश लेटर राइटिंग' के समानान्तर 'पत्र लेखन कला' नाम से हिन्दी पत्रों की सम्पूर्ण पुस्तक भी लिखी और प्रकाशित करवाई। इसकी सराहना डा० बाबू राम सक्सेना (भू० पू० कुलपति इला० वि० वि०) ने की इसका नया संस्करण अभी फिर दिसम्बर १९९४ में हुआ है।

७० वर्ष की आयु में भी उनका जोश व कार्य देखकर हमें बहुत प्रेरणा मिलती है। इसी आयु में उन्होंने अपनी व्यंग्य कविताओं का संग्रह 'गाँधी जी का चौथा बन्दर प्रकाशित किया। हमारी कामना है कि हिन्दी के प्रचार व प्रसार में वे अपना योगदान दीर्घायु पाकर देते रहें।

निम्नलिखित परीक्षाओं का माध्यम अंग्रेजी के साथ-साथ अब हिन्दी भी हो गया है।

(१) कर्मचारी चयन आयोग द्वारा ट्रांसमिशन एक्सक्यूटिव (सामान्य एवम् उत्पादन), अवर श्रेणी लिपिक, आशुलिपिक की भरती परीक्षा, आयकर निरीक्षक तथा केन्द्रीय उत्पाद सीमा शुल्क निरीक्षक परीक्षा, तथा विभिन्न मौसम विज्ञान केन्द्रों में "वरिष्ठ प्रेक्षक' की नियुक्ति परीक्षा।

(२) राष्ट्रीयकृत बैंकों के लिपिक संवर्ग तथा परवीक्षाधीन अधिकारियों की भरती परीक्षा।

(३) भारतीय जीवन बीमा निगम एवम् भारतीय साधारण बीमा निगम के लिपिक संवर्ग तथा सहायक प्रशासनिक अधिकारी की भरती परीक्षा।

(४) भारतीय यूनिट ट्रस्ट, भारतीय रिजर्व बैंक की सहायक/अधिकारी वर्ग की प्रतियोगिता।

(५) इन्श्योरेन्स इस्टीट्यूट ऑफ इंडिया, बम्बई की लाइसेंसिएट, बीमा निरीक्षक व बीमा विक्रय एशोशिएट की परीक्षा।

(६) भारतीय चार्टरित संस्थान, नई दिल्ली द्वारा आयोजित "सी० ए०" कोर्स की आरंभिक इण्टर व   परीक्षा

(७) भारत लागत एवम् संकर्म लेखापाल संस्थान, कलकत्ता द्वारा "लागत लेखाकार" कोर्स की प्रारंभिक, इण्टर और फाइनल परीक्षा।

(८) भारतीय कम्पनी सचिव संस्थान, नई दिल्ली द्वारा "कम्पनी सचिव" पाठ्यक्रम की प्रारंभिक, इण्टर व फाइनल परीक्षा का माध्यम।

(९) रेल परिवहन संस्थान, नई दिल्ली द्वारा आयोजित "रेल परिवहन तथा प्रबन्ध कोर्स की परीक्षा।

(१०) भारतीय स्टील प्राधिकरण की प्रबन्ध प्रशिक्षु (प्रशासन) की भरती परीक्षा।

(११) भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थानों की प्रवेश परीक्षा।

(१२) एम० बी० बी० एस० कोर्स की केन्द्रीकृत प्रवेश परीक्षा।

(१३) भारतीय विदेश व्यापार संस्थान की प्रवेश परीक्षा।

(१४) राष्ट्रीय इंडियन मिलिट्री कालेज, देहरादून की प्रवेश परीक्षा।

(१५) प्रशिक्षण पोत राजेन्द्र की नेवीगेशन कोर्स तथा डी० एम० ई० टी० कलकत्ता के समुद्री इंजीनियरिंग कोर्स की प्रवेश परीक्षा।

(१६) नागर विमानन मंत्रालय द्वारा पायलेट प्रशिक्षण की प्रतियोगिता परीक्षा।

(१७) केन्द्रीय आरक्षित बल की सहायक उपनिरीक्षक (लिपिक) परीक्षा।

(१८) भारती तिब्बत सीमा पुलिस द्वारा उपनिरीक्षकों (रेडियो तकनीशियन) की प्रतियोगिता परीक्षा।

(१९) केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल के द्वारा आयोजित उपनिरीक्षक (कार्यपालक) की भरती परीक्षा।

(२०) राष्ट्रीय विमान प्राधिकरण द्वारा संचालित विमान क्षेत्र सहायक और तकनीकी सहायक की भरती परीक्षा।

(२१) भारतीय औद्योगिक वित्त निगम, नई दिल्ली की लिपिक व टंकक की भरती परीक्षा।

(२२) राष्ट्रीय ताप विद्युत निगम द्वारा हिन्दी भाषी क्षेत्रों में आयोजित प्रशिक्षु पर्यवेक्षक (डिप्लोमा होल्डर्स) की चयन परीक्षा।

(२३) विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली एवम् भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा संचालित "कनिष्ठ शोध छात्रवृत्ति परीक्षा।

(२४) कृषि वैज्ञानिक नियुक्ति मंडल, नई दिल्ली द्वारा उच्चस्तर की कृषि वैज्ञानिक अनुसंधान सेवा की भरती परीक्षा।

(२५) होटल प्रबन्ध संस्थानों की संयुक्त प्रवेश परीक्षा।

(२६) राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली द्वारा चलाए जा रहे शैक्षिक एवम् व्यवसायिक मार्ग-दर्शन डिप्लोमा कोर्स की प्रवेश परीक्षा।

(२७) परमाणु ऊर्जा विभाग द्वारा "क" व "ख" क्षेत्रों में भरती परीक्षा व साक्षात्कार।

(२८) विभिन्न राज्य उपचायी परिषदों द्वारा नर्सिंग की भरती व शिक्षा का माध्यम।

(२९) थल सेना, वायु सेना "शिक्षा अनुदेशक" पदों की भरती परीक्षा।

(३०) भारतीय बैंकर संस्थान, बम्बई द्वारा संचालित एसोशिएट परीक्षा।

(३१) केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग, दूरसंचार विभाग द्वारा कनिष्ठ अभियंता की नियुक्ति परीक्षा।

(३२) नौ सेना गोदीबाड़ा बम्बई की अप्रेन्टिस स्कूल की प्रवेश परीक्षा।

(३३) भारतीय मानक संस्थान, नई दिल्ली की भरती परीक्षा।

(३४) सीमा सुरक्षा बल की सहायक कमान्डेन्ट, उपपुलिस निरीक्षक, भरती कमांडर पदों की भरती परीक्षा।

(३५) भारतीय प्रशासनिक सेवाओं की प्रतियोगी परीक्षा।

(३६) भारतीय नौसेना की नौसैनिक, भारतीफिशियर भरती परीक्षा।

(३७) भारतीय तटरक्षक दल की नाविक की भरती परीक्षा।

(३८) योजना एवम् वास्तुकला विद्यालय, नई दिल्ली की प्रवेश परीक्षा।

(३९) सचिव, पुर्नवास परिषद, नई दिल्ली की प्रवेश परीक्षा।

(४०) सशस्त्र सैन्य चिकित्सा कालेज, पुणे द्वारा आयोजित एम० बी० बी० एस० पाठ्यक्रम की प्रवेश परीक्षा तथा साक्षात्कार।

(४१) थल सेना में सर्वेयर आटोमेटेड कारटोग्राफर पद की लिखित परीक्षा।

(४२) भारतीय खान विद्यापीठ, धनबाद की बी० टेक० की प्रवेश परीक्षा।

(४३) मानसिक अपंगता का राष्ट्रीय संस्थान, मानव विकास नगर, बोवेन पल्ली, सिकन्दराबाद का मानसिक अपंगता डिप्लोमा पाठ्यक्रम की शिक्षा का माध्यम।

(४४) भारतीय जीवन बीमा निगम की एक्चुरियल प्रशिक्षु परीक्षा।

(४५) जवाहर लाल पोर्टट्रस्ट, बम्बई तथा कलकत्ता पत्तन न्यास की "प्रबन्ध प्रशिक्षु" की भरती परीक्षा।

ALL INDIA KICHEN GARDEN ASSOCIATION

Allahabad Unit, 16 Sulem Sarai, Ph. No. 633338

President
Prabha Bhargava Dated 29-12-94

आदरणीय कल्पित जी,

आपकी पुस्तकें आपके गंभीर अध्ययन-मनन एवं आस्था-विश्वास की सूचना देती हैं। भाषा और शैली प्रशंसा के योग्य है। आप अपने संकल्प की पूर्ति में निरन्तर अग्रसर रहें, इस हार्दिक शुभकामना के साथ,

प्रभाभार्गव

---

(४६) काशी हिन्दू विश्वविद्यालय द्वारा एम० बी० बी० एस० की प्रवेश परीक्षा।

(४७) भारतीय वायु सेना द्वारा वायुसैनिकों के तकनीकी ट्रेडों की भरती परीक्षा।

(४८) राष्ट्रीय अग्नि महाविद्यालय नागपुर की "सब आफिसर" की प्रवेश परीक्षा।

(४९) बम्बई पोर्ट ट्रस्ट की "अभियंत्रिकी प्रशिक्षु" की भरती परीक्षा व साक्षात्कार का माध्यम।

(५०) एयर इण्डिया में विमान परिचारिकाओं की भरती परीक्षा।

(५१) कलकत्ता पत्तन न्यास द्वारा "प्रबन्ध प्रशिक्षु" की चयन परीक्षा व साक्षात्कार।

(५२) रेल वाणिज्य व्यावसायिक पाठ्यक्रम की भरती परीक्षा का माध्यम तथा पाठ्यक्रम के दौरान होने वाली परीक्षा का माध्यम।

तथा

(५३) इंस्टीट्युशन इंजीनियर्स इंडिया, कलकत्ता द्वारा आयोजित ए० एम० आई० ए० पाठ्यक्रम की सेक्शन ए० बी० स्टूडेन्टशिप की परीक्षा।

पी २५/४, एस० पी० डी० सी०
कालोनी मानखुर्द बम्बई—४०००८८

गांधी जी के तीन बन्दरों का

पुरातत्व एवं समकालीन संदर्भ

—डॉ० जगदीश गुप्त

मैं स्वयं चौथा बन्दर नहीं बनना चाहता था जैसे मेरे अनुज कवि-मित्र श्री कैलाश कल्पित बन गये। उन्होंने अपने को उसी रूप में मानकर व्यंग्यात्मक कविता लिखी जिसका शीर्षक है "गांधी जी का चौथा बन्दर" यही नहीं कविता संग्रह का नाम भी यही रखा। कम के कम मैं ऐसा नहीं कर पाया इसका मुझे खेद है। उनकी ७०वीं वर्षगाँठ पर यह लेख उपहार के रूप में समर्पित करने का मन हो रहा है।

सामान्यतया यही माना जाता है कि गांधी जी से सम्बद्ध तीनों बन्दर तीन प्रधान ज्ञानेन्द्रियों के संयम की प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति हैं तथा वे गांधीदर्शन से न केवल सम्बद्ध हैं वरन् उसी की प्रेरणा से उत्पन्न भी हुए हैं। पर यह बात वास्तविक नहीं है। गांधी जी के जन्म से बहुत पहले भारतीय शिल्प में यह धारणा मूर्तिमान हो चुकी थी। उसे विदेशी मानना भी सही नहीं है।

मुँह, आँख और कान को हाथों से बन्द कर लेने की मुद्रा किस बात को व्यक्त करती है यह भी सर्वथा स्पष्ट नहीं है फिर बन्दरों को ही इस प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति के लिए मुख्य आधार क्यों माना गया यह भी सहज ग्राह्य नहीं है। इन्द्रियों की ग्राह्यशीलता पर अनुशासन अभीष्ट है, ऐसा तभी माना जा सकता है जब अवांछित की कल्पना मूल में हो और वातावरण तथा मन दोनों को शुद्ध रखना अभीष्ट हो। यह कार्य हाथों के प्रयोग के बिना भी हो सकता है पर ऐसे प्रतीक की कल्पना में हाथ कम महत्त्वपूर्ण नहीं है। इससे लगता है कि मानसिक संयम से अधिक ज्ञानेन्द्रिय निरोध का प्रदर्शन अधिक महत्त्वपूर्ण है। लोगों को ऐसा करने की प्रेरणा देना मुख्य है, स्वयं अनुभव करना बाद की बात है। "नर" को आधार बनाने की जगह विकास क्रम मे उसके मूल रूप "वानर" को इसलिए चुना गया होगा कि अनुकरण की प्रवृत्ति में वह मनुष्य से अधिक कुशल माना जाता है। वैसे इस क्षेत्र में भी मनुष्य ने बन्दरों को विज्ञान की सहायता से बहुत पीछे छोड़ दिया है। बन्दर आदिम प्रवृत्ति के द्योतक माने जाते है, कदाचित इसीलिए उन्हें यह महत्त्व दिया गया है, ऐसा भी सोचा जा सकता है। पर मेरे विचार से लीलाभाव को अधिक प्रभाव के साथ व्यक्त करना कलाकार का प्रधान अभीष्ट रहा होगा इसके लिए आवश्यक है कि परम्परा का सही ज्ञान हो। उपनिषदों और बौद्ध जातकों तक जाया जा सकता है। परन्तु गांधी अथवा गांधीवाद से ही इस प्रतीक को सम्बद्ध मानना ठीक नहीं है।

गांधी जी से पहले का प्रमाण—

मुझे मध्य प्रदेश के दुर्ग जिले में स्थित राजनांदगाँव से उपलब्ध ऐसा ही शिल्प देखने को मिला जो १६वीं-सत्रहवीं शताब्दी का कहा जाता है। उस समय गांधी जी का जन्म भी नहीं हुआ था। लगता है गांधी जी ने इसमें अपने अनुकूल अर्थ खोज लिया और अपने उपयोग की वस्तुओं में स्थान दे दिया। ''पेपरवेट'' जैसा उपयोग माना जा सकता है पर राजनाँद गाँव से प्राप्त तीनों बन्दर अलग-अलग शिल्पित हैं। कल्पना में अवश्य वे परस्पर सम्बद्ध तथा अखण्ड अनुभव के द्योतक हैं। कहीं एक हाथ कहीं दोनों हाथों का उपयोग भी यही सिद्ध करता है कि कल्पनाशीलता का अभाव नहीं रहा, इस प्रतीक के निर्माण में।

रायपुर संग्रहालय मे मैंने इसे ५ जुलाई, सन् १९७४ में रेखांकित किया और साथ ही परिचय पुस्तिका (कैटेलॉग) भी ले लिया। सुधीजनों को यह संदर्भ रोचक लगेगा। वे इसे पुरातत्त्व से लेकर नृतत्त्व तक ले जा सकते हैं और गांधी जी से सम्बन्ध की खोजबीन भी कर सकते हैं जो मैंने नहीं की। कम्पित जी की कविता है—

गांधी जी का चौथा बन्दर

बुरा देखना नहीं चाहता,
किन्तु बार-बार लोगों की बुराई ही
सामने आ जाती है।
मेरा मुँह टेढ़ा हो जाता है।
मेरी आँखें विस्फारित हो जाती है।

बुरा सुनना नहीं चाहता
किन्तु बार-बार लोगों की बुरी कहानियाँ
सुनने को मिलती हैं।
मेरा मुँह टेढ़ा हो जाता है।
मेरे कान खड़े हो जाते हैं

बुराई कहना नहीं चाहता
पर क्या करूँ?
अपने प्रभावी कारनामों से
मेरी आँखों में कोई
धूल झोंक रहा है
कोई केवल इसलिए मुझे
गालियाँ दे रहा है कि

मैं उनके झण्डे की लाली के नीचे नहीं हूँ
और हां
किसी का कोपभाजन मैं इसलिए भी हूँ
कि मैं न तो उनके कट्टर सम्प्रदाय का हूँ
और न जाति का।
वे छिछली राजनीति खेलते हैं
मेरा मुँह टेढ़ा हो जाता है।

मैं खरगोश के कानों से सुनता हूँ
दूरबीन से देखता हूँ और
ध्वनिविस्तारक यन्त्र से बोलता हुआ
गांधी जी का चौथा बन्दर बन जाता हूँ।

जिस तरह कविता में व्यंग्यात्मकता उभरकर आयी वैसे ही गांधी जी के तीन बन्दर व्यंग्य-चित्रों के सृजनात्मक आधार बने और यह अनिवार्य नहीं रहा कि मुद्राओं के साथ वही व्यक्ति बना रहे। अलग-अलग व्यक्ति उन्हीं बानरी मुद्राओं में निरूपित हुए हैं जो असाधारण रूप से रोचक हैं। "संडे आब्जर्वर" के एक अंक में इसी प्रतीक को समकालीन राजनीति को दृष्टि में रखकर नया रूप दिया गया है। जैसे-- जगमोहन को न देखो। जॉर्ज की न कहो। मुफ्ती की न सुनो। "राष्ट्रीय सहारा" नामक दैनिक समाचार पत्र मे हर्षद को मत देखो, हर्षद की न सुनो, हर्षद पर न बोलो। इस देश में हुए विडम्बनापरक घोटाला काण्ड से उपजा है जिसने सभी को झखझोर दिया और आज तक उसका कोई समाधान नहीं है। एक अन्य साप्ताहिक पत्र में बन्दर के स्थान पर स्वयं गांधी जी को ही विभिन्न मुद्राओं मे प्रस्तुत किया गया है और पीछे के परिदृश्य में असहनीय उपद्रव दर्शाया गया हैं। पूरा चित्रण दगे में उपजी आग की लपटों और धुएँ के बादलों से भरा है। इसके साथ जो नाटकीय लेख प्रकाशित हुआ है उसका शीर्षक है "राजीव के राज में गांधी का आना।" पूरा लेख पठनीय है, किन्तु परिचय के लिए कुछ अंश नीचे दिये जा रहे है।—

किस्सा पिछले महीने का है। दिन था दो अक्टूबर। स्थान राजघाट। रामधुन का समाँ बँधा था। पक्ष-विपक्ष के नेतागण वगैरह बापू की समाधि पर फूल चढाकर श्रद्धांजलियाँ अर्पित कर रहे थे कि अचानक गड़गड़ाहट के साथ उनकी समाधि हिलने लगी। इसे आतंकवाद का नया शिगूफा समझकर सब आतंकित हो उठे। तभी समाधि पर लिखे "हे" और "राम" के बीच एक दरार पड़ने लगी। उस दरार में से चरखा कातते हुए बापू प्रकट हुए।"

जनता की बातें सुनकर गांधी जी बड़े दुःखी हुए। फिर मुस्कराकर बोले, "मैंने पहले ही कहा था कि सरकार पर पूरी तरह निर्भर मत रहो। तुम सरकार पर निर्भर रहे, इसीलिए उसने तुम्हारा तेल निकाल लिया। तुम्हारा शोषण इसलिए होता है कि तुम शोषण का विरोध नहीं करते हो। अँधेरा-अँधेरा चिल्लाने से तो अँधेरा दूर नहीं हो जायेगा। इसको दूर करने के लिए प्रकाश की व्यवस्था तो तुमको ही करनी होगी। आँखें खोलकर सोने वालों जागो। बापू अपनी लठिया टेकते हुए खडे हुए और कदम बढ़ाते हुए बोले, "एक बात बताओगे? तुम लोग इन धार्मिक नेताओं की राजनीति के चंगुल में क्यों फँसते हो? इन्होंने धर्म को वेश्या बना दिया है और खुद दलाल बने हैं। तुम इन दलालों के चक्कर में अपनी शक्ति धन और भावनाओं का दुरुपयोग क्यों होने देते हो?

"हमें यह सोचना है कि इस गांधी को क्या सबक सिखाएँ। इसने तो जनता के सामने हमारी पोल खोल दी। हमारी चूलें हिला दीं। जनता का हम पर जो थोडा-बहुत विश्वास था उसे भी डिगा दिया। जनता भी इसी की बात मान रही है। बताइये, इससे कैसे छुटकारा पाया जाए। अगर हमने तुरन्त कोई कदम नहीं उठाया तो जनता हमारे हाथ से निकल जाएगी।

"उसे उसी समाधि में गाड़ दो जिससे वह बाहर निकला था," एक पहलवान-नुमा आदमी नाराजगी से बोला।

"तुम भी पहलवान हद करते हो कभी तो अक्ल को स्तेमाल किया करो। गांधी जी की समाधि को उनकी कब्र कैसे बना दें? जनता हमें मार डालेगी। दर-असल सारी गलती रिचर्ड एटनबरो की है वरना भारत की जनता खासकर युवा वर्ग और बच्चों को तो गांधी जी की जय-जयकार के सिवा कुछ पता नहीं था। लेकिन जबसे "गांधी" फिल्म रिलीज हुई और टी० व्ही० पर दिखाई गयी, बच्चा-बच्चा जान गया कि गांधी जी कौन थे और उन्होंने देश के लिए क्या-क्या किया? "रिचर्ड एटनबरो को भी उसके साथ उसकी कब्र में दफना दो।" पहलवान गहरी नफ़रत से बोला। सर्व धर्म दंगा आयोजन समिति का एक सदस्य मेज पर जोर से हाथ पटकते हुए बोला, "यू० पी०, बिहार और मध्य प्रदेश दंगे करवाने की दृष्टि से बहुत उप-योगी है।

हमें "बहुमत का निर्णय मान्य है" वे लोग मिमियाते हुए समवेत स्वर में बोले और सभा विसर्जित हो गई।

> अब पता चला है कि बिहार में पिछले दिनों जो दंगे हुए उनमें करने वालों में एक आदमी ऐसा भी था जिसका [illegible] लया गांधी से मिलता था। क्या वह गांधी जी ही थे।"

धीरे-धीरे यह प्रतीक 'मोटिफ' बन गया यानी इसमें देश-काल का अतिक्रमण करते हुए लोक-कल्पना स्वच्छन्द रीति से इसका व्यवहार करने लगी। फलतः अनेक कला रूप और अनेक प्रकार की अभिव्यक्तियाँ इससे जुड़ गयीं। केवल गांधी जी के मूल अभिप्राय तक यह प्रतीक सीमित नहीं रहा।

"सफ़र" शीर्षक से मुश्ताक नामक एक कलाकार ने कदाचित् "जनसत्ता" मे इन्हीं बन्दरों को एक नया तुलनात्मक रूप दिया जिसकी मुझे कोई कल्पना नहीं थी। होठों पर ताला बना दिया गया, आँखों की पलकों को सिल दिया गया और कान ऐसे दिखाये गये है कि उन्हें स्वर असहनीय हो गया हो। तीनों मुख अलग-अलग चित्रित करके शिव की त्रिमूर्ति की तरह एकात्म रूप में परिकल्पित किये गये है। श्री शंकरदयाल सिंह के आवास पर मैंने इस प्रतीक का जो रूप देखा उसमें बंदर के स्थान पर तीन बालक ही बना दिये गये हैं जिनमें कान बंद करने की मुद्रा पहले, चुप रहने की मुद्रा बाद में और आँख बन्द करने की मुद्रा अन्त में प्रदर्शित की गयी है।

गांधी संग्रहालय पटना में सम्पूर्ण क्रान्ति के विशेष अधिवेशन मे प्रसिद्ध पत्रकार एवं "प्रयाग परिमल" के बहुमुखी आन्दोलन के साथ कई दशकों तक जुड़े रहने वाले श्री जितेन्द्र सिंह ने मुझे आमंत्रित किया तो मैंने वहाँ भी तीन बन्दरों की विशाल मूर्तियाँ देखीं जिनका क्रम इस प्रकार था—पहले वाक् संयम, फिर दृश्य संयम और अन्त मे श्रवण सयम निरूपित देखा एवं स्वयं तत्काल रेखांकित कर लिया। इस तरह पिछले लगभग दो दशकों में मेरा मन गाधी जी के बन्दर नचाते रहे जब मैं अहमदाबाद गया तो पहली बार साबरमती आश्रम का साधना केन्द्र मुझे अभिभूत कर गया। गांधी जी का जीवन-क्रम, क्रियाविधि, विचार-सूत्र और अनेक छायाचित्रों एवं कलात्मक चित्रो मे उनकी छवियाँ बोलती रहीं और मैं एकान्त भाव से उन्हें सुनता रहा, जब चलने लगा तो एक रुपये में गांधी जी के तीन बन्दर सन्देशवाहक के रूप मे मेरे साथ लग लिये, कितने वर्षो तक और कितने रूपों में मेरे भीतर समाये रहे। पिछले २१ अक्टूबर '९४ को जब मैं दिल्ली में उनके समाधि-स्थल पर पहली बार भाई जितेन्द्र जी की प्रेरणा से पहुँचा तो मैंने यह निश्चित कर लिया कि वह अधूरा लेख पूरा करके ही प्रयाग मे उनका स्वागत करूँगा क्योंकि वे इधर अंग्रेजी में एक पत्रिका निकाल रहे हैं और मेरे हिन्दी लेख को अपने ढंग मे स्वयं अनुदित करके प्रस्तुत करने का सुख लेंगे। "परिमल प्रयाग" की आत्मीयता इस रूप में फलेगी कि "पटना परिमल" नये रूप मे सजीव हो उठेगा।

नागवासुकी, दारागंज
इलाहाबाद-६

हिन्दी तथा हिन्दी साहित्य को समर्पित व्यक्तित्व

पन्नालाल गुप्त 'मानस'

स्नेहसिक्त, श्रद्धालु एवं निरंतर छाया की भाँति, किसी के साथ लम्बे समय तक रहते हुए, जब उसके कृतित्व एवं व्यक्तित्व के बारे में कोई लिखने बैठता है तो चलचित्र की भाँति मानस-पटल पर अंकित हुए विचार स्वयं लेखनी के माध्यम से कागज पर पंक्तिबद्ध होने लगते हैं। मैंने ऐसे मनीषियो के संस्मरण अनेकानेक लिखे हैं जिनके सम्पर्क मे अपने जीवन के बहुमूल्य क्षणों को व्यतीत किया है। संस्मरण खट्टी-मिट्ठी यादों की शृंखला का पर्याय ही है। जब किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व के बारे मे लिखा जाता है तो उसकी कथनी तथा करनी अथवा कही और अनकही कहानियों की शृंखला का एक भाग होता है। यह वास्तव में एक दर्पण भी होता है।

व्यक्ति द्वारा पूर्व में कुछ कहे गये, कुछ किए गये, कुछ सुनी गई जैसी क्रियाओ को शृंखलाबद्ध करके, लिपिबद्ध किया जाता है तो प्रतीत होता है कि उस व्यक्ति ने जाने या अनजाने मे कुछ ऐसे कृत्य किए थे जो उसे आज याद भी नहीं हैं और बाद में जब वह सुनता है तो उसके आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहता है। दिवंगतात्माओ के संस्मरण जहाँ आदर्श स्वरूप होते हैं, वहीं मार्ग-दर्शक भी होते हैं। किन्तु जीवित मनीषियों के संस्मरण उन्हें जहाँ रोमांचित करते है, वहीं आह्लादित भी करते हैं।

उक्त विचारों के परिप्रेक्ष्य में अपने अभिन्न मित्र और लब्ध-प्रतिष्ठ साहित्यकार भाई कैलाश कल्पित के साथ व्यतीत किये गये विगत ३७ वर्षों के संस्मरण मेरे मानस-पटल पर उभरकर, चलचित्र की भाँति चलने लगे हैं, जिन्हें उनके ७० वें वर्षगाँठ पर लिपिबद्ध करने मे आनन्द की अनुभूति हो रही है। कदाचित्, इसको पढ़कर पाठक प्रेरित होंगे और किंचित मार्ग-दर्शन उन्हें मिल सका तो इन पंक्तियों का लेखक अपने को धन्य मानेगा।

यूँ तो मैं कल्पित जी को वर्ष १९५० से उनके लेखनी के माध्यम से जानता था और 'कल्पना' पत्रिका का प्रकाशन जब वे कर रहे थे तब से उनकी लेखन-शैली से परिचित था। परन्तु सान्निध्य १९५८ से तब हुआ जब उनकी पुस्तक 'साहित्य के साथी' मेरे समाज के ही एक व्यक्ति, श्री हीरा लाल साह ने, इनकी पुस्तक को क्रय करके, एक उत्सव में पारितोषिक के रूप मे वितरित करने का मुझसे आग्रह किया। इसके पश्चात तो हम दोनों एक-दूसरे की लेखनी के कायल हो गये। उस समय कल्पित जी चक मुहल्ले के एक मकान में रहा करते थ

वैसे मैं उनके कार्यालय में उनसे बराबर मिलता रहा, जहाँ सर्वश्री रामविलास गुप्त (चित्रकार), राजाराम शुक्ल, राजेन्द्र तिवारी, बाबूलाल 'सुमन', विजय कुमार श्रीवास्तव आदि (सभी कवियों) से भी परिचय बढ़ा। ऐसा लगा कि ए० जी० आफिस के पश्चात् डी० आर० एम० आफिस में साहित्यिक परिवेश अधिक है; क्योंकि इतने सारे साहित्यकार एक साथ, एक ही कार्यालय में कार्य कर रहे थे। कल्पित जी अपने को, साहित्य जीवन मे रखकर, कुन्दन बना रहे थे। वे छः पुत्रों और एक पुत्री के पिता बन चुके थे साथ ही वे बराबर साहित्य के भण्डार को भर रहे थे और मजे की बात तो यह कि वे स्वयं 'पारिजात' प्रकाशन का संचालन भी कर रहे थे। कार्यालय मे ही वे पुस्तकें रखते और ऐसे लोगों के हाथ बेचते थे जो साहित्य से रुचि रखते थे। इसके अतिरिक्त कुछ रेलवे के उन कर्मचारियों को भी क्रय करने के लिए प्रेरित करते थे, जो उनके पास दिल्ली, अलीगढ़, टुण्डला, कानपुर आदि से आया करते थे।

कल्पित जी आज से दो दशक पूर्व तक अभावों में जीवन व्यतीत कर रहे थे अर्थात् तब तक, जब तक कि बेटे सामर्थ्यवान नहीं हुए थे। आज एक कोठी में रहने वाले कल्पित जी की तुलना यदि पहले के कल्पित जी से की जाय तो जमीन-आसमान का अन्तर मिलेगा।

मुझे याद है कि कल्पित जी का पत्नी का निधन सन् १९६६ में हुआ था। लोगों को जैसे ही यह समाचार मिला, सैकड़ों लोग एकत्रित हो गये। अर्थी उठाने की योजना बनाने लगे। कुछ उन्हें धैर्य बँधाने लगे। परन्तु कल्पित जी को मैंने देखा कि तनिक भी विचलित नहीं थे। वे बराबर कहते रहे, "यद्यपि जीवन साथी उठ गया परन्तु विधि विडम्बना के आगे हम सभी लाचार हैं।" उस समय उनके सभी बेटे-बेटी अबोध थे। इसके कुछ वर्ष बाद ही उनके पिता, फिर माता और एक पुत्र का भी निधन अचानक हो गया। इसे भी उन्होंने ईश्वर की मर्जी ही मानी। अन्य कोई होता तो टूट जाता। परन्तु कल्पित जी ने इस हार को भी जीत में परिणित कर दिया और उन्हीं दिनों उन्होंने एक कविता लिखी—"हार में जो जीत है वह जीताजीना चाहता हूँ" अब वे बच्चों के लिए, माता पिता, दोनों ही हो गये। आर्थिक विपन्नता के होते हुए, कल्पित जी ने कभी किसी के सामने हाथ नहीं फैलाया। लेखनी को अविरल चलाते रहे, और सरकारी कोष से वेतन के साथ-साथ वे लेख कहानियों और पुस्तकों की रचना करके अपना तथा अपने बेटों-बेटी का जीवन-यापन करते रहे।

इसी बीच वे बहादुरगंज में स्थित अपने ज्येष्ठ भ्राता के मकान में बाल-बच्चो सहित रहने लगे। यहाँ भी एक जर्जर और सीलन भरे मकान में नीचे एक छोटे से कमरे में रहकर वे साहित्य सृजन करते रहे। शनैः शनैः बच्चों की पढ़ाई और फिर विवाह से निवृत्त हुए। बच्चों ने व्यवसाय शुरू किया और वे अपने कार्यालय से भी

मुक्त हुए। अब एक मुक्त जीवन वे बिताने लगे। किन्तु इस जीवन को उन्होंने हिन्दी तथा माँ-भारती को समर्पित कर दिया।

एक बात की मैं दाद उन्हें देना चाहूँगा कि उन्होंने अपने सरल, सरस, उन्मुक्त, निष्कलुष विचारों के कारण इलाहाबाद के सभी महान साहित्यकारों से बराबर अपने को जोड़ रखा। फिर चाहे वे निराला रहे हों, चाहे पंत जी, चाहे महादेवी वर्मा रही हो चाहे डा० रामकुमार वर्मा, चाहे इलाचन्द जोशी, चाहे डा० हरदेव बाहरी रहे हो, चाहे डा० उदय नारायण तिवारी या डा० जगदीश गुप्त, और डॉ० मोहन अवस्थी समस्त साहित्यकारों से जुड़े रहे। यही नहीं आज भी अपने सम-वयस्क साहित्यकारो समकालीन लगभग के भी वे प्रिय हैं और उनके लेखन से पं० महेश नारायण शुक्ल व प्रेमशंकर गुप्त जैसे न्याय मूर्ति भी प्रभावित हैं।

कल्पित जी को इस बात की सदा चिन्ता रही कि भारत स्वतन्त्र हो गया और आज तक हिन्दी अपने घर में प्रवेश नहीं पा सकी। अतः उन्होंने हम लोगों से मिल कर 'हिन्दी प्रतिष्ठापन मंच' की स्थापना की और वर्ष १९८३ में संत शिरोमणि ब्रह्मलीन प्रभुदत्त ब्रह्मचारी के नेतृत्व में एक मौन जुलूस मुट्ठीगंज से निकालकर चौक में, ऐतिहासिक नीम के नीचे, एक विशाल सभा की। इसके बाद तो फिर वह अभियान छेड़ा गया कि हिन्दी को सरकारी तंत्रों में स्थान दिलाया जाय एवं जन-साधारण को प्रेरित किया जाय कि वे अपने प्रतिष्ठान का समस्त कार्य हिन्दी में ही करें। इस मंच ने अनेक नियुक्ति की परीक्षाओं में हिन्दी को मान्यता दिलाई और डा० कैलाश नाथ पाण्डेय के सहयोग से आज यह मंच भारत के हिन्दी प्रचार में वह कार्य कर रहा है जो हिन्दी का दम भरने वाली बड़ी संस्थाएँ भी नहीं कर रही हैं।

लगभग ढाई दर्जन पुस्तकों के प्रणेता कल्पित जी ने साहित्य को कुछ देने के लिए, कभी-कभी अपनी पत्नी के आभूषणों को भी बेच दिया। बस, धुन तो धुन ही है। यदि मनुष्य में धुन या कर्मठता न हो तो वह कुछ भी नहीं कर सकता। समसामयिक मुद्दों पर भी उन्होंने 'आग लगा दो' या 'गांधी जी का चौथा बन्दर' जैसी पुस्तक का प्रणयन किया और 'चारुचित्रा' उपन्यास ने तो मानो कल्पित जी को सब कुछ दे दिया। 'शुभ्रा', युगबोध, स्वराज जिन्दाबाद, वैज्ञानिक गोरिल्ला उपन्यासो के अतिरिक्त, काला साहब गोरी मेम, राख और आग, इण्डिया रिटर्न, सितारे अँधेरे के, प्रतीक मानवता के कहानी संग्रह एवं साहित्य के साथी, साहित्य साधिकाएँ, साहित्यकारों के संग ईन्टरव्यूज़ की पुस्तकें आज चर्चित हैं। 'सृजन-पथ के पत्र' पत्रों के दर्पण से शरतचन्द्र', 'रवीन्द्र पत्रांजलि', 'पत्र -लेखन-कला' जैसे पत्र-साहित्य अपने-आप में उनकी लेखनी को उजागर करते हैं। रवीन्द्र गीतांजलि एवं पत्रांजलि, इन्द्र बेला और नागफनी अनुभूतियों की अजन्ता गीत गरिमा आदि पुस्तकों के अतिरिक्त

अद्भुत प्रतिभा के धनी

कैलाश कल्पित

डॉ० प्रभाकर द्विवेदी 'प्रभामाल'

गरल पिया जिसने जीवन भर
फिर भी ओठों पर मुस्कान
चोटों पर चोटें खा कर भी
कभी न तजा दीन ईमान
सतत राष्ट्र भाषा सेवा रत
पूर्ण लगन हिय, तन मन प्राण
सम्मानित सम्मान हो जिससे
होगा नित उसका सम्मान

अध्यापक आवास कालोनी
कु० आ० डिग्री कालेज, इलाहाबाद

नाटक, बाल साहित्य, जीवनी, निबन्ध (चिन्तन अनुचिन्तन) आदि को भी उन्होंने जम कर लिखा।

कल्पित जी मे बनावट नाम की कोई भी चीज नहीं है। प्रारम्भ से आज तक वे 'सादा जीवन उच्च विचार' को अपना रहे हैं। सारी सुविधाएँ होते हुए पर्यावरण प्रदूषण से दूर साइकिल को उन्होंने ६५ वर्ष की आयु तक नहीं छोड़ा। पाखण्ड से भी वे दूर रहते हैं। कभी भी मन्दिर-मस्जिद में जाने अथवा गंगा जी में गोता लगाने से सम्भवतः इस कारण परहेज रखते हैं कि उन्होंने कर्म में विश्वास को अपना ध्येय बना लिया है। ऐसी कोई गोष्ठी या हिन्दी की सभा को नहीं छोड़ते जिसमें साहित्य अथवा हिन्दी के पक्ष की बात होने को हो। तभी तो इस कर्मठ व्यक्तित्व ने हिन्दी साहित्य संस्थान से जहाँ कहीं पुरस्कार प्राप्त किये, वहीं अन्य छोटे-बड़े पुरस्कारों को लेकर उनको गौरवान्वित करता रहा। अनेक संस्थाओं ने कल्पित जी का अभिनन्दन करके अपने को अभिनन्दित किया। सम्प्रति, वे हिन्दुस्तानी एकेडेमी के मानद सदस्य हैं और लेखनी को विराम नहीं दे रहे हैं। ऐसे प्रेरक व्यक्तित्व को हम उसके ७० वें जन्म दिन पर बधाई देते हैं।

४०, सराय खुल्दाबाद, इलाहाबाद

साहित्य महोपाध्याय
डा. प्रताप नारायण वर्मा
विद्यावाचस्पति (पी. एच. डी.)

सम्पादक
अवध-पुष्पांजलि
साहित्यिक एवं सामाजिक लोक प्रिय पत्रिका

श्री कैलाश कल्पित शतायु हों।

हिन्दी जगत, विशेष कर राष्ट्र भाषा के क्षेत्र का बिरला ही कोई व्यक्ति होगा जो कैलाश कल्पित के नाम से परिचित न हो। लखनऊ में २५ जनवरी १९२५ को जन्मे, पर इलाहाबाद नगर को अपनी कार्य स्थली बनाने वाले श्री कैलाश कल्पित माँ भारती के एक ऐसे सपूत है जिन पर हिन्दी प्रेमियों को गर्व है। उन्होंने हिन्दी के लिये अपना सारा जीवन ही अर्पित कर दिया है। हिन्दी साहित्य का कोई ऐसा क्षेत्र नहीं है जिस पर उन्होंने अपनी कलम न चलाई हो, वे कहानीकार, उपन्यासकार' कवि, साक्षात्कारकर्ता आलोचक सभी कुछ है। उनके चर्चित उपन्यासों में 'चारुचित्रा' व 'युग बोध' की साहित्य जगत में भूरि भूरि प्रशंसा हुई है। उनके कहानी संग्रह 'सितारे अंधेरे के' को यशपाल नामित पुरस्कार मिला है। वे अनेक बार उ० प्र० हिन्दी संस्थान द्वारा पुरस्कार प्राप्त कर चुके हैं। उनकी एक नई पुस्तक 'सृजन-पथ के पत्र' मे लगभग सभी प्रतिष्ठित साहित्यकारों के पत्र प्रकाशित हुये हैं—यह एक अनूठी पुस्तक है।

श्री कैलाश कल्पित 'अवध-पुष्पांजलि' से आरम्भ से ही जुड़े हैं। वे हमारी परामर्शदात्री समिति के एक मान्य सदस्य हैं और वे समय-समय पर अपना मार्गदर्शन देते रहते हैं। उन्हें कुछ वर्ष पूर्व बस्ती की संस्था कला भारती संस्थान द्वारा सम्मानित किया जा चुका है और लखनऊ के श्री पर्व पर भी वे सम्मानित हुये हैं।

कल्पित जी आज ७० वर्ष के हो रहे हैं। थोड़ा बड़ा होने के नाते मैं उन्हें आशीर्वाद देने का हक रखता हूं। ईश्वर से कामना है कि कल्पित जी शतायु हों और माँ भारती का भंडार अपनी रचनाओं द्वारा भरते रहें।

प्रतापनारायण वर्मा
लखनऊ

२०-१२-९४

मंगल-कामना

माननीय कुशवाहा जी !

सप्रेम वन्दे !

मन-मयूर आनंदाभिभूत हो नर्तन कर उठा यह जानकर कि 'श्री कैलाश कल्पित अभिनंदन समारोह समिति' के तत्वावधान मे श्री कल्पित जी की ७०वीं वर्षगाँठ पर २५ जनवरी १९९५ को उन्हे सम्मानित करने के क्रम में आप लोगों ने एक स्मारिका भी प्रकाशित करने की योजना बनाई है। हिन्दी साहित्य जगत में कवि, कथाकार एव उपन्यासकार के रूप में सुपरिचित श्री कल्पित जी के सम्मानार्थ यह सारस्वत प्रयास स्तुत्य है और आप सभी साधुवाद के पात्र हैं।

हिन्दी सेवियों एवं प्रेमियों के लिये २५ प्रकाशित पुस्तकों के प्रणेता 'श्री कल्पित जी' एक सुपरिचित नाम है। इस क्षेत्र मे उनकी सेवाएँ सराहनीय एवं उपलब्धियाँ श्लाघनीय हैं जिनके लिए उन्हें 'हिन्दी संस्थान, लखनऊ' से अनेक बार सम्मानित भी किया जा चुका है।

श्री कल्पित जी मुट्ठी भर निहित स्वार्थी बुद्धिजीवियों एवं मत-केन्द्रित-सत्ता लोलुप राजनीतिज्ञों के षडयंत्र एवं उपेक्षा की शिकार तथा आज तक भी भारतीय संविधान में प्रदत्त निज मान महत्त्व तथा स्थान-सम्मान को प्राप्त न कर सकने वाली राष्ट्र भाषा हिन्दी के प्रबल समर्थक एवं प्रखर प्रचारक हैं। राष्ट्रभाषा हिन्दी के उत्थान के तथा उद्धार के लिये वे पूर्ण प्रयत्नशील है। वे केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद दिल्ली के आजीवन सदस्य हैं। उन्होंने अखिल भारतीय हिन्दी प्रतिष्ठापन मच इलाहाबाद जिसकी शाखाएँ बम्बई व अलवर में भी हैं, के संस्थापक हैं और इसके महामंत्री के रूप मे भी हिन्दी की सेवा कर रहे है।

श्री कल्पित जी की उनकी सत्तरहवीं वर्षगाँठ पर मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ कि वे दीर्घायु हों ताकि दीर्घावधि तक राष्ट्रभाषा हिन्दी तथा हिन्दी साहित्य की सेवा अपनी उर्वरा प्रतिभा तथा बहु आयामी रचनाधर्मिता के द्वारा करते हुए यश अर्जित करे तथा उदीयमान साहित्यकारों को प्रेरणा एवं प्रोत्साहन प्रदान करते रहें। प्रभु से प्रार्थना है कि उनकी कीर्ति-पताका दिग्दिगन्त में फहरे।

प्रतिष्ठा में,
श्री अजित कुशवाहा
संयोजक
श्री कै० क० अ० स० समिति
गोविन्द भवन, शिवचरण लाल रोड
इलाहाबाद-३

शुभाकांक्षी—
मेघा सिंह चौहान
सम्पादक
आदर्श कौमुदी [हि० मा०]
निकट रेलवे स्टेशन
नजीबाबाद बिजनौर
उ० प्र०

सुनील चन्द्र जैन

अधिवक्ता उच्च न्यायालय

उपाध्यक्ष
भारतीय जनता पार्टी
महानगर प्रयाग

प्रिय अजीत जी

सप्रेम नमस्ते,

सम्मानीय श्री कैलाश कल्पित जी की ७० वीं वर्षगांठ पर अभिनन्दन मंजूषा प्रकाशित कर आप अभिनंदनीय कार्य कर रहे हैं। श्री कल्पित जी शतायु हों एवं यह अभिनंदन मंजूषा स्मरणीय एवं प्रेरणादायक हो यही ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ।

महाकवि निराला, पंत, महादेवी, इलाचन्द्र जोशी, रामकुमार वर्मा, फिराक गोरख पुरी, उपेन्द्र नाथ अश्क, नरेश मेहता आदि अनेक मनीषियों के बीच श्री कल्पित जी ने अपनी साहित्य साधना को नई दिशा दी। पुरस्कारों एव सम्मानों की चिंता न करते हुये श्री कल्पित जी ने व्यवस्था एवं सत्ता पर निर्भीकता के साथ अपनी प्रतिक्रियाएँ व्यक्त कीं। हाल में ही प्रकाशित श्री कल्पित जी की 'गांधी जी का चौथा बन्दर' नामक काव्य-संग्रह में आजादी के बाद की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक व्यवस्थाओं पर करारा व्यंग्य किया गया है।

साहित्य साधना के साथ-साथ श्री कल्पित जी का हिन्दी प्रेम अद्वितीय है और इसी क्रम में वह युवा हिंदी सेवियों, कवियों, साहित्यकारों को सदैव प्रोत्साहित करते रहते हैं। उनका सम्पूर्ण जीवन अनुकरणीय, अभिनंदनीय हैं। मेरा उनके चरणों में नमन।

श्री अजित कुशवाहा
संयोजक

शुभ कामनाओं सहित
भवदीय
सुनील चन्द्र जैन

'अनुभूतियों की अजन्ता'

डा० शिवमंगल सिंह सुमन [भू० पू० कुलपति, विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन]

आपकी पुस्तक 'अनुभूतियों की अजन्ता' का परायण कर गया। समाप्त करते करते सुख मिला, आस्थाजनित आनन्द भी.........। आपकी मौलिकता तो 'मेरे सृजन की पहचान' से प्रारम्भ होती है। इन रचनाओं में एक चुभन है, जिसे वही महसूस कर सकता है, जिसके पैर मे कभी बिवाई फटी हो। आपकी आस्था को सार्थक करने के लिये इतना ही पर्याप्त है कि—

आकाश में सितारों की शक्ल के बहुत से सूरज हैं।

रोशनी के लिये—
एक दीपक ही पर्याप्त होता है
बशर्ते वह अपने हाथ में हो।"

'सामर्थ की बात' और 'पहचान की उपलब्धियों में', शोध के सन्धान की व्यग्रता बडो सजीव बन गई है। 'एक और लेनिन की तलाश' और 'नयी लेबोरेट्री को आवश्यकता' में ताजगी भी है और चुनौतियाँ भी। 'मैं और मेरा मदारी' का व्यंग्य बड़ा सटीक है; निराला के कुकुरमुत्ते की तरह।...'वैज्ञानिकों से' नामक रचना में आपने काव्य धर्म को जिस रूप में व्याख्यायित किया है, वह अनूठा भी है और मार्मिक भी। रूपक, प्रतीक और बिम्ब भी अपनी अपनी जगह सार्थक हैं, जैसे 'वर्षा की बहुरिया' आदि में, पर इस संग्रह की सबसे करुण कविता है—'पत्नी की याद'। इसमें अतल मूक-करुणा अंतर्निहित है। एक मर्मभेदी कसकन। निशान्त सहज प्रतीकों में मनोव्यथा की अकथनीय व्यंजना।

अरूपा की व्यथा : बटलोही का एक चावल

साहित्य वाचस्पति डा० किशोरी लाल गुप्त,
एम० ए०, पी० एच० डी०, डी० लिट०

सरोज सर्वेक्षण जैसे विशाल शोधग्रन्थ से लेकर 'तुलसी और और तुलसी' जैसे खोजपूर्ण ग्रन्थों के प्रस्तोता डा० गुप्त इस लेख में कैलाश कल्पित के काव्य संग्रह गीत-गरिमा की एक कविता 'अरूपा की व्यथा' से कवि की परिपक्वता को परख रहे हैं।

गीत गरिमा में कुल ६४ गीत हैं। ये गीत निम्नांकित श्रेणियों में विभक्त हैं—अभिमन्त्रित गीत (२६) प्यार और प्रणय के गीत (३४) व्यथा और वियोग के गीत (१३) श्रद्धा के गीत (६) स्नेह सौरभ के गीत (६)

मुख पृष्ठ पर इन्हें 'जीवन के विभिन्न परिवेशों से संपृक्त' कहा गया है। मुख पृष्ठ पर ही कवि के ये चरण हैं–

गीत वह, संगीत में जो ढल सके
प्रीत वह जो मीत का मन हर सके
जीत वह जो जीत ले सब का हृदय
रीति वह जो बिंब युग का बन सके।

इनमें कविता और गीत के प्रति कवि के विचारों की अभिव्यक्ति भली-भाँति हो गई है। ये गीत युग का बिंब हैं, संगीत में ढले हुए हैं, मनहर हैं, और सबका हृदय जीत लेने वाले हैं।

चावल पक कर भात हो गया है या नहीं, यह जांचने के लिये हम बटलोही के एक-दो चावलों को परखते हैं। उंगली से दबाकर देखते हैं कि वह चुर गया है अथवा नहीं। हर चावल की परीक्षा नहीं की जाती। उसी प्रकार हम यहाँ 'गीत गरिमा' के केवल एक गीत की परख करने जा रहे हैं। यह परख यह सिद्ध करने में सक्षम होनी चाहिये कि कैलाश कल्पित जी कितने वास्तविक हैं, कितने कल्पित, कितने यथार्थ है, कितने भाव-प्रवण हैं, कितने संगीतमय हैं, कितने उदार हैं।

यह गीत है 'अरूपा की व्यथा' (पृष्ठ ६२)। रूप की चाह सर्वत्र है सामान्यता रूप के साँचे में ढली कोई एक रूढ़ परिभाषा नहीं हो सकती। जिसे एक सुन्दर समझता है, दूसरा उसे सामान्य समझ सकता है, जो सामान्य सुन्दर है उसी को कोई अति सुन्दर समझ सकता है। इसी दृष्टि से महाकवि बिहारी ने कहा है–

समै समै सुन्दर सबै, रूप कुरूप न कोय
मन की रुचि जेती जितै तित तेती रुचि होय

फिर भी सुन्दरता का एक सामान्य सम्मान्य रूप तो है ही, जिसे अधिकाश लोग सुन्दर कह देते हैं। रूप की दृष्टि से तीन श्रेणियाँ हैं--

(१) सुरूप-सुन्दर रूप (२) अरूप-रूपहीन, रूप विहीन; सौन्दर्य के सामान्यस्तर से कुछ गिरा हुआ और (३) कुरूप-बुरारूप, विकलांग।

सुरूपा, अरूपा, कुरूपा सभी के चाहने वाले लोग हैं। सबका अपना अपना स्तर है। कुरूपा को चाहने वाला कुरूप ही होगा। इसीलिए लोक की उक्ति है--- डइने रीझा भूत। डाइन पर रीझने वाला भूत ही होगा। डाइन को उस भूत की निगाह से देखिये, अपनी निगाह से नहीं। सामान्यतया लोग अपने से अधिक सुन्दर की ओर ही आकृष्ट होते हैं।

'अरूपा' भले ही 'सुरूपा' न हो, पर वह कुरूपा नहीं हैं। ऐसी ही एक अरूपा की व्यथा इस गीत में व्यक्त हैं। सुरूपा हो कि अरूपा, अथवा कुरूपा ही क्यों न हो, सब का मन समान रूप से रंगीन होता है, सब के मन के अपने-सपने होते हैं। सपने तो सपने ही हैं, वे अपने कब होते हैं। मन का रंगीन सपना जीवन के कटु सत्य की चट्टान पर चकनाचूर हो जाता हैं–

रंगीन रही मेरे मन की माया जितनी
उतना ही कटु निज जीवन का ऐतार्थ रहा
जितना तरसी सुख पाने को मेरी काया
उतना ही लोगों ने मुझसे निज स्वार्थ दुहा

उस अरूपा को लोग ठगते रहे, जिसको वह अपना जीवन-साथी बनाने को समझ रही थी, उसने भी उसे मीठी-मीठी बातें करके लूटा ही–

जिसको समझी बन पायेगा जीवन-साथी
उसने ही मीठी बातों से मुझको लूटा
शृंगार कर रही थी लेकर जिस दर्पण को
बरबस मेरे हाथों से वह दर्पण छूटा

होने को उस अरूपा का विवाह भी हो गया; पर उसका रंगीन मिजाज-पति उसे यौवन का सुख नहीं दे सका, क्योंकि वह अपरूपा सुरूपा नहीं थी–

मैं छली गयी हर बार लिये सपने कोरे
आँखों के डोरे लाल, लाल न हो पाए
था भाग्य हमारा किसी उर्मिला का जैसा
परिणय पाकर भी जो प्रिय पी को न पाये।

नर-नारी की समानता की बातें करने वाले बहुत हैं। वास्तविकता यह कि ये सभी कोरी बातें हैं, निस्सार हैं। लोग तन का सौन्दर्य देखते हैं मन का नहीं–

कितना अन्तर है नर-नारी की काया में
कहने को क्षमता की बातें कुछ भी कर ले
लंबी चौड़ी बातें करने में क्या लगता
बातों में हमने फेंके नहले पर दहले
पर बात, बात है, बातों की क्या बात करें
है सच यह, मुझको अपना चाहा मिला नहीं
काया का रोचन लखने वाले बहुत मिले
पर मन की सुन्दरता का दृष्टा मिला नहीं।

होली, दीवाली, कजली-तीज उसके लिए सभी व्यर्थ हैं। सावन मे वह प्रिय के गले नही लगी, माघ-पूस में ठिठुरती रही। वह पाषाणी हो गई और किसी तरह अपने शरीर की रक्षा करती आ रही है–

आया था सावन, चला गया बिन गले मिले
मैं रात-रात भर माघ-पूस में ठिठुराई
पाषाणी काया की अब मैं संरक्षा हूँ
मेरे आगे मत चिल्लाओ होली आयी।

कवि लोग सुन्दरी, यौवनमतो नायिकाओं की सृष्टि करते आए हैं, उन्हीं के प्रेम, प्यार, प्रणय के गीत गाते आए हैं, कोई कुरूपा नायिका हो ही नहीं सकती। नायिका तो वह जिसके देखते ही चित्त मे रस-भाव उत्पन्न हो जाये।

उमगति जाहि वियोग मे, चित्त बीच रस-भाव
ताहि बखानत नायका, जे प्रवीन कविराव

–मतिराम, रसराजछंद

कल्पित जी की दृष्टि अरूपा के रूप पर न जाकर उसके तन की माया पर गई है। यह उनकी यथार्थता, उदारता, युगानुरूपिता का स्पष्ट प्रमाण है। कवि की सहज सहानुभूति के द्वार सब के लिए समान रूप से खुले रहते हैं। आलंबन को अपना आश्रय स्वयं ढूँढ़ लेने की आवश्यकता है।

'अरूपा की व्यथा' की वस्तु काव्य-जगत के लिए नवीन विषय है। इसने काव्य-जगत की सीमा का विस्तार किया है। 'गीत-गरिमा में अनेक गरिमामय गीत हैं। यहाँ एक ही गीत की चर्चा पर्याप्त है। कवि अपने गरिमामय गीतों के लिये बधाई का अधिकारी है। ●

सुरेश बाराणसी

सद्यः प्रकाशित

श्री कैलाश कल्पित की तीन पुस्तकें

एक समीक्षात्मक दृष्टि

डा० रामप्रसाद मिश्र, दिल्ली

रवीन्द्र पत्रांजलि

'रवीन्द्र-पत्रांजलि' ('रवीन्द्र-गीतांजलि' से संपृक्त किन्तु स्वतंत्र ग्रन्थ) में प्रसिद्ध साहित्यकार श्री कैलाश कल्पित ने विश्वकवि के सी० एफ० एंड्रयूज को लिखे गये पत्रों का प्रात्ययिक अनुवाद प्रस्तुत किया गया है। केवल अंतिम पत्र पियर्सन के नाम है। एंड्रयूज के नाम अधिकांश पत्र विदेशों से लिखे गये है तथा पियर्सन वाला पत्र शांतिनिकेतन से लिखा गया है। पत्रों का समय १६ अगस्त १९१३ से ४ जुलाई १९२२ तक प्रसरित है। ये पत्र रवीन्द्र के जीवन की सबसे महत्वपूर्ण दस वर्षीय अवधि का अमूल्य दर्पण कहे जा सकते हैं। इनमें उनके एकांतप्रेमी सहज रूप तथा कोलाहलपूर्ण सम्मान-समारोहों की औपचारिकता, दयनीय देशदशा तथा संपन्न पश्चिम की यांत्रिकता, स्वाभाविक देशप्रेम तथा सजग गौरांग-विश्व के सम्मान-लाभ, शिक्षा, संस्कृति के विविध पक्षों इत्यादि के द्वन्द्व तथा विचार व्यक्त किये गये हैं। रवीन्द्र के पत्रों में कीट्स या आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के पत्रों-जैसी अनौपचारिकता एवं अंतरंगता का नितान्त अभाव है—ये एक विश्वविख्यात कवि एवं विचारक के सुनियोजित पत्र हैं। फिर भी, उनका महत्त्व स्पष्ट हैं क्योंकि वे एक महान् साहित्यकार के पत्र हैं, जो विश्वभारती शांतिनिकेतन का संस्थापक एवं नियामक भी था।

श्री कैलाश कल्पित का अनुवाद सफल है, क्योंकि वह अनुवाद लगता ही नही अनुवाद की सफलता है उसका अनुवाद न लगना। भाषा मानक होते हुए भी सरल एवं बोधगम्य है। रवीन्द्र के व्यक्तित्व को समझने के लिए 'रवीन्द्र-पत्रांजलि' एक अत्यंत उपयोगी ग्रन्थ है।

रवीन्द्र गीतांजलि

'रवीन्द्र-गीतांजलि' (प्रथम संस्करण मार्च १९६१, द्वितीय जून १९९४) में विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर (१८६१-१९४१ ई०) की विश्वविश्रुत कृति (नोबेल प्राइज १९१३ ई०) का सुन्दर और बोधगम्य अनुवाद दृगत होता है। श्री कैलाश कल्पित ने अनुवाद में अनेक वृत्तों का सक्षम प्रयोग किया हैं। अंत्यानुप्रास के विविध प्रयोग भी उल्लेख्य है। शब्दचयन में सावधानी बरती गई हैं। आरंभ में निराला, पंत, रामकुमार वर्मा, वृन्दावनलाल वर्मा, इलाचन्द्र जोशी, रामविलास शर्मा जैसे ऐतिहासिक महत्त्व के साहित्यकारों की सम्मतियाँ ग्रन्थ की उपयोगिता को उजागर करती हैं। "प्रथम की भूमिका में अनुवाद की प्रेरणा तथा भाषा वर्तनी प्रवृत्ति

पर प्रकाश डाला गया है। अंत में गीतों की प्रथम पंक्तियों, रवीन्द्र के उपयोगी परिचय तथा उनके विराट् सृजन में से काव्य विधा के ग्रन्थों का विवरण दिया जाना निस्सन्देह लाभदायक है – इनसे सुविज्ञजन भी अनेक तथ्यों से अवगत होते हैं।

गीतांजलि ने वामन बनकर तीनों लोक माप डाले थे। प्रकाशन-दशाब्दि में यह विश्व की सर्वाधिक चर्चित पुस्तक रही। अंग्रेजी में होते हुए भी, इसने समग्र भारतीय उपमहाद्वीप को प्रभावित किया। वैश्विक दृष्टि से इसके एक-एक वर्ष में अनेक संस्करण निकले, राष्ट्रीय दृष्टि से इसने भारतीय भाषाओं के साहित्यों को स्वच्छन्दतावाद (रोमैन्टिसिज्म, छायावाद, प्रतीकवाद) एवं रहस्यवाद के रस से सराबोर कर दिया। रवीन्द्र ने भारतीय अद्वैतवाद, विशेषतः कबीर (जिनकी सौ कविताओं का अंग्रेजी-अनुवाद कृतज्ञ रवीन्द्र ने 'वन हंड्रेड पोएम्स ऑफ कबीर' के रूप में किया था) के मधुर-रहस्यवाद, का पाश्चात्य रहस्यवाद से समन्वय करते हुए उसमें ईसाई सेवावाद-मानवतावाद का लाभकर समन्वय करते हुए' आत्मा-परमात्मा के मधुर सम्बन्धों, मानवीय एकता, श्रम-गरिमा प्रभृति के जो पावन गान गाये, वे उन्हें अमर कर चुके हैं (किन्तु अजर प्रायः नहीं क्योंकि यथार्थवादी युग में उनका प्रायः ऐतिहासिक महत्त्व ही रह गया है)। गीतांजलि का साहित्यिक महत्त्व अपार रहा है, किंतु उसका समग्रतः ऐतिहासिक महत्त्व अद्वितीय है। हिंदी के लिये रवीन्द्र अपने-जैसे हैं क्योंकि उन्होंने कबीर की आत्मा को विद्यापति के शरीर में अवतरित किया है! 'वृक्ष' और 'तरु' की बाण भट्ट पुनर्द्वय-कथा का साकार- रूप! कठिन कार्य! एक ऐसे महाकवि की एक ऐसी अमर कृति का सफल अनुवाद निस्सदेह प्रशसनीय है।

गांधी जी का चौथा बन्दर

'गांधी जी का चौथा बन्दर' (१९९४ ई०) श्री कैलाश कल्पित की २३ ऐसी विविधशैलीगत कविताओं का संग्रह है जिसमें देश की दयनीय दशा के कारण उत्पन्न कुंठा, आक्रोश, व्यथा इत्यादि को व्यंग्य के माध्यम से व्यक्त किया गया है। देशदुर्दशा (नया राष्ट्र गान, दुरंगा झंडा), विभाजन-व्यथा (खत बहन फातिमा का), देश-व्यथा (सचमुच अपना देश महान), राष्ट्रपतन (नाक की बात), उग्रतम हिन्दीप्रेम (बदलती हवा, कवितादशा (गुरुडम का दीवाला, मेरी नई कविता, होली पर्व : एक महालंठई कविता) इत्यादि की कवि-पीड़ा का अनुशीलन करने पर प्रतीत होता है कि कवि रोने से बचने के लिये हँसता है। 'गदहेपन की अनुभूति' स्पष्ट हास्य कविता है, क्योंकि शीर्षक व्यंग्य के लिए स्थान नहीं छोड़ रहा, किन्तु इसके तल में भी व्यथा विद्यमान हैं। कवि ने पाखंड के 'नंगेपन का रेखांकन' निष्ठापूर्वक किया है। 'गांधी जी का चौथा

न्दर' गधे जैसे कानों वाला (बहुत सुनने वाला), दूरबीन से देखने वाला और ला
पीकर पर दहाड़ने वाला है, निस्संदेह, युग दशा पर यह चुभता हुआ व्यंग्य है।

हास्य में हम दूसरे या दूसरों के साथ मिलकर हँसते हैं, परिहास में हम दू
ा दूसरों पर हँसते हैं, व्यंग्य में हम किसी दोष पर सूक्ष्म प्रहार करते हुये हँसते ह
ल्पित जी की कविताएँ तीनों का समन्वय करती लगती है, यद्यपि उनमें व्यंग्य
धानता है। कविताएँ बहुत मार्मिक हैं। इनमें हृदय की ज्वाला को व्यंग्य के प्रक
ा रूप प्रदान किया गया है। इस स्तर की व्यंग्य-कविताएँ बहुत कम दिख
ती हैं।

संग्रह पठनीय, मननीय एवं संग्रहणीय है।

१४ सहयोग अपार्टमेंट्स
मयूर विहार (प्रथम) दिल्ली-

"गाँधी जी का चौथा बन्दर" पर कुछ शब्द

माननीय अटल बिहारी बाजपेयी जी के

गाँधी जी का चौथा बन्दर—देखा, पढ़ा, पसन्द आया बधाई।

व्यंग की धारा को और पैना करें, व्यंग चुभना भी चाहिए और गुदगुदाना भी चाहिए।

अटल बिहारी बाजपेयी

कल्पित जी की कविताओं में व्यंग्य के स्वर

कृष्णेश्वर डींगर

आज का दौर मूल्यहीनता का है। चारित्रिक गिरावट, सम्प्रदायवाद, जातिवाद, हिंसा, अपराध, बलात्कार, भ्रष्ट आचरण इत्यादि आधुनिक भोगवादी अपसंस्कृति के आवश्यक अंग बनते जा रहे हैं। ऐसे वातावरण में यदि कोई कवि इन विषम परिस्थितियों को अभिव्यक्त करने में तटस्थ रह जाता है तो मैं समझता हूँ कि वह न तो समाज के प्रति न्याय करता है, और न कविता के प्रति। अभिव्यक्ति के स्वर भिन्न हो सकते हैं और व्यंग्य ऐसी प्रतिक्रिया को अभिव्यक्त करने का एक सशक्त और अनूठा माध्यम होता है। श्री कैलाश कल्पित ने साहित्य की लगभग सभी विधाओं में सृजन किया है। उनकी कविताओं में राजनीतिक मूल्यहीनता, सामाजिक अन्याय, दोगलापन, चारित्रिक गिरावट आदि पर व्यंग्यात्मक ढंग से, तीव्र प्रहार दृष्टिगत होता है। उनके काव्य संग्रह अनुभूतियों की अजन्ता की अनेक कविताओं मे तथा व्यंग्य एवं युग सापेक्ष कविताओं के संग्रह 'गांधी जी का चौथा बन्दर' में व्यग्य के स्वर जहाँ बाण लगने जैसी चुभन देते है वहीं आक्रोश और विद्रोही तेवर भी स्पष्ट रूप से झलकते हैं। ऐसी गुदगुदाहट भी महसूस होती है जो ओछा हास्य न होकर कुछ सोचने को मजबूर कर देती है।

'गांधी जी का चौथा बन्दर' यद्यपि २३ व्यंग्य कविताओं का छोटा संग्रह है, किन्तु उसकी कविताएँ 'देखने को छोटी लगे घाव करें गम्भीर' को चरितार्थ करती है। उदाहरणार्थ 'नया राष्ट्र-गान' शीर्षक कविता देखने में 'सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ता हमारा' की पैरोडी लगती है, किन्तु इसी एक कविता में आधुनिक भारत का सम्पूर्ण चित्र खींच दिया गया है। हमारे राजनीतिज्ञों की अशिक्षा और धूर्तता, हमारा आर्थिक दीवालियापन, अंग्रेजियत का वर्चस्व, आतंकवाद, पाखंड, अप संस्कृति का सचार माध्यम से प्रचार सिद्धान्तहीनता, गरीबी और शोषण इत्यादि सब कुछ इसी कविता में अद्भुत ढंग से प्रस्तुत किया गया हैं। धर्म के नाम पर क्या हो रहा है, देखें :—

> धर्म स्थलों में पहले होती थी प्रार्थनाएँ,
> अब अस्लहे भरे हैं फटता है बम करारा।
> मजहब सिखा रहा है, आपस में बैर रखना,
> हर सिम्त छूटता है नफरत भरा शरारा।
> सारे जहा से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा,
> बौने हैं देश के हम चमचों का है सहारा।
> सारे जहाँ से अच्छा........।

आजकल बुद्धिवादी बनना बहुत आसान हो गया है। 'इण्टेलेक्चुअल बनने का नुस्खा' में कल्पित जी ने ऐसे बनावटी लोगों पर जम कर प्रहार किया है :-

> आओ भाई काफी हाउस चलें।
> हम भी एक बुद्धिवादी हैं
> लोगों में डेक्लेयर करें।

आत्मश्लाघा का इतना अच्छा उदाहरण कहाँ मिलेगा। इतना ही नहीं, इस कविता में वह सारे लटके मिल जाएँगे जो लोग बुद्धिवादी बनने के लिए अपनाते हैं जैसे कुछ पश्चिमी विचारकों और साहित्यकारों की चर्चा करना दूसरों की रचनाओं की हँसी उड़ाना, अपने देश के महान साहित्यकारों को न समझते हुए भी उनकी आलो-चना करना इत्यादि।

व्यंग्य रचनाओं पर प्रायः यह दोष लगाया जाता है कि सामयिक घटनाओं पर आधारित होती हैं अतः उनमें शाश्वत मूल्यों का अभाव होता है। कल्पित जी की रचनाओं में ऐसा नहीं है। 'खत बहन फातिमा का भाई मोहम्मद अली जिन्ना के नाम', शीर्षक कविता सामयिक घटनाओं पर आधारित है। वह तब लिखी गयी थी जब अय्यूब पाकिस्तान के प्रेसीडेन्ट थे यानी पाकिस्तान बनने के लगभग अट्ठारह वर्षों बाद। उसी समय कवि ने लिख दिया था :-

> मशरकी पाक अब अकड़ता है
> एक आजाद मुल्क बनने को
> वह नई करवटें बदलता है।

अन्ततः वही बात हुई। बंगला देश बन कर रहा। कवि की दूरदर्शिता प्रशंस-नीय है।

कवि ने अपनी रचनाओं में राजनीतिज्ञों, देश के कर्णधारों और बुद्धिजीवियों पर ही व्यंग्य नहीं किया है वरन् अपने पाखंडी कवि मित्रों, कला प्रेमियों को भी नहीं छोड़ा है। 'अनुभूतियों की अजन्ता' की कविताएँ 'कवि कील का षडयंत्र, 'कलात्मक अभिरुचि दर्शाने की तैयारी' शीर्षक जैसी कविताएँ इनका श्रेष्ठ उदाहरण है। वे लिखते हैं :-

> 'कील' की प्रतिभा का-
> षडयन्त्र सार्थक हुआ
> 'कील' की कील घर-घर में गड़ गयी
> दीवालों मेजों और अखबारों में तो
> गड़ी ही
> अनगिनती लोगों की आँखों में चुभ गई।

पृष्ठ १०० का शेष]

इस प्रकार हम देखते हैं कि कल्पित जी ने अपनी कविताओं में अद्भुत ढंग से व्यंग्य का आश्रय लेकर देश, समाज और व्यक्ति में व्याप्त विसंगतियों को हमारे सम्मुख उघाड़ कर रख दिया है। स्वयं विष पी कर अत्यन्त विनम्र भाव से वह कहते हैं :—

मैं महाराणा नहीं चित्तौड़ का हूँ
किन्तु फिर भी मानसिंह जैसा नहीं हूँ
समय का परिवेश बिल्कुल दूसरा है
दूसरा सुकरात बनकर जी रहा हूँ।

विश्रान्ति
२३/४७/७५ एफ किदई नगर
अल्लापुर
इलाहाबाद

बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी

रमेशचन्द्र द्विवेदी

कैलाश कल्पित को इधर उधर से बहुत देखा है। कभी कभी सुनने का भी मौका मिला है। मेरी एक आदत है आदमी के ऊपरी प्लास्टर को कुरेदकर उसके भीतर झांकना। यह काम बड़ा मजेदार भी है और बड़ा ही जानलेवा भी है। हो सकता अन्दर बहुत कुछ हो लेकिन दिखाई कुछ भी न पड़े। हो सकता है भीतर कुछ भी न हो और बहुत ढेर सी चीजें दिखाई पड़ जाँय। बड़ा ही खतरनाक काम है व्यक्ति के व्यक्तित्व में छलांग लगाने की चाह या प्रवृत्ति। लेकिन यह काम करने की जैसे मुझे चाट पड़ गई हो इस काम में एक बहुत बड़ी दुर्घटना यह हो सकती है कि आप स्वयं उस महासागर व्यक्तित्व में ऐसे डूब जाँय कि उबरना भी मुश्किल हो जाय और अपने को भी गँवा बैठे जैसे परमाणुओं का पता लगाने वाला आजका भौतिक विजयी।

मैं अभी कैलाश कल्पित के महासागर अगाध जल राशि व्यक्तित्व के किनारे पहुँचा ही था, कि तट की मिट्टी की घुलावट ही ने मुझे डुबो दिया। मेरी चेतना पूर्ण रूप से जलमग्न हो गई। भले महाकवि के उदधि की गहराई थहाने और किनारे ने ही मुझे समुद्र की अतल गहराईयों के दर्शन करा दिये। प्राण बचाना मुश्किल हो गया। मगर डूब के पार हो गया। बिना डूबे पार पाना असम्भव ही था। कल्पित जी के व्यक्तित्व की कई तहें हैं, कई रूप है। समुद्र को जिस समय देखिये नए नए रूप बदलता रहता है। सदा नवीन होता रहता है' चिर नवीन है, हर तह पर प्रत्येक स्वर पर। बाहर से चीखता, चिल्लाता, कयामत उठाता हुआ भयंकर नाद करता हुआ कल्पित उदधि के अतस् में उतरा तो देखा कि वहाँ एक बालक अपनी मुस्कुराहट बिखेर रहा है, वहाँ अपार शांति है' वहाँ परमात्मा का शयन-कक्ष है। कोलाहल नाम की चीज जैसे है ही नहीं। किसी विचार गोष्ठी में किसी व्यक्ति को ईमानदारी से, स्पष्टवादिता से, तटस्थता से, अभय स्वर में बोलते हुए सुनें तो समझ लीजिये कि कैलाश कल्पित जी बोल रहे हैं। उन्हें न किसी को प्रसन्न करना है न किसी को दुःखी। उन्हें तो अपने गंभीर सुचिन्तित, सुनियोजित और खतरे की हद तक स्पष्ट रूप से विचार पहुँचाने होते हैं दूसरों तक। और यह शायद इसलिए है कि लोगों में सही ढंग से, बिना लाग लगाव के, सीधे तरीके से सोचने की और बोलने की दबी हुई प्रवृति जग जाय या उभर कर सामने आये और व्यक्तित्व के सारे आन्तरिक बंधन अगर खुल न सकें तो कम से कम ढीले जरूर पड़ जाएँ।

शेष पृष्ठ १०४ पर]

कथाकार श्री कैलाश कल्पित

—डा० विजयानन्द

मुझे जानकर अत्यन्त आत्मानन्द की अनुभूति हुई कि चर्चित साहित्यकार श्रीयुत-कैलाश कल्पित जी की सत्तरहवीं वर्षगांठ भरपूर जोश के साथ संयोजित हो रही है। निःसन्देह अपनी सात दशकीय जीवनयात्रा एवं लगभग चार दशकीय साहित्य यात्रा में श्रीयुत कल्पित जी ने साहित्य को अन्यान्य अवदान दिये हैं।

कल्पित जी कविता, कहानी, नाटक, साक्षात्कार, उपन्यास, पत्र आदि विधाओं के समर्थ रचनाधर्मी रहे हैं। उनका कथाकार व्यक्तित्व तो निश्चित रूप से चर्चा योग्य है। उनके उपन्यास-चारुचित्रा, युगबोध, स्वराज जिन्दावाद, शुभ्रा, तथा कहानियाँ 'सितारे अंधेरे के' राख और आग काला साहब गोरी मेम, इण्डिया रिटर्न एवं प्रतीक मानवता के, उनके कहानीकार व्यक्तित्व का उपालम्भ प्रस्तुत करतीं हैं।

कल्पित जी का कथा साहित्य केवल मध्यवर्ग ही नहीं वरन् उच्च एवं निम्न वर्ग के कथान्वेषण को केन्द्रित करता चलता है। आदर्शात्मक जीवन, सामाजिक मर्यादाएँ, उत्सर्ग की धारणा, शोषण, अराजकता, बौद्धिक एषणाएँ, भारत की धरती की सोंधी गन्ध, संगीत तथा साहित्य के विविध प्रतिरूप आदि उनकी साहित्य रचना के प्राणतत्व हैं। उनका कथा साहित्य चुम्बक की तरह पाठक को आकर्षित करती है और कथान्त के बाद ही चैन मिलता है।

वस्तुतः उनके कथा साहित्य पर साहित्य जगत में और चर्चा की आवश्यकता है। दर्द और विषाद की कारुणिक आख्या करती उनकी कहानियाँ हृदय तल को स्पर्श कर लेती हैं। श्री कैलाश कल्पित जी का समूचा साहित्य पठन-पाठन योग्य है।

डा० विजयानन्द
नेशनल स्टेडियम, नई दिल्ली

'गांधी जी का चौथा बन्दर' और रवीन्द्र नाथ की 'गीतांजलि' तथा चिट्ठियों का अनुवाद पाकर आन्तरिक प्रसन्नता हुई। निश्चय ही चौथा बन्दर पहले तीन बन्दरों से ज्यादा बुद्धिमान है।

ये व्यंग्य कविताएँ पीड़ा और देश-भक्ति को शक्तिशाली ढंग से उजागर करती हैं।

विष्णु कान्त शास्त्री

आचार्य हिन्दी विभाग कलकत्ता विश्वविद्यालय

[पृष्ठ १०२ का शेष]

कल्पित जी का साहित्य, उनके जीवन और चिंतन की भाँति ही गंभीर है। साहित्य की प्रत्येक दिशा में, चाहे कविता हो (कविता की चाहे जो विधा हो) कहानी हो, उपन्यास हो, हास्य हो, व्यंग्य हो, चिंतन हो, दर्शन हो, कल्पित जी की गहरी पैठ है। प्रत्येक रूप में पूर्ण कल्पित की छाप है। प्रत्येक रूप में साहित्य की आत्मा अपने पूर्ण निखार, पूर्ण आभा, पूर्ण सौन्दर्य, अबाध प्रेम, सरसता और माधुर्य विश्वजनीनता और लोकहित की भावना में नहाई हुई नजर आती है। कल्पित जी साहित्य के जिस पहलू को स्पर्श करते हैं उसे सजीव कर देते हैं। उनके अन्तर की करुणा पाषाण में भी प्राण प्रतिष्ठा कर देती है। वे सत्य के पुजारी हैं। उनमें न आग्रह है, न पूर्वाग्रह है और ना ही दुराग्रह। उनके सत्य से किसी को चोट लगे तो लगे, उनके सौन्दर्य बोध मे किसी को अपनी कुरूपता झलक जाय तो झलक जाय. उनका शिवत्व किसी दानवता के लिए अभिशाप बने तो बने, उनकी करुणा कठोरता के स्वभाव को समूल उखाड़ फेंके तो फेंके, उनका साहित्य उनका व्यक्तित्व, उनका चिंतन लोगों के मानस में उभरती हुई कुण्ठाओं के आपरेशन करने का नश्तर है—अगर हम इसे ठीक से समझ जाएं तब। उनकी कहानी "पिता" पढ़कर मेरी बेटी की और मेरी आँखें डबडबा आई थीं। कल्पित जी का व्यक्तित्व और साहित्य सदा बहार है सदा सोहाग है। वे दीर्घ जीवी हों, हमें रुलाते रहें हमे हसाते रहें और अमर साहित्य की रचना करते रहें। कविधर्म के निर्वाह की साधना में अग्रसर होते रहें।

३५/१३ जवाहर लाल नेहरू रोड
इलाहाबाद

साहित्यकार का दायित्व

डा० श्रीमती प्रेम भार्गव
उपाध्यक्षा अखिल भारतीय हिन्दी प्रतिष्ठान मंच, बम्बई

साहित्य और समाज का अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है।

युगों युगों से साहित्य और समाज का यह रिश्ता बरकरार रहा है। मनीषियों और युगपुरुषों के साथ साथ साहित्यकार भी अन्याय और अत्याचार के विरोध में जनता को एक झंडे के नीचे खड़ा होने के लिए प्रेरित करता रहा है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के समय जहाँ एक ओर गाँधी जी, पटेल, आजाद, सुभाष चन्द्र बोस जैसे युग पुरुष जनता को स्वतन्त्रता आन्दोलन के लिए उकसाते रहे वहीं प्रेम चंद, जैनेन्द्र जैसे साहित्यकार अपने साहित्य के माध्यम से इस आन्दोलन के लिए जनता को प्रेरित करते रहे। पर लगता है आज का साहित्यकार स्वयं अंग्रेजी के मोहपाश में बंध गया है।

वस्तुतः जिस समय ये युगपुरुष स्वतन्त्रता के लिए आन्दोलन कर रहे थे उसी समय एक वर्ग ऐसा भी था, जो अंग्रेजों के इशारों पर दमनचक्र में लगा हुआ था। यह वह वर्ग था जिसकी शिक्षा दीक्षा ईसाई मिशनरियों द्वारा संचालित कान्वेन्ट स्कूलों के माध्यम से हुई थी, जो शरीर से तो भारतीय था पर मन से अंग्रेज बनने का प्रयास कर रहा था।

दुर्भाग्य से स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद सत्ता जिस वर्ग के साथ में आई उसमें से अधिकांश अंग्रेजी परस्त ही थे। इन कुछ वर्गों के कारण जिस समय संविधान बना, भाषा का विवाद खड़ा कर दिया गया और राष्ट्र भाषा, राजभाषा, के मुद्दे को तय करने की अवधि को १५ वर्षों के लिए टाल दिया गया, अर्थात् १५ वर्षों तक अंग्रेजी विकल्प के रूप में रहेगी। १५ वर्षों की यह अवधि इन काले अंग्रेजों के कारण ही बाद में अनिश्चित काल के लिए बढ़ा दी गई है। परिणाम यह हुआ है कि रोटी रोजी से जुड़े होने के कारण अंग्रेजी सम्पन्नता की, समृद्धि की, और रुतबे की प्रतीक बन गई है जब कि हिन्दी विपन्नता और दयनीयता की।

अब समय आ गया है जब जनता में चेतना जाग्रत करने के लिए एक आन्दोलन किया जाय। इसके लिए युगपुरुषों के मार्ग दर्शन की आवश्यकता है साथ ही, साहित्यकारों की भी आगे आने की जरूरत है। यह हमारा सौभाग्य है कि अखिल भारतीय हिन्दी प्रतिष्ठापन मंच के महामंत्री श्री कैलाश कल्पित जैसे साहित्यकार इस क्षेत्र में आगे आए हैं और अंग्रेजी का मोहपाश भंग करने के लिए जनता को प्रेरित करने वाले साहित्य का सृजन कर रहे हैं। 'गाँधी जी का चौथा बन्दर', 'स्वराज जिन्दाबाद' उनकी ऐसी व्यंग्य रचनाएँ हैं जो पाठक को सहज ही प्रेरित करती हैं कि भ्रष्ट नेताओं के मोहपाश से बचें।

८ सी कंचनजंगा, अणुशक्तिनगर बम्बई ४०००९४

साहित्य साधना मे रत

तपोवृद्ध : कल्पित जी

लम्बे समय से साहित्य की साधना में रत श्री कैलाश कल्पित जी की ७० वीं वर्षगाँठ पर उनके दीर्घजीवी होने की मंगल कामना करता हूँ। वस्तुतः इस अवसर पर उनका अभिनन्दन कर हम सभी प्रयागवासी, स्वयं को गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं। कल्पित जी एक समर्थ साहित्यकार हैं। उन्होंने अपने जीवन की साहित्यिक यात्रा में ऐसे साहित्य का सृजन किया जो कि सही अर्थों मे समाज का दर्पन साबित हुआ।

कल्पित जी की चाहे कविताएँ हों, कहानियां हों या अन्य साहित्यिक कृनियाँ सभी के माध्यम से उन्होंने इंसानियत की तस्वीर उकेरने का सफल प्रयास किया है। अपने नाटक 'संत्रास' में कल्पित जी ने एक मध्यवर्गीय कर्मचारी की संत्रास पूर्ण जिन्दगी का जितना जीवंत चित्रण किया, वह उन जैसे संवेदनशील साहित्यकार के ही बस की बात है।

कल्पित जी की कविताओं में आज की कुंठित और सड़ाँधयुक्त व्यवस्था के प्रति पैना कटाक्ष और आक्रोश भी प्रतिध्वनित होता रहा। इस विशिष्ट शैली के कारण भी उनकी हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में अलग पहचान बनी है।

हिन्दी भाषा के उत्कर्ष के लिए कल्पित जी के प्रयास सराहनीय हैं। भाषा को प्रतिष्ठित करने के लिए उन्होंने इसे अपने स्नेह से सिंचित किया हैं।

साहित्य के इस तपोवृद्ध के चारों तरफ तप के उजाला का जो आभा मडल विद्यमान है उसके प्रति मेरा नमन

सुधीर अग्निहोत्री
कार्यकारी संपादक संकेत भेद / संगम उजाला
१०६५/१२३, लीडर रोड, इलाहाबाद

"जन-जीवन के संत्रास का श्वेत-पत्र

"स्वराज जिन्दाबाद"

श्रीमती सन्ध्या सक्सेना, एम० ए०

देश की स्वतन्त्रता की बयालीस वर्षीय हलचल तथा नेहरू व इन्दिरा गाँधी के शासन की बे-बाक समीक्षा प्रस्तुत कर, युग संदर्भों से जुड़ी देश की ज्वलंत समस्याओं को जिस तीखे तेवर को सम्प्रेषित करता हुआ श्री कैलाश कल्पित का उपन्यास **स्वराज जिन्दाबाद** प्रस्तुत हुआ है, वह लेखक को उसकी जागरूकता और गहन अध्ययन के पार्श्व में एक विशिष्ट सोपान पर प्रतिष्ठित करता है।

इस उपन्यास के तेवर की पहली झलक इसके रैपर पर ही प्रकाशित इन कुछ निर्भीक पंक्तियों से मिलती है—

"...राष्ट्रीय जीवन में जब व्यवस्था की उन्मुक्त आलोचना किन्हीं कारणों से नहीं हो पाती है तो प्रशासनिक प्रदूषण उत्पन्न हो जाता है। ....अशिक्षित जनता की भावुकता के कारण भारतीय जनतंत्र हर क्षेत्र में परिवारवाद से घिर गया है। हम जनतंत्र के वास्तविक आकाश को नहीं छू पा रहे हैं। ....सत्ता प्रदूषण के इस वातावरण में सर्वोच्च सत्ता के काले कारनामों पर जिसने भी उंगली उठायी वही 'देश-द्रोही' कहलाया। ऐसी स्थिति में भ्रष्टाचार की पराकाष्ठा और सामान्य नागरिक की उपेक्षा किस सीमा तक पहुँच गयी है और बापू के स्वराज का स्वप्न भ्रष्टाचार रूपी प्रदूषण की कितनी तहों के नीचे दब गया है, उसी के व्यथा-कथा का दर्पण है—'स्वराज जिन्दाबाद।'

उपन्यास मे 'कथानक के परिवेश की पूर्व पीठिका' में लेखक ने जिस निर्भीकता के साथ गत् बयालिस वर्षों की देश की राजनीति की समीक्षा की है वह अपने आप मे आज के इतिहास का एक महत्वपूर्ण दस्तावेज है। द्रष्टव्य हैं कुछ अंश :—

भारत के अन्दर वे (अंग्रेज) नेहरू जी की लोकप्रियता को बखूबी जानते थे। उनकी कमजोरियो से भी वे खूब अवगत थे। अंग्रेजी भाषा और आंग्ल अभि-जातीय संस्कारों के प्रति उनका मोह, लेडी माउण्ट बेटन के प्रति उनकी लोलुप दृष्टि (जिससे लार्ड माउण्ट बेटन अवगत थे), नेता जी सुभाष चन्द्र बोस के अस्तित्व से भय और सत्ता के केन्द्र में जल्द से जल्द आ जाने की लालसा के परिप्रेक्ष्य में अंग्रेजी शासकों ने सत्ता स्थानान्तरण के अनुबन्धों के बहाने कुछ ऐसे 'प्रोनोट' लिखाये, जिन्हें वे बहुत दिनों तक भुना सकें।

इन्हीं पृष्ठों में लेखक ने आगे लिखा है :—

हम भारतीयों की तरह भले ही भारतीय भाषायें शुद्ध में न बोल पायें किन्तु कम्ब्रिज और आक्सफोर्ड की इगलिश उन्ही के टोन म अवश्य बोलना चाहते

६ । नेहरू जी ने अपनी सुविधा के लिये ऐसी चाल चली कि राष्ट्रभाषा (राजभाषा) हिन्दी को १५ वर्ष का वनवास और अंग्रेजी को राजगद्दी मिल गयी। अवसरवादी उच्च वर्ग ने जल्द से जल्द उच्च सरकारी पद मात्र भाषायी अस्त्र के कारण हथिया लिये और फिर पीढ़ी दर पीढ़ी इन पदों पर अपने ही परिवार के उत्तराधिकारी आसीन हों, इसके लिये अंग्रेजी माध्यम के महँगे स्कूलों को खूब प्रश्रय देकर अंग्रेजी भाषा के कवच को मजबूत कर दिया। ....यह एक दुर्भाग्यपूर्ण घटना थी कि देश की स्वतंत्रता के मात्र साढ़े चार महीने बाद ही महात्मा गाँधी जैसे तपस्वी और भारतीय भाषा व संस्कृति को स्वतंत्र देश में प्रतिष्ठित करने की प्रक्रिया शुरू करने वाले महापुरुष की हत्या हो गई। ....नेहरू जी तथा उनके समान्तर आचार-विचार में आस्था रखने वाले आई० सी० एस० कैडर के सुविधावादी सत्तापति अधिक निरंकुश होकर मनमानी करने की स्थिति में पहुँच गये।

और इन्हीं पृष्ठों में लेखक ने आगे चलकर जो लिखा है वह और भी विचारणीय है :—

इन्दिरा गाँधी आर्थिक परिप्रेक्ष्य में नेहरू जी से अधिक प्रगतिशील बनी किन्तु शासकीय ढाँचा उनके समय में भी नितान्त तानाशाही था। सरकारी कार्यालयों के कार्य-सम्पादन का ढंग जनता को भयभीत बनाये रखने का था जिसका चरम स्वरूप आपात्कालीन शासन हुआ। मात्र थोड़े समय (लगभग डेढ़ साल) के अन्तराल के बाद ही पिता की सत्ता की उत्तराधिकारिणी होने के कारण उन्होंने नेहरू जी के शासन काल के जो काले पक्ष थे उन्हें सामने नहीं आने दिया.... ...पंजाब की राजनीति से निपटने में वे असफल रहीं। कूटनीतिज्ञता की कमी के कारण अपने ही अंगरक्षकों द्वारा मारी गयीं। अतः संवैधानिक प्रक्रियाओं से उनका शासन काल समाप्त न होने के कारण, उनके शासन की समीक्षा करने का अवसर प्राप्त किये बिना ही, जनता की भावना की भावुकता ने उनके पुत्र को राजपाट सौंप दिया।

देश की राजनीति की सारगर्भित समीक्षा का सम्पूर्ण अंश पठनीय तथा मनन करने योग्य है, क्योंकि इसी 'पूर्व पीठिका' के परिवेश में उपन्यास के पात्र अवतरित होते हैं। नायक दीपक वर्मा और सहनायक दिवाकर छोटे पत्रकारों का जीवन जीते हुये देश के सामान्य नागरिकों के प्रतीक हैं जो अपने स्वतंत्र चिन्तन के कारण सत्ता के परोक्ष हथकण्डों के शिकार बनते हैं और इनकी पत्नियाँ वंदना एवं जनकनन्दिनी इनको अपने संघर्षपूर्ण जीवन में खुलकर जूझने की प्रेरणा प्रदान करती हैं। अतः इस उपन्यास के कथा-पक्ष की समीक्षा करते हुये दिल्ली के आचार्य, कवि एवं समीक्षक डा० राम प्रसाद मिश्र के लिखा है

'स्वराज जिन्दाबाद' में भारत की चतुर्मुखी भ्रष्टाचारमयी परिस्थिति के बिन्दुओं का प्रासंगिक एवं जाति-प्रथा की विषाक्त स्थिति का प्रमुख चित्रण प्राप्त होता है। कल्पित जी अपनी कृतियों में कोरा मनोरंजन नहीं रखते, कोई-न-कोई सामाजिक उद्देश्य चित्रित करते हैं। प्रस्तुत उपन्यास का एक उद्देश्य अन्तर्जातीय विवाह के समर्थन एवं प्रतिपादन में निहित है। दो समानान्तर कथानक अनेक भ्रष्टाचार बिन्दुओं को समेटते हुये गतिशील होते हैं। दोनों नायक-नायिका क्रमशः दीपक वर्मा (जो वास्तव में ब्राह्मण है) एवं वंदना (जो श्रीवास्तव कायस्थ है) तथा दिवाकर (जो उत्तर प्रदेश का ठाकुर है, किन्तु सिंह नही लिखता) एवं जनकनन्दिनी (जो बिहार की खटिक है) अन्तर्जातीय विवाह करते हैं, यही नहीं, सब दूसरा विवाह भी करते हैं। दीपक एवं दिवाकर दोनों पत्रकार हैं, जनकनन्दिनी भी। वंदना प्रदर्शन-सुंदरी (सेल्स गर्ल) है। उपन्यास में प्रदर्शन-सुन्दरियों के शोषण एवं पत्रकारिता पर राजनीति के हस्तक्षेप के चित्रण अच्छे हुये हैं। वस्तुतः 'स्वराज जिन्दाबाद' सामाजिक-उपन्यास मे भी समस्या उपन्यास है—— प्रधान तत्व है युग के विराट भ्रष्टाचार के अन्तर्गत अंतर्जातीय-विवाह का चित्रण एवं प्रतिपादन, जिसमें युग-सजग एवं जागरूक उपन्यासकार सफल सिद्ध होता है।

इसी उपन्यास को पढ़ने के बाद आज के वरिष्ठतम् साहित्यकार कवि आलोचक एवं नाट्यकार **पद्मभूषण डा० राम कुमार वर्मा** ने जो प्रशस्ति लेखक को भेजी थी उसका कुछ अंश भी उद्धृत करना इस उपन्यास की चर्चा का परिपूरक कहा जायगा। डा० वर्मा ने लिखा :—

हिन्दी कहानी लेखकों तथा उपन्यासकारों में श्री कैलाश कल्पित अत्यन्त प्रतिष्ठित स्थान के अधिकारी हैं। —वे अभिनव शैलीकार के रूप से अपनी पहिचान बनाने में सफल हुये हैं। उनका नवीनतम उपन्यास 'स्वराज जिन्दाबाद' आज के जन-जीवन के संत्रास का एक ऐसा 'दर्शन-पत्र' है जिसकी घोषणा से एक नये युग के निर्माण का संकेत मिलता है। जिस निर्भीक कण्ठ से उपन्यासकार ने आज के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और पारिवारिक जीवन की विषमताओं की दो-टूक समीक्षा की है, उससे सामान्य नागरिक चौंक उठा है और आत्म-निरीक्षण के लिए उत्सुक हो उठा है। जीवन की नग्न परिस्थितियों का मूल्यांकन पत्रकारिता के माध्यम से करते हुये कथा-शिल्प की कसावट में किसी प्रकार का शैथिल्य नहीं आया है। दिवाकर और दीपक इस अभियान के महारथी है। मैं कल्पित जी को इस उपन्यास लेखन के लिये हार्दिक बधाई देता हूँ——।

साहित्य के क्षेत्र में दो दिग्गज आलोचकों एवं रचनाकारों के अभिमतो को उद्धृत करने के बाद एक अभिमत राजनीति जगत के सुपरिचित नेता चिन्तक एवं

विचारक भारतीय जनता पार्टी के भूतपूर्व अध्यक्ष प्रोफेसर डा० मुरली मनोहर जोशी का इसी उपन्यास के सन्दर्भ में प्रस्तुत करना युक्तिसंगत ही प्रतीत होता है, यथा–

मान्यवर कल्पित जी. आपकी कृति 'स्वराज जिन्दाबाद' पढ़ी। आपने अनेक ज्वलन्त एवं सामयिक प्रश्नों पर बड़े ही रोचक ढंग से ध्यान आकर्षित किया है। क्या ही अच्छा होता कि अन्य भारतीय विद्वान एवं साहित्यकार भी इन सभी प्रश्नों को उठाकर चेतना को जाग्रत करते। आपने राजनीति, साहित्य, पत्रकारिता, प्रशासन, न्याय पालिका, शिक्षा, नैतिकता सामाजिक रूढ़ियाँ एवं ग्राम्य विकास जैसे सभी विषयों को एक साथ स्पर्श करते हुए इस उपन्यास की रचना की है। मेरी बधाई स्वीकारें। आज ऐसे बहुआयामी कथाशिल्प की बहुत आवश्यकता है। जिसे आप सरीखे रचना धर्मी ही पूरा कर सकते हैं। प्रभु से प्रार्थना है कि आपकी लेखनी को सदा गतिमान रक्खे। मैं आपका आभारी हूँ कि आपने मुझे अपनी रचना पढ़ने योग्य समझा।

इस राजनीतिक एवं सामाजिक उपन्यास में जहाँ बहुत से महत्वपूर्ण मुद्दे जैसे मिस्टर लियोनार्ड भोसले की पुस्तक 'लास्ट डेज् आफ ब्रिटिश रूल इन इण्डिया' में उल्लिखित १९९९ तक गुप्त रखने वाला समझौता है, या फिर प्रोफेसर अतुल सेन के पत्र का नेहरू जी द्वारा उत्तर है, वहाँ इसका केन्द्र बिन्दु २६वाँ परिच्छेद है जहाँ दीपक वर्मा किसी नौकरी के समापन के विरोध मे दिवाकर द्वारा संयोजित पत्रकार-सभा प्रस्तुत की गयी है।

इस सभा में विभिन्न पत्रकार एक से एक महत्वपूर्ण राष्ट्रीय मुद्दे उठाते हैं। दिवाकर सभा के संयोजक के नाते सभा के प्रारम्भ में अपनी भूमिका में कहता है :

भारत के अन्दर संवैधानिक स्वतन्त्रता घोषित हो जाने के बाद जो प्रथम मन्त्री मण्डल का गठन हुआ था उसमें अधिकतर त्यागी, तपस्वी एवं चिन्तनशील नेता थे— किन्तु शनैः शनैः इन महान् पदों पर आसीन होने वालों की क्षमताएँ और प्रवृत्तियाँ इतनी विघटनकारी होती गयीं कि 'नेता' शब्द का अर्थ व्यंग्य रूप में उभरते-उभरते किसी गाली का पर्याय बन गया :—हमारे सासद राष्ट्रीय जीवन के भाग्यविधाता हैं, किन्तु सांसद बन जाने के बाद सांसद बनने के लाभ तो सम्पूर्ण उठाते हैं लेकिन जनता के प्रति दायित्वपूर्ण चिन्तन और योजनाओं से दूर रहते हैं।

पत्रकार, मधुकर कहता है —समाज में शिक्षा और साक्षरता के अभाव में साहित्यकारों का स्वतन्त्र अस्तित्व नहीं बन पाया है। वे पुस्तकालयों की खरीद और सरकारी पुरस्कारों को ताकते हुये जीते हैं।—नेताओं में सेवावृत्ति नहीं, लेखक प्रभावहीन, पुजारी और मुल्ला साम्प्रदायिकता भड़काने में तल्लीन। ऐसी स्थिति में

एक मात्र पत्रकार ही बचता हैं जो — पत्रों के माध्यम से एक ओर जनता को उद्बोधित करता है तो दूसरी ओर प्रबुद्ध समाज को कुछ सोचने को प्रेरित करता है।

इस पत्रकार सभा में जब दीपक वर्मा से कुछ बोलने को कहा जाता है तो वह अकबर इलाहाबादी का एक शेर पढ़ता है।

खींचो न कमान और न तलवार निकालो
जब तोप मुकाबिल हो तो अखबार निकालो।

और संजीव भागवत की जयपुर से प्रकाशित पुस्तक — 'प्रेस, कानून और पत्रकारिता का उल्लेख करते हुये तमिलनाडु में घटे 'आनन्द निकेतन' पत्रिका' का प्रकरण रखता है।

इसी क्रम में पत्रकार कमलेश्वर, स्वीडन के प्रसिद्ध अर्थशास्त्री प्रो० गुन्नार मिर्डल के विचार रखते हुये कहता है — भारत मे जवाहर लाल नेहरू के समय में शुरू हुयी सामाजिक एवं आर्थिक क्रान्ति स्थगित कर दी गयी है — भारतवर्ष अभी भी अपनी जनता के बहुमत से शासित होने से वंचित है।

इस सभा में ही दिवाकर, नन्दी, दबे, माथुर, सुरेन्द्र, शौरी, चावला और कुलिश आदि पत्रकारो के सम्मिलित विचारों का उल्लेख करता है कि दिल्ली के एक विशेष पत्र-समूह के विरुद्ध की जा रही कारवाई बदले की भावना से प्रेरित है। अतः यह उपन्यास पाठक समाज को राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में बहुत कुछ सोचने को प्रेरित करता। जगह-जगह पर लेखक ने जो आँकड़े दिये हैं वे राष्ट्रीय समस्याओं के प्रति लेखक की जागरूकता प्रकट करते हैं। देश के अन्दर शिक्षा का प्रतिशत राष्ट्रभाषा की उपेक्षा, वेकारी की स्थिति, वारांगनाओं की संख्या, विदेशीऋण का बोझ, बोफोर्स तथा फेयरफैक्स प्रकरण, एक्सप्रेस काण्ड, न्यायालयों की पंगुता, सत्ता का न्यायाधिपतियों की वरिष्ठता में हस्तक्षेप और पुलिस के शोषण आदि को इस कथा के अन्तर्गत निर्भीकता के साथ कलमबद्ध किय गया हैं।

मीरापुर, इलहाबाद

क्या आप जानते हैं जर्मनी, जापान, ब्रिटेन, रूस, फ्रांस, स्वीडन या अमरीका आदि विश्व के सर्वाधिक विकसित देश क्यों हैं? विज्ञान के कारण नहीं, शत-प्रति-शत साक्षरता के कारण। ज्ञान-विज्ञान की प्रवृत्ति तो बाद की है।

साहित्य दूध है, फिल्मी गाने शराब।

क्या आप कोई साप्ताहिक, पाक्षिक या मासिक पत्रिका नियमित लेते हैं? यदि नहीं तो अब लीजिए।

[पृष्ठ १६ का शेष]
हो चुके हैं। किसी वाद, संस्थान, ग्रुप या गिरोह से प्रतिबद्ध आलोचक या समीक्षक, आज भले कल्पित जी के साहित्य की समुचित प्रशस्ति न करें किन्तु उनका साहित्य मननशील प्रबुद्ध पाठकों और साहित्यकारों में चर्चित है। हम आशा करते हैं कि आज का सृजनशील रचनाकार यदि कल्पित जी के विपुल साहित्य कोश में से चारुचित्रा, शुभ्रा, युगबोध, स्वराज जिन्दाबाद, अनुभूतियों की अजन्ता और गीत-गरिमा आदि कृतियों का रसास्वादन करेगा तो वह स्वयं उनके यशस्वी लेखन का प्रशंसक हो जायेगा।

"श्री कैलाश-कल्पित अभिनन्दन मञ्जूषा" 'कल्पित' की ही नहीं आपके मन की भी मञ्जूषा है इसमें अनेक शीर्ष रचनाकारों, साधकों और मनीषियों के स्नेहिल आशीष और शुभकामनाएँ संग्रहीत हैं। मैं उन सभी साहित्यकारों और रचनाकारों का आभारी हूँ, जिन्होंने अपनी रचनाओं और समीक्षाओं से इस मञ्जूषा को रूपायित और शृङ्गारित किया है। श्री कैलाश कल्पित अभिनन्दन समारोह समिति के समस्त हस्ताक्षरों, न्यायमूर्तियों, मनीषियों और वयोवृद्ध सत्पुरुषों के प्रति विशेष कृतज्ञ हूँ, जिनकी सद्भावना हमारे कार्य-सिद्धि की प्रेरणा बनी।

अग्रज 'कैलाश कल्पित जी' कविता-कानन और साहित्यवीथी को सतत् रचनाधर्मिता से पल्लवित एवं सुरभित करते रहें और पश्येम् शरदः शतम् जीवेम शरदः शतं, शृणुयाम शरदः शतं, प्रब्रवाम शरदः शतं अदीनाः स्याम शरदः शतम् भूयश्च शरदः शतात: की पवित्र वेदवाणी को चरितार्थ करें, ईश्वर से यही प्रार्थना है। □

राजाराम शुक्ल
२१५/१५० / ४ ए
नागवासुकि, दारागंज, इलाहाबाद

लेखकीय अस्मिता का प्रश्न और पुस्तक व्यवसाय

कैलाश कल्पित

भारत के अन्दर और विशेष रूप से हिन्दी के क्षेत्र में लेखकीय अस्तित्व सर्वाधिक संकट में है। वस्तुतः लेखक तो वे सभी हैं, जो लेखन से अपनी जीविका अर्जित करते हैं, किन्तु साहित्यिक परिवेश में लेखक का बोध उस व्यक्ति से होता है जो अपनी सम्पूर्ण चेतना से समाज को ओर अधिक प्रतिबद्ध होकर एक आदर्श जीवन जीने का संकल्प धारण करने का प्रयास करता है। वह अपने विचारों को अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचाने के प्रयास में कभी-कभी अपने पारिश्रमिक तक की चिन्ता नहीं करता और यदि वह परिपक्व नहीं हुआ तो अपनी भावुकता में प्रकाशकों को अपना लेखन मुफ्त में छापने को दे देता है।

प्रकाशक एक व्यवसायी होने के साथ-साथ यदि कुछ विशेष अनुभवी हुआ तो ऐसी पाण्डुलिपियों को तुरन्त परख लेता है और उनको या तो छापता ही नहीं अथवा लेखक पर बहुत एहसान करके प्रकाशित कर देता है और जहां पुस्तकें बिकती हैं, अधिक ठेठ भाषा में कहें तो खपती हैं, वहां बेच कर अपना धन्धा कर लेता है। यदि उस लेखक में कुछ दम-खम हुआ और वह किसी प्रभावी आलोचक के हाथ पड़कर कुछ चर्चित भी हुआ तो वहीं से लेखक की कोई पहचान बननी शुरू होती है, फिर भी ऐसी पहचान बहुत समय बाद ही बन पाती है जब उसका नाम लेना ही किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति की चर्चा करना कहा जाये।

इधर प्रकाशन का धन्धा जिसने करना शुरू कर दिया उसे तो फिर प्रत्येक वर्ष कुछ ऐसी पाण्डुलिपियों की आवश्यकता रहती ही है जिन्हें छापकर वह धन्धा सुचारु रूप से चला सके। 'फलतः चलता है' मैटर अनुपात में कहीं अधिक और मानक मैटर बहुत ही कम प्रकाश में आ पाता है।

आज से पन्द्रह-बीस साल पहले तक समाज में कम से कम हिन्दी भाषा-भाषी समाज में पुस्तकों के पाठक थे और उनके बीच कुछ साहित्य भी बिक जाता था, किन्तु गत बीस वर्षों से मात्र पुस्तकालीय खरीद रह गयी है। अतः प्रकाशक लेखक को कम से कम पारिश्रमिक देकर (कभी-कभी कुछ नहीं) जो प्रकाशन करता है उसे ही अधिक से अधिक कमीशन देकर पुस्तक खरीद करने

वाले अधिकारियों के हाथ बेचता हैं। यह कमीशन कागज पर दिया जाता है और कागज से अलग कुल खरीद की राशि पर भी हाथों हाथ नकद भी दिया जाता है। ऐसी परिस्थिति में लेखकों की कोई अस्मिता बन पाये इसकी सम्भावना कम ही होती है। जहां करोड़ों लोगों की भाषा हिन्दी हो वहां दो सौ नाम भी (सम्पादक लेखक सहित) यदि ऐसे हों जो पहचाने हुये कहे जा सकते हों तो इसको लेखक की पहचान नहीं कहा जा सकता है क्योंकि इन जाने पहचाने लेखकों से भी अंतरंग होकर यदि उनकी रायल्टी की आय पूछिये तो असलियत मालूम होगी।

सारांश यह कि इस कष्टकर स्थिति का कारण हिन्दी समाज में पाठकों का नहीं के बराबर होना है। हम समाचार-पत्रों में कभी-कभी पढ़ते हैं अमुक देश के अमुक लेखक को अमुक पुस्तक से दो-करोड़ डालर की आय हो गयी है। फ्रान्स के अमुक लेखक के पत्र दस लाख डालर में बिक गये। भारतीय मूल का अमुक लेखक इंगलैंड में मात्र एक किताब लिखकर करोड़पति हो गया, अथवा अपनी ही धरती भारत में जीने वाला किन्तु अंग्रेजी में उपन्यास लिख कर वह कई लाख कमा चुका हैं। हिन्दी अथवा किसी भी भारतीय भाषा में ऐसी स्थिति क्यों नहीं? कहा जाता है यहां सिनेमा और टी० वी० ने पाठक समाप्त कर दिये, किन्तु जिन देशों में लेखक अपनी अस्मिता रख कर जी रहे हैं, क्या वहां सिनेमा और टी० वी० नहीं है?

हां एक बात है कि हमारे यहां शिक्षा का अभाव है। शिक्षा का शब्द प्रयोग करना तो दूर की बात है, यहां तो लोग साक्षर भी नहीं, फिर भी जितनी संख्या में हम हिन्दी वाले जीते हैं और मरते हैं, उसमें कुछ करोड़ तो अवश्य ही हैं जो पठन-पाठन का पूरा आनन्द उठा सकते हैं। हमारे देश का एक-एक प्रदेश यूरोप के एक-एक देश के बराबर है किन्तु हमारी भाषाओं में पुस्तकों का प्रकाशन ९० प्रतिशत एक-दो हजार प्रतियों का ही होता है, जो कभी-कभी पांच-पांच साल तक बिकने के लिये पर्याप्त होता है।

लेखक यदि पाठ्य पुस्तकों में जुड़ गया तब तो उसके नाम की कुछ पहचान हो भी जाती है अथवा पच्चीस-पच्चीस साल से पुस्तक लेखन में अपना जीवन खपाने वाले लेखक समाज में अपरिचित ही रह जाते हैं।

श्री कैलाश कल्पित का सम्पूर्ण प्रकाशित साहित्य

उपन्यास			प्रथम संस्करण प्रकाश वर्ष
दुनिया गोल हैं			१९५५
चारुचित्रा (पुरस्कृत)	किताब घर, नई दिल्ली-२	७५)	१९६१
शुभ्रा	,, ,,	२७)	१९७०
युगबोध	प्रभात प्रकाशन दिल्ली-६	५०)	१९८५
स्वराज जिन्दाबाद	ग्रन्थ एकाडमी, नई दिल्ली	६०)	१९८६
वैज्ञानिक गोरिल्ला	संगम प्रकाशन, इलाहाबाद-३	१५)	१९७७

कहानी-संग्रह

राख और आग			१९६४
कालासाहब गोरी मेम			१९६६
इण्डिया रिटर्न			१९६५
सितारे अंधेरे के (पुरस्कृत)	भारती भण्डार, इलाहाबाद	५०)	१९८४
प्रतीक मानवता के	संगम प्रकाशन, इलाहाबाद-३	५०)	१९९२

इण्टरव्यूज

साहित्य के सार्थी			१९५७
साहित्य साधिकाएँ			१९६२
साहित्यकारों के संग	किताब घर, नई दिल्ली-२	६०)	१९८७

काव्य

रवीन्द्र गीतांजलि (पुरस्कृत)	५०)	१९६१
इन्द्र बेला और नागफनी		१९६३
अनुभूतियों की अजन्ता (पुरस्कृत)		१९७६

आग क्या थी	पारिजात प्रकाशन, इलाहाबाद	६)	१९८२
गीत गरिमा	,, ,,	४५)	१९८९
गांधी जी का चौथा बन्दर	,, ,,	१५)	

पत्र साहित्य

रवीन्द्र पत्रांजलि	पारिजात प्रकाशन, इलाहाबाद	२०)	१९६४
पत्रों के दर्पण में शरत्चन्द्र			१९६७
पत्र लेखन-कला	श्री विष्णु आर्ट प्रेस, इलाहाबाद-३	४०)	१९९१
सृजन-पथ के पत्र	पारिजात प्रकाशन, इलाहाबाद-३	१४०)	
कुछ प्रेषित कुछ प्राप्त			१९९१

नाटक

संत्रास	पारिजात प्रकाशन	४)	१९७८
अपूर्ण-सम्पूर्ण (प्रकाशनाधीन)			—
द्वन्द्व का सीमान्त	मंचित		१९६९

बाल साहित्य

चूहा व्यापारी	संगम प्रकाशन	१०)	१९९०
भारत देश हमारा			१९८५
वीरांगना दुर्गावती	विष्णु आर्ट प्रेस	१५)	१९९४

निबन्ध

चिन्तन-अनुचिन्तन (प्रकाशनाधीन) —

निराला के सम्पर्क में बारह वर्ष (प्रकाशनाधीन) —

जीवनी

आचार्य नरेन्द्रदेव' जयप्रकाश नारायण, राममनोहर लोहिया १९९४

विविध—बापू के विचार, राजकाज हिन्दी संदर्भिका १९६८, १९८०